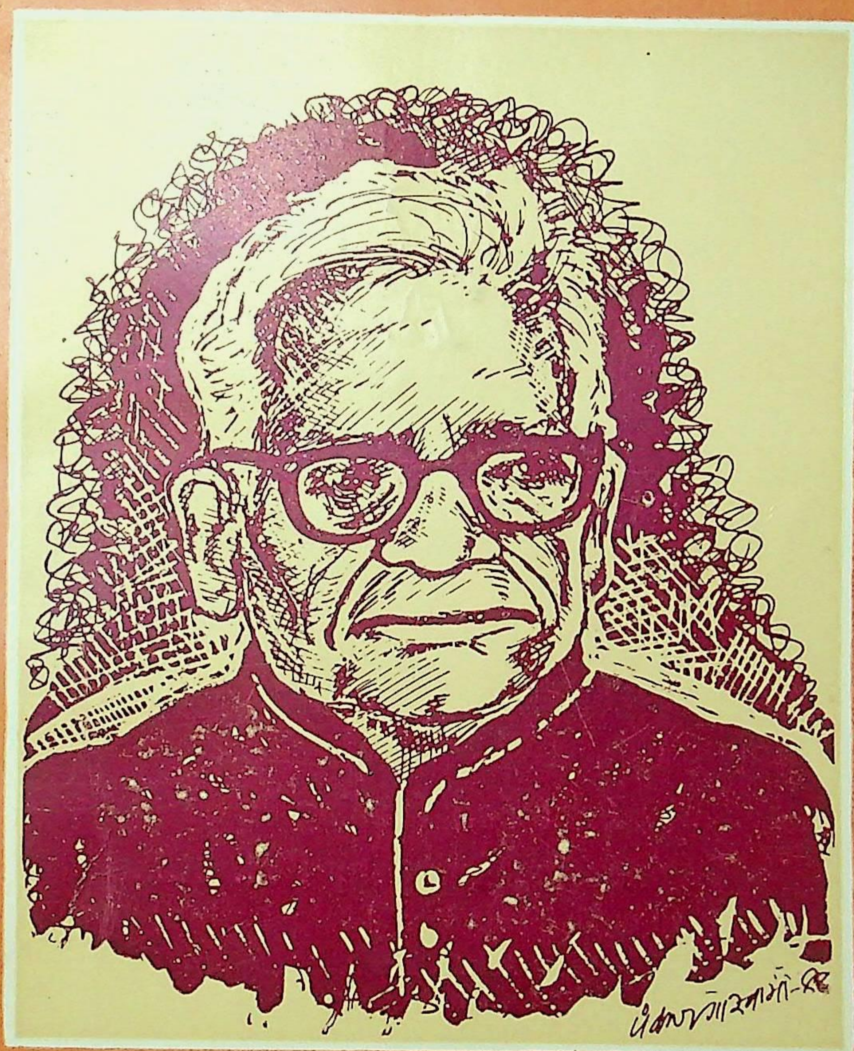
जस्थानी गंगा



स्व. श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी स्मृति-विशेषांक

सालाना मोल 45 रु.

इण अंक रो मोल 25 रु.

राजस्थानी गंगा

(स्व. श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी स्मृति-विशेषांक)

परम पूज्य गुरुदेव पं० नंदकुमारजी अवस्थी, पद्मश्री
महोदय को सादर —

[signature]

विजया दशमी, २०४५ वि०

वर्ष 4, अंक 1-2

(जनवरी-जून, 1988)

संपादक

डा० मनोहर शर्मा  डा० दिवाकर शर्मा

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान

वीकानेर (राजस्थान)

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान
वीकानेर

पदाधिकारी

पीठाधिपति — डा. अेस. अेन. स्वा़मी
पीठाध्यक्ष — डा. गिरिजाशंकर शर्मा
पीठ-स्थवि़र — डा. मनोहर शर्मा
पीठ-मंत्री — डा. पुरुषोत्तम आसोपा

संयोजक

साहित्य अेवं इतिहास विभाग — डा. माधोदास व्यास
लोकसाहित्य विभाग — डा. स्व़र्णलता अग्रवा़ल
विज्ञान विभाग — प्रा. पंकज गोस्वा़मी
प्रकाशन विभाग — श्री सनत्कुमार स्वा़मी
प्रचार विभाग — डा. दिवा़कर शर्मा

संपादक-मंडळ

1. डा. नरेंद्र भानाव़त 2. डा. गिरिजाशंकर शर्मा
3. श्री दीनदयाल ओझा

परामर्श - मंडळ

1. डा. रघुवीरसिंह, सीतामऊ
2. श्री कन्हैयालाल सेठिया, कलकत्ता
3. डा. नेमनारायण जोशी, उदयपुर
4. डा. नृसिंह राजपुरोहित, जोधपुर
5. श्री राव़त सारस्व़त, जयपुर
6. श्री चंद्रदान चारण, वीकानेर
7. श्री अक्षयचंद्र शर्मा, कलकत्ता
8. श्री हजारीमल बांठिया, कानपुर
9. श्री श्रीलाल नथमल जोशी, वीकानेर

❀ समर्पण ❀

राजस्थानी भाषा-साहित्य रा अनन्य उपासक
राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान रा पीठाधिपति
स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी री
पावन स्मृति में घणै मान
समर्पित

पुरुषोत्तम स्वामी सुधी, गुणी ज्ञान-गंभीर ।
गंगा राजस्थान में, लायो तपसी वीर ।।

अनुक्रमणिका

गंगा रो दीपक

मनोहर शर्मा

गंगा री धारा में रमतो
सत-मत रो दीवो चालै
चौफेरी रस-किरणां छायी,
काळस रो हिरदो हालै
घोर घुमंती आंधी आयी,
पाणी री दुनिया डोली
पण सत रै दीवै री किरणां
इमरत री वाणी बोली
''प्रेम-पंथ नै मेट न पावै
संसारी पाणी अर पून
सोरभ सूं हिरदो सरसावै,
फूलां री नित मनस्या सून''
अब दीवो उद्दीपण लाग्यो,
अग-जग मांय उजास भरचो
देस और परदेस उजाळचा,
ज्यूं सत रो सूरज उतरचो
नमस्कार सत रै सूरज नै
जिण री किरणां प्रेम-मयी
हिरदै नै हिरदै सूं बांधै
सदा सुरंगी नित्त नयी

□

—19, कैलास निकुंज, रानी बाजार
बीकानेर-334 001

गुलाब रो फूल

मोहन आलोक

केई दिनां सूं आज खिल्यो, आंगण गुलाब रो फूल
केई दिनां सूं कविता फूटी, वण गुलाब रो फूल

मन रै ऊणै-खूणै उपजी
उळज-पुळज री वास
छंटी आज, अर अेकर आयो
कीं सोरो–सो सांस

केई दिनां सूं वैयी पावन पवन, गुलाब रो फूल
केई दिनां सूं आज हुयो ज्यूं मन, गुलाब रो फूल

मंडी हियै रै उजळै कागद
अपणापै री दीठ
जलम्यां सूं देखी ज्यूं निठ-सी
अळगापै री पीठ

केई दिनां सूं आयो साजन, ज्यूं गुलाब रो फूल
केई दिनां सूं लाग्यो जीवण, ज्यूं गुलाब रो फूल

निज रंगां सूं रंगतो हंस-र
घर-भर रा विदरंग
सोरभ-मोह बांधतो आयो
मन रा त्रिषत कुरंग

छिटकातो ज्यूं किस्तूरी रा कण, गुलाब रो फूल
आंगण उतरयो वण सुवास रो घण, गुलाब रो फूल

मन अंधारै घर में खींवी
ज्यूं हळकी-सी बीज
अचाचूक ज्यूं तीजणियां रै
हुई सुरंगी तीज

केई दिनां सूं वरस्यो सावण, वण गुलाब रो फूल
विरहण धण नै पिव रा दरसण, ज्यूं गुलाब रो फूल

□

'राजस्थानी गंगा' थांरै तप रो पुन-परताप !

किशोर कल्पनाकांत

उजळायत रै अैनाणै है मोटी ज्ञान-धिणाप
'राजस्थानी गंगा' थांरै तप रो पुन-परताप !
ओ मरुथळ शिवरूप, जटावां धोरां रो विस्तार
आदूज्ञान-चनरमा ओपै मस्तक पर ॐकार
मायड़भासा राजस्थानी, गंगा रै उणियार
जटाजूट में दग-दग वैवै सकळ दूधिया-धार
बा भाषा, जिग-जाग थारलो वणगी है जप-जाप
'राजस्थानी गंगा' थांरै तप रो पुन-परताप !

जिको सिळावै हियो मात रो उण री पूरै आस
बो ई ज्ञान-तणै दिवलै रो वांटै सरब उजास
मैं जाणूं हूं, थां पर मां रो पूत-तणो विसवास
थे पुरुषोत्तम हो, का सागी पुरुषोत्तम रा दास
मायड़ रा साचा सपूत हो, खरा मिनख हो आप
'राजस्थानी गंगा' थांरै तप रो पुन-परताप !

थे रतनां रा परम पारखी, रतन अमोलक ज्ञान
ज्ञान-रतन-धन नै पावण रो, थे जाण्यो विज्ञान
थांरी दीठ मांय दीखै है लगन, धरम रै ध्यान
करम धरम सूं प्राणवान है, थे पूरा पुनवान
पुन री महिमा सरजीवण है जग में आपूंआप
'राजस्थानी गंगा' थांरै तप रो पुन-परताप !

निवण-निवण है आप धणी नै, लुळ-लुळ करूं प्रणाम
मायड़भासा रा लूंठोड़ा आप धणी हो थाम
जुग-जुग जागै चास्यो दिवलो, उजळै आठूं-जाम
'स्वामी'-कुळ रो जुग में ऊंचो, थांरै सूं ई नाम
सबदां रै परवाणै, मन री सरधा रै नीं धाप
'राजस्थानी गंगा' थांरै तप रो पुन-परताप !

□

—कल्पना लोक, रतनगढ़-331 022

गीत पुरुषोत्तमदासजी स्वा़मी रो

राव़त सारसुत कहै

स्वा़मी रीत जिकी संभाळी,
प्रीत तिकी जतनां तैं पाळी
वातां जिकी वडां री वरती,
सुणी सबै ज्यूं री त्यूं सरती

'नर-उत्तम' सुरसुती निवा़जी,
रीझ हुयी 'पुरुषोत्तम' राजी
साहित सेत वडेरां साजी,
वाजी वा पण थांसूं वाजी

रीत निभाव़ण थां घर रीतां,
प्रण पाळचा थां प्रीत प्रतीतां
'नर' 'पुरखां' री उत्तम नीतां
जस गीतां गव़सी जग जीतां

□

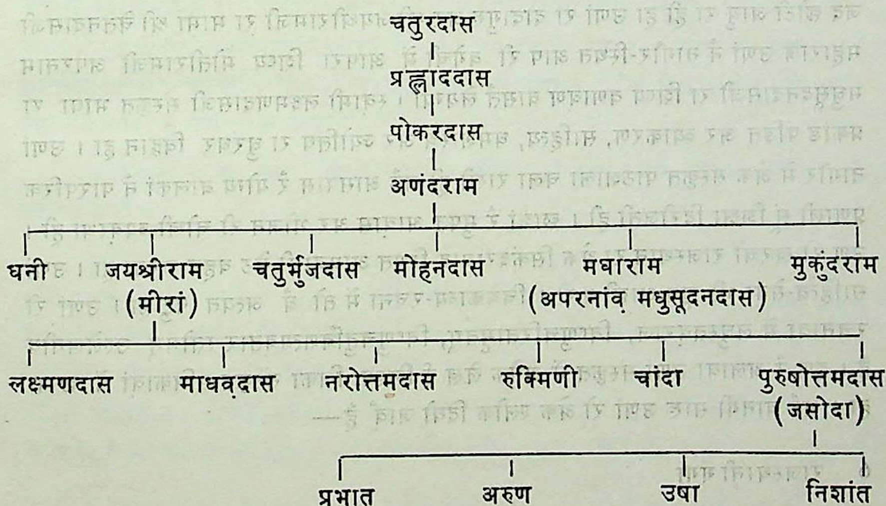
—डी 282, मीरां मार्ग
बनी पार्क, जयपुर-302 006

श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी : व्यक्तित्व अेवं कृतित्व

सनत्कुमार स्वामी

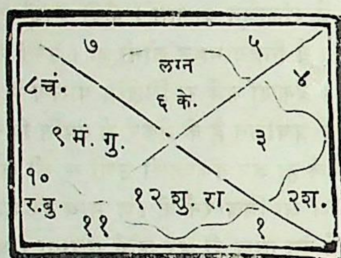
केई शताब्दी पूर्व महाराष्ट्र रै पंढरपुर नगर सूं उठनै केई परिवार राजस्थान में आयनै बीकानेर-जोधपुर क्षेत्र में बसग्या। अै परिवार पंढरपुर रै प्रसिद्ध संत-पुरुष रंकण रै शिष्य-समुदाय मांय सूं हा। बै रांकावत बाजता। कैयो जावै है कै मुनि रंकण अग्नि रा अवतार हा। संत हुवता थकां बै निहंग महंत कोनी हा। उणां री धर्मपत्नी रो नांव बंकणा हो। बै रांका-बांका बाजता। बंकणा धर्म रा सिद्धांत पालण में आपरै पति रंकण मुनि सूं भी बढ-चढर ही। अेक प्रवाद प्रचलित है कै अेकर अै दंपति किणी जागां सूं आपरै घरै जा रैया हा। रंकणमुनि आगै चालै हा अर बंकणाजी उणां सूं कीं लारै आ रैया हा। मुनि नै मारग में सोनो पड़्यो दीख्यो। आ विचारनै कै इण माथै बंकणाजी रो स्त्री-सुलभ लालच नीं आ जावै, उणां सोनै माथै रेत नाख दी अर आगै बधग्या। बंकणाजी उणांनै इण भांत करता देखनै कैयो—'प्राणनाथ! आप कांई कर रैया हो? माटी माथै माटी क्यूं नाखो हो?' आ सुणनै रंकणजी चकित हुयग्या। उणां कैयो—'देवी! तूं धन्य है। तूं तो म्हारै सूं ई बत्ती निकळी। मैं तो इणनै सोनो समझ्यो हो पण थारै आगै तो ओ सोनो सोनो नीं हुयर साव माटी ही है। थारी होड भला कुण कर सकै?'

इणी रंकण-बंकणा रा अनुयायी बै परिवार हा जिकां रो उल्लेख ऊपर कर्‌यो है। इणां मांय सूं ही अेक परिवार बो हो जिकै में आपां रै चरित-नायक रो जनम हुयो हो। आज इण परिवार री आठ पीढ़ियां हुय चुकी है, जिकी इण भांत है—



इण परिवा़र री चौथी पीढी रा मुखिया श्री अणंदराम वीकानेर रै दुळचासर गांव़ रा वाशिंदा हा। ओ गांव़ सूडसर रेल-स्टेशन सूं उतरादै पासै थोड़ो कड़खै पड़ै है। अणंदरामजी वाद में दुळचासर सूं चालर वीकानेर में आयर वसग्या। उणां रा मोभी बेटा श्री जयश्रीराम स्वा़मी हा जिकां रो व्यांव़ वाधणू री मीरांदेवी़ सूं हुयो हो। इण परिवा़र में संवत 1969 री माघ वदी दशमी नै रात रा दसेक वजी आपां रै चरितनायक रो जनम हुयो। ईस्वी सन् 1913 री उण दिन 31 जनव़री ही अर वार हो शुक्रवार। अठै उणां री जन्म-कुंडळी दी जा रैयी है—

इष्ट—३७।५ अनुराधा नक्षत्र, चतुर्थ चरण, वृश्चिक राशि, गोत्र– मृकंडु, नख– सूव़टा और आस्पद– मिश्र।



आपां रा चरितनायक श्री पुरुषोत्तमदास स्वा़मी आपरै माता-पिता री जीवि़त संतानां में सगळां सूं छोटा हा। उणां सूं छोटो अेक और पुत्र जयश्रीरामजी रै हुयो पण वो तीन वरसां री अलपायु में ई काळ-कव़लित हुयग्यो। श्री स्वा़मी रो नांव़ पुरुषोत्तमदास राख्यो गयो जिको उणां रै अग्रज श्री नरोत्तमदास रै अनुकरण पर राख्यो मालम पड़ै।

श्री पुरुषोत्तमदास स्वा़मी रा तीनूं अग्रज ख्यातिप्राप्त धुरंधर विद्वान हा। सगळां सूं वडा अग्रजद्वय स्वामी लक्ष्मण शास्त्री अर श्री माधव़दास स्वा़मी निहंग महंत हा। वै जद छोटी आयु रा ही हा उणां रा दादागुरु अर श्री जयश्रीरामजी रा मामा श्री चेतनदासजी महाराज उणां नै नागौर-स्थित आप री वगेची में आपरा शिष्य मोतीरामजी अपरनाम मधुसूदनदासजी रा शिष्य वणाव़ण वासतै लेयग्या। स्वामी लक्ष्मणदासजी संस्कृत भाषा रा प्रकांड पंडित अर व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र अर ज्योतिष रा धुरंधर विद्वान हा। उणां नागौर में अेक संस्कृत पाठशाला चला राखी ही जठै आसपास रै योग्य बालकां नै पारंपरिक प्रणाली सूं शिक्षा दिरीजती ही। छात्रां रै मुफ्त आवा़स अर भोजन री चोखी व्यव़स्था ही। उण रो खरचो राजस्थान रा अेक सिकंदराबाद-स्थित आप्रवा़सी सेठ वहन करता हा। उणां साहित्य-सेवा़ भी खूब आछी करी। चित्रकाव्य-रचना में तो वै अत्यंत पटु हा। उणां री रचनावा़ं में लघुस्तव़राज, विष्णुचरितामृतम्, विष्णुचतुर्विशत्यव़तार-स्तोत्रम् उल्लेखनीय है। इण रै अलावा़ उणां संस्कृत में अनेक लेख ई लिख्या जिका संस्कृत-पत्रिकावा़ं में छप्या हा। अठै वानगी सारू उणां रो अेक श्लोक दियो जाव़ै है—

यं केशवेऽकृत रतिं किल शैशवेऽपि,
दृष्ट्वा स्वदुःखहरणं शरणं तमेव।
तस्मै सुनीति तनयाय नयान्विताय,
नित्यं ध्रुवाय वरदं वरयेऽश्वसंख्यम् ।।

स्वामी लक्ष्मण शास्त्री 84 वर्ष री आयु में वीकानेर में सन् 1971 ई. में दिवंगत हुया। उणां सूं छोटा श्री माधवदास स्वामी वडा लोकप्रिय नामी कथावाचक हुया। वै अेक तरै रा आशुकवि हा। उणां राजस्थानी में 'रामकीर्तिसागर' नांव सूं अेक विशाळ ग्रंथ वणायो। उणां रो देहावसान 77 वरसां री ऊमर में हुयो।

राजस्थानी, हिंदी अर संस्कृत रा प्रकांड पंडित श्री नरोत्तमदास स्वामी आपां रै चरितनायक रा तीसरा अग्रज हा। उणां री साहित्य-सेवा अनुपम है। उण रो पूरो वर्णन करण वासतै अेक स्वतंत्र लेख री जरूरत है। वै राजस्थानी री प्रसिद्ध त्रिमूर्ति रा सदस्य हा। राजस्थानी रै समुद्धार री दिशा में उणां रो काम स्वर्णाक्षरां में लिखणै जोग है। उणां रो निधन 13 अगस्त 1981 ई. नै वीकानेर में हुयो।

श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी री शिक्षा वीकानेर, वाराणसी अर अमेरिका में ओहायो राज्य रै कोलंबस नगर में हुयी। वीकानेर में प्रारम्भिक शिक्षा उणां बी. के. विद्यालय, जिकै नै डागा स्कूल भी कैवता हा, प्राप्त करी। उणां रै अध्यापकां में श्री छगनलाल चूरा, पं. भागीरथ गोस्वामी जिसा ख्यातनामा शिक्षक हा। वैं भागीरथ गोस्वामी रा अत्यंत प्रिय शिष्य हा। बठै सूं सातवीं कक्षा ससंमान उत्तीर्ण करनै वै आठवीं में स्थानीय डूंगर कालेज में प्रविष्ट हुया।

वै बठै रा उपाचार्य तारकनाथ मुकर्जी अर प्राध्यापक पं. दशरथ शर्मा रा प्रिय शिष्यां मांय सूं अेक हा। श्री स्वामी सन् 1931 में बठै सूं राजपूताना, मध्यभारत अर ग्वालियर वोर्ड री हाईस्कूल परीक्षा संमानपूर्वक उत्तीर्ण करी। छात्रावस्था में ही श्री स्वामी साहित्यप्रेमी हा। उणां वचपन में केई पदां री रचना करी। डूंगर कालेज रै उण वगत रै हस्तलिखित मुखपत्र 'आलोक' रो उणां संपादन ई करचो। वाद में अेक दूसरै हस्तलिखित पत्र 'धारा' रै संपादन करण रो श्रेय भी उणां नै ई मिल्यो। अै दोनूं पत्रिकावां स्थानीय लोगां सूं घणी ई सरायीजी।

उणीज दिनां श्री स्वामी हिंदी साहित्य संमेलन सूं प्रथमा अर मध्यमा परीक्षा ई उत्तीर्ण करी।

हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करचां पछै श्री स्वामी वीकानेर राज्य द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति प्राप्त कर उच्च शिक्षा सारू वनारस गया जठै वै छव-सात वरस रैया। काशी हिंदू विश्वविद्यालय सूं इंटर, बी. अेस-सी. अर अेम. अेस-सी. परीक्षावां ससंमान उत्तीर्ण करी। अेम. अेस-सी. में उणां रो विषय केमिस्ट्री (रसायन विज्ञान) हो। उणां अेम. अेस-सी. परीक्षा वासतै अकार्बनिक रसायन में शोधप्रबंध भी लिख्यो हो। उणां रा निर्देशक केमिस्ट्री रा प्रख्यात प्राध्यापक श्री माधव बालाजी राणे हा। बनारस में रैवता थका वै राजपूताना

छात्रसंघ रा उत्साही अर कार्यशील सदस्य ई हा। उणां बठै कैमिकल सोसाइटी री स्थापना ई करी अर जद तांई बठै रैया उण रै सचिव पद नै उणां ई सुशोभित करचो। उण वगत बीकानेर रा साहित्यप्रेमी अर राजस्थानी-त्रयी रा वरिष्ठ सदस्य ठाकुर रामसिंह अंग्रेजी भाषा अर साहित्य रा प्राध्यापक हा। बाद में बै बीकानेर में शिक्षाविभाग रा निदेशक वणनै बठै सूं चल्या गया। बनारस में आपरै प्रवास-काळ में श्री स्वामी हिंदी साहित्य रा अनेक विख्यात विद्वानां रै संपर्क में आया। उणां में डा. श्यामसुन्दरदास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं. केशवप्रसाद मिश्र, श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, डा. पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, मैथिलीशरण गुप्त, प्रवासीलाल वर्मा, मालवीय, सत्यजीवन वर्मा, श्रीमती ज्योतिर्मयी ठाकुर, रामकृष्णदास अर विनोदशंकर व्यास रा नांव उल्लेखनीय है।

आदरणीय महामना मदनमोहन मालवीय अर उणां रै परिवार रै सदस्यां यथा गोविंद मालवीय अर श्रीधर मालवीय अर दूजा नेता ज्यूं जमनालालजी बजाज रै संपर्क में आवण रो अवसर श्री स्वामी नै प्राप्त हुयो। उणां उणी दिनां महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल वगैरै राष्ट्रीय नेतावां रा दरसण ई करचा।

'मधुशाला' रा ख्यातनामा कवि श्री हरिवंशराय बच्चन सूं श्री स्वामी 'मधुशाला' रो पाठ भी बनारस हिंदू विश्वविद्यालय रै शिवाजी हाल में सुण्यो। शायद बच्चनजी पैलड़ी वार ई उण रो बठै पाठ करचो हो। थोड़ी ताळ पछै उणी तरज में बठै रा अंग्रेजी-प्राध्यापक अर हिंदी रा प्रसिद्ध अनुकरण-काव्यप्रणेता श्री मनोरंजनप्रसादसिंह 'मधुशाला' री पैरोडी (अर्थात् अनुकरणकाव्य) त्यार करनै सुणायी अर खूब वाह-वाही प्राप्त करी।

हिंदू विश्वविद्यालय में श्री स्वामी रा दूजा ख्यातनाम प्राध्यापक हा—डा. अवधविहारी मिश्र जिका बाद में विश्वविद्यालय रा कुलसचिव भी वण्या हा, प्रा. चंद्रबल, श्री यू. के. असरानी, श्री कृष्णकुमार माथुर, श्री पी. दत्त, ख्यातनाम विज्ञान लेखक श्री फूलदेवसहाय वर्मा, डा. राजनाथ, डा. के.पी. रोडे, धीरेन्द्रकिशोर चक्रवर्ती, याज्ञवल्क्य भारद्वाज अर डा. अेस. अेस. जोशी। इणां मांय सूं भूविज्ञान रा प्राध्यापक अर तत्कालीन प्राचार्य, विज्ञान महाविद्यालय रा श्री कृष्णकुमार माथुर री अध्यापनकुशलता सूं श्री स्वामी खूब प्रभावित हुया। श्री माथुर, यद्यपि, अेक ई दिन बी. अेस-सी. (प्रथम वर्ष) री कक्षा नै पढायो, पण उण अेक ई दिन में उणां इसो आछो तरै पढायो कै श्री स्वामी ऊमर भर उणां रै लेक्चर नै याद राख्यो। उणां री दृष्टि में इसो आछो पढावणआळो प्रोफेसर और कोई नीं हो।

उण वखत हिंदू विश्वविद्यालय में दूजा ख्यातनामा प्राध्यापक अन्य विभागां में जिका हा उणां रो अठै उल्लेख करणो समीचीन रैसी।

1. प्रा. अनंत सदाशिव आलटेकर — प्राचीन भारतीय इतिहास अेवं संस्कृति।
2. बाबा श्यामाचरण दे — गणित, अे कुलसचिव तथा प्रोवाइस चैंसेलर भी रैया।
3. प्राचार्य आनंदशंकर बापूभाई ध्रुव — प्राचार्य सेंट्रल हिंदू कालेज, अध्यक्ष संस्कृत विभाग अर प्रोवाइस चैंसेलर।

4. डा. नरेंद्र नृसिंह गोडबोले	—	औद्योगिक रसायन विभाग रा अध्यक्ष ।
5. प्रा. निहालसिंह	—	अध्यक्ष राजनीतिविज्ञान, अै वाद में राजस्थान रा राज्यपाल भी वण्या ।
6. डा. भीखनलाल आत्रेय	—	दर्शन विभाग ।
7. डा. वी. वी. नारलीकर	—	गणित ।
8. डा. अेन. पी. गांधी	—	खनन अेवं धातुकर्म ।
9. प्रा. महादेवलाल सर्राफ	—	औषध रसायन । अै वाद में पिलाणी में विड़ला कालेज रा प्राचार्य वण्या ।
10. कविराज प्रतापसिंह	—	आयुर्वेद विभाग ।
11. प्रा. शिवसुब्रह्मण्यम्	—	विधि ।
12. प्राचार्य लज्जाशंकर झा	—	सेंट्रल हिंदू स्कूल रा प्रिंसिपल अर प्राचार्य, शिक्षकप्रशिक्षण महाविद्यालय ।
13. प्राचार्य किंग	—	आभियांत्रिकी महाविद्यालय रा प्रिंसिपल ।
14. प्रा. जीवनशंकर याज्ञिक	—	अंग्रेजी विभाग । अै हिंदी रा प्रख्यात लेखक तथा याज्ञिक बंधुत्रय में सूं अेक हा ।
15. प्रा. पी. बी. अधिकारी	—	दर्शन विभाग ।
16. प्रा. वलदेव उपाध्याय	—	संस्कृत विभाग ।
17. डा. खुशीराम मेहता	—	वनस्पति विज्ञान ।

ऊपर वताया प्राध्यापकां में डा. अधिकारी दर्शन विभाग रा अध्यक्ष हा । उणां री दो पुत्रियां ही– श्रद्धा अेवं भक्ति । उणां रै वारै में अेक रोचक प्रसंग आवै है जिको श्री स्वामी घणी वार सुणाया करता । वै दोनूं हिंदी री अेम. अे. कक्षावां में पढ़ती ही । अेक दिन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अेम. अे. (हिंदी) री कक्षा में पढावता हा । अेक छात्र उणां नै पूछ्यो– सर, श्रद्धा अर भक्ति में कुण वडी है ? आचार्य शुक्ल सुण'र थोड़ी ताळ मौन रैया फेर जवाव दियो– किणी अधिकारी सूं पूछो । कितो सटीक उत्तर हो !

स्वामीजी 1936 में बी. अेस-सी. कक्षा उत्तीर्ण करी । उणरै पछै वै रसायन-विज्ञान में अेम. अेस-सी. में प्रवेश लेवणो चावता हा । उण वखत विज्ञान महाविद्यालय रा प्राचार्य अर रसायन विभाग रा अध्यक्ष डा. अेस. अेस. जोशी हा । वै न जाणै किण कारण सूं दक्षिण भारतीय विद्यार्थियां सूं घणा प्रभावित हा । उणां अेम. अेस-सी. प्रथम वर्ष में जित्तोई रिक्तियां ही उणां नै भरता थकां उण विद्यार्थियां नै प्रवेश दे दियो जिका हिंदू विश्वविद्यालय सूं वी. अेस-सी. को करी ही नी । इण कारण श्री स्वामी नै प्रवेश नीं मिल्यो । बठै सूं हताश हुयनै श्री स्वामी अेम. अे. हिंदी तथा अेल-अेल. बी. करणै रो निश्चय करचो । हिंदी अेम. अे. में प्रवेश लेवण सूं उण विभाग रा अध्यक्ष डा. श्यामसुंदरदास खूब राजी हुया ।

इण वीच अम. अेस-सी. (रसायन) में प्रवे़श पावण में असफळ अेक दूजो विद्यार्थी विश्व़विद्यालय रा तत्कालीन कुलपति पं. मदनमोहन मालवी़य कनै जा पूग्यो अर उणां रै आगै अरज करी कै अगर हिंदू विश्व़विद्यालय में ही अठै सूं उत्तीर्ण छात्रां नै प्रवे़श नीं मिलसी तो बै कठै जासी। मालवी़यजी नै आ वात जचगी। उणां डा. जोशी नै बुलायो अर उण विद्यार्थी नै अेम.अेस-सी. में भर्ती करणै री हि़दायत करी। उणनै प्रवे़श मिल्यो। अबै श्री स्वा़मी भी आपरै अेक अन्य सहपाठी जे. डी. कोचर नै साथ लेयनै डा. जोशी कनै जा पूग्या अर प्रवे़श री मांग करी। डा.जोशी स्वा़मीजी नै पूछ्यो– कांई थारै हि़ड़दै में रसायन पढण री प्रबळ लालसा है़ ? हां में उत्तर दियां उणां दोनां नै अेम-अेस. सी. (रसायन) प्रथम वर्ष में प्रवे़श मिलग्यो। अबै उणां अेम. अे. हिंदी अर अेल-अेल. बी. नै अळगी करी अर इण पासी पाछा विज्ञान कालेज में आयग्या। इण सूं डा. श्यामसुंदरदास तो कीं खिन्न भी हुया। श्री स्वा़मी अर श्री कोचर रो नांव़ अेल-अेल. बी. कक्षावां़ में केई दिनां तांई हा़जरी रजिस्टर सूं पुकारीजतो रैयो।

स्वा़मीजी हिंदू विश्व़विद्यालय सूं रसायन विज्ञान में ससंमान अेम. अेस-सी. सन् 1938 में उत्तीर्ण करयां पछै बीकानेर आयग्या। बै तो अध्यापन कार्य करणो चावता पण उण वखत स्थानीय डूंगर कालेज में तो विज्ञान रा विषय पढावण रो कीं इंतजाम कोनी हो। इंटर में विज्ञान विभाग सरू हुवण में ओजूं दो साल री देरी ही। उण वखत बीकानेर में स्थानीय लोगां में श्री स्वा़मी ही अेकमात्र अेम. अेस-सी. उत्तीर्ण व्यक्ति हा, इण कारण विज्ञान सूं संबंधित किणी राजकीय विभाग में जगह मिलणी दोरी कोनी ही। उण वखत जगात अर आवकारी विभाग में इंस्पेक्टर री अेक जागा खाली ही। श्री स्वा़मी इण विभाग में काम तो कोनी करणो चाव़ता हा पण 'बैठै सूं बेगार भली' वाळी उक्ति रै अनुसार कीं-न-कीं करणो आछो, आ समझ नै उणां अेक अरजी उण विभाग में पेश कर दी। स्वा़मीजी री इण पद पर नियुक्ति हुयगी। उणां इण पद रो काम संभालण रो पत्र भी विभाग में जायनै दे दियो पण उण पछै बै उण जागां काम करणनै गया ई नीं। थोड़ा दिनां पछै उणां इण पद सूं आपरो त्यागपत्र भी भेज दियो अर वात आयी-गयी हुयगी।

जनवरी 1939 में श्री स्वा़मी री नियुक्ति तत्कालीन बीकानेर राज्य रै सचिवा़लय, जिको उण वखत महकमा खास वाजतो हो, वैदेशिक अर राजनीतिक विभाग में 75 रु.प्रति माह़ वेतन माथै हुयगी। उण वखत 75 रु. बहोत आछो वेतन समझ्यो जाव़तो हो। चपरासियां नै उण दिनां 10 रु. प्रतिमास अर महकमा खास रै चपरास्यां नै 11 रु. महीनै री पगार मिलती ही। चीजां उण दिनां काफी सस्ती ही। गेहूं उण दिनां 13 सेर अेक रुपियै रा मिलता हा। श्री स्वा़मी महकमा खास में 1939 सूं 1942 तांई रैया। डूंगर कालेज में 1940 में इंटरमीडियेट कक्षावां़ में साइंस विषय री कक्षावां़ खुलगी ही पण प्रयत्न करता थकां अर सब तरफ सूं चाहीजतां थकां भी श्री स्वा़मी री उण वखत अध्यापनक्षेत्र में प्रवे़श री इच्छा पूरी नीं हुय सकी। महकमा खास में उण वखत वैदेशिक विभाग रा प्रभारी मिनिस्टर कव़लं माधव़ पणिक्कर हा। बै स्वा़मीजी रै कार्य अर व्यवहा़र सूं खूब प्रसन्न हा।

सन् 1942 में श्री स्वामी डूंगर कालेज में रसायन विभाग रा सहायक प्राध्यापक वणर स्थानांतरित हुया। बै इण पद पर श्री पणिक्कर री इच्छा रै विपरीत आया। पणिक्कर चावता हा कै श्री स्वामी महकमा खास में ही काम करता रेवै।

इण अरसै में सन् 1940 में श्री स्वामी नै तत्कालीन महाराजा गंगासिंह आपरै पोतां भंवर करणीसिंह अर भंवर अमरसिंह रै विज्ञान-अध्यापक पद माथै नियुक्त करणै खातर साक्षात्कार वास्तै बुलाया। साक्षात्कार में महाराजा साहब रै अंग्रेजी में प्रश्न पूछणै पर श्री स्वामी राजस्थानी में उत्तर दियो। इण सूं महाराजा गंगासिंहजी खूब राजी हुया। इण पछै सगळै प्रश्नां अर उत्तरां में राजस्थानी रो ही प्रयोग हुयो। श्री के. अेम. पणिक्कर साक्षात्कार रै वखत उपस्थित हा पण उणां रै पैलड़ै प्रश्न रै अलावा कीं पल्लै नीं पड़्यो। बै हक्का-बक्का हुयनै देखता रैया।

श्री स्वामी नै विज्ञान-शिक्षक रै काम नै आपरै वर्तमान काम रै साथै अंजाम देवणो हो। इण वास्तै उणां नै 50 रु. प्रतिमास रो भत्तो सन् 1945 तांई मिलतो रैयो जद बै आगै अध्ययन सारू राज्य री तरफ सूं अमेरिका गया। श्री स्वामीजी नै इण शिक्षण कार्य वास्तै ग्रीष्मकाळ अवकाश रै दौरान राजस्थान रै प्रसिद्ध अेवं अेकमात्र पर्वतीय स्थळ आबू पर्वत में निवास रो अवसर भी मिल्यो। इण पर्वतीय प्रवास में श्री स्वामीजी राजस्थानी-त्रयी रा प्रमुख सदस्य ठा. रामसिंह तथा इतिहासविद डा. दशरथ शर्मा रै निकट संपर्क में आया। ठा. रामसिंह उण वखत अलवर रै महाराजकुमार रै शिक्षक रै रूप में माउंट आबू में अलवर हाउस में रैवता हा। अलवर हाउस विजयविलास अर बीकानेर हाउस सूं घणो दूर कोनी हो जठै श्री स्वामी रैया करता हा। सायंकालीन भ्रमण रै समय उणां में परस्पर साहित्य-चर्चा हुया करती ही। डा. दशरथ शर्मा रै साथै सिंझ्या रा घूमती वखत दशरथजी री घणी वार कैयोड़ी अेक हिंदी कविता री पंक्तियां श्री स्वामी घणी वार सुणाया करता—जंगल में हम रहते हैं, दिल बस्ती से घबराता है, मानुस गंध न भाती है, मृगमर्कट संग सुहाता है। इणी आबू-प्रवास रै काळ में जद श्री स्वामी विजयविलास में रैवता हा आपरै अवकाश काळ में अंग्रेजी री अेक पोथी रो हिंदी अनुवाद कर्यो जिको 1945 में 'शरीर अेवं स्वास्थ्य विज्ञान' रै शीर्षक सूं स्टूडेंट्स बुक कंपनी, जोधपुर द्वारा प्रकाशित हुयो। इणरा च्यार संस्करण 1950 तांई छप चुक्या हा।

श्रीस्वामी डूंगर कालेज बीकानेर में रसायन विभाग में सह-प्राध्यापक रै तौर पर सन् 1942 सूं 1945 तांई रैया। बै विद्यार्थियां नै अकार्बनिक रसायन पढाया करता हा। अेक वार जद बै विद्यार्थियां नै पढा रैया हा बीकानेर राज्य रा तत्कालीन शिक्षामंत्री श्री पणिक्कर जिका वैदेशिक व राजनीतिक मंत्री भी हा, डूंगर कालेज आया अर श्री स्वामी नै पढावता देखनै घणा राजी हुया। आ वात स्वाभाविक ही, क्यूंकै श्री पणिक्कर स्वयं अेक वखत अलीगढ विश्वविद्यालय में इतिहास रा प्राध्यापक रैय चुका हा।

डूंगर कालेज में आपरै अध्यापन-काळ रै समय श्री स्वामी स्थानीय गुण प्रकाशक सज्जनालय रा पुस्तकालय अेवं वाचनालय प्रभारी हा। उणां रै इण पद पर प्रदर्शित कार्य-

कुशळता सूं इण संस्था री प्रबंध समिति रा अध्यक्ष ठा. रामसिंह अर समिति रा अेक अन्य सदस्य डूंगर कालेज में इतिहास विभाग रा तत्कालीन अध्यक्ष डा. आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव घणा प्रभावित हा अर उणां श्री स्वामी री इण खातर अनेक बार खूब प्रशंसा करी।

श्री स्वामी रो विदेश में आगै शिक्षा प्राप्त करणै वास्तै बीकानेर सरकार द्वारा चयन सन् 1945 में करचो गयो। चयनसमिति में महाराज नारायणसिंह जिका उण वखत बीकानेर राज्य रा प्रधानमन्त्री हा, सरदार के. अेम. पणिक्कर अर ऊन विकास निदेशालय रा अध्यक्ष हा। इण समिति द्वारा पांच आवेदक चयनित हुया जिकां रा नांव इण भांत है:-

श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी — औद्योगिक रसायन व सिरेमिक्स
श्री कुंजीलाल गहलोत — फोटोग्राफी
श्री प्रभुदयाल माथुर — पशुपालन विज्ञान (Animal husbandry)
श्री रणवीरसिंह तलवार — कृषिविज्ञान
श्री पृथ्वीसिंह — वैद्युत अेवं यांत्रिक अभियांत्रिकी

इण सगळां रो प्रशिक्षण-स्थळ अमेरिका तय हुयो। आवेदकां में चिकित्सा विज्ञान में प्रशिक्षण वास्तै डा. शूरवीरसिंह भी हा पण चूंकि स्थान खाली पांच ही हा, उणां रो चयन कोनी हुय सक्यो। इणां में बाद में श्री पृथ्वीसिंह राजस्थान विद्युत बोर्ड रा अध्यक्ष नै प्रमुख सलाहकार भी रैया अर श्री (पछै डा.) रणवीरसिंह तलवार उदयपुर विश्व-विद्यालय रा कुळपति भी बण्या।

श्री स्वामी संयुक्त राज्य अमेरिका में 1948 रै जुलाई मास तांई रैया। इण अवधि रो विवरण अगर सुधी पाठक जाणणो चावै तो इण ग्रंथ में अन्यत्र प्रकाशित 'म्हारो अमेरिका प्रवास' शीर्षक श्री स्वामी रै लेख में देख सकै है।

श्री स्वामी आपरै अमेरिका-प्रवास सूं बठै रै ओहायो स्टेट युनिवर्सिटी सूं अेम. अेस. उपाधि प्राप्त कर अर बठै रै औद्योगिक प्रतिष्ठान लास अेंजेलस (कैलिफोर्निया स्थित) सर्वश्री ग्लैडिंग मैक्वीन अेंड कं. रै स्थानीय संयंत्र में प्रशिक्षण लेय नै अगस्त 1948 में वापस भारत आया। श्री स्वामी अेम. अेस. उपाधि वास्तै तामचीनी रै क्षेत्र में अेक शोध-प्रबंध भी प्रस्तुत करचो हो।

अठै उण वखत भारत ब्रिटिश राज्य-दासता सूं मुक्त हुयनै स्वतंत्र वणग्यो हो। बीकानेर भी आपरो भाग्य भारत रै भाग्य साथै जोड़ण रो निश्चय कर लियो हो अर विलय री प्रक्रिया में हो। इण युगांतरण काळ में राजस्थान सरकार श्री स्वामी नै कोई समुचित पद उणांरी योग्यता रै अनुरूप नीं दे सकी अर ओ आदेश करचो कै जठै तांई ओ संभव नीं हुवै श्री स्वामी किणी निजी औदचोगिक प्रतिष्ठान में काम कर सकै है। श्री स्वामी सहारन-पुर री तेज मेटल अेंड इनेमल वर्क्स में इनेमल अेक्सपर्ट रै पद पर तथा जबलपुर रै औद्यो-गिक प्रतिष्ठान में क्ले-प्राविधिज्ञ पद पर कीं अर्से तांई काम करचो। श्री स्वामी रो इण

प्रतिष्ठानां में करचोड़ो काम काफी सरायो गयो। अंततः श्री स्वामी राजस्थान सरकार रै खान तथा भूविज्ञान विभाग में काम करण वास्तै बुला लिया गया। उणां री नियुक्ति रसायनवेत्ता तथा सिरेमिक प्राविधिज्ञ रै पद पर हुयी। बाद में बै इणी विभाग में पदोन्नत हुयनै रासायनिक तथा सिरेमिक अभियंता वण्या। इण पद माथै काम करता थकां उणां घणी वार विभाग रै संयुक्त निदेशक व निदेशक रो काम करचो। उणां रै प्रभार में काफी समय तांई विभाग रो क्रय उपविभाग भी रैयो। वां इण विभाग में रैवता थकां जयपुर, जोधपुर अर उदयपुर में काम करचो। उदयपुर में श्री स्वामी उगणीस वरसां तांई मुख्यालय—निदेशालय में रैया। उणां नै स्थानांतरण रो कष्ट को झेलणो पड़चो नीं जिकी सरकारी अधिकारियां री नियति हुया करै है। श्री स्वामी घणी वार कैया करता कै इत्तै लंबै अरसै तांई राज्य-सेवा में रैवतां थकां भी मनै स्थानांतरण में हुवणवाळै सुख या दुःख रो, जो भी कैवो, अनुभव को हुयोनी। तबादलो किण नै कैवै इण बारै में बै नितांत कोरा ही हा। सुख तो इण कारण कै राज्यसेवा री लांबी अवधि में अनेकूं जाग्यां रैवण नै मिल जावै। नूंई जाग्यां रा दर्शनीय स्थळ देखण नै मिलै जिकै वास्तै आपरी जेब सूं कीं खर्च कोनी करणो पड़ै। नूवां-नूवां लोगां सूं परिचय हुवै, नूवां मित्र भी वणै अर दुःख इण खातर कै हरदम विस्तर गोळ राखणा पड़ै क्यूंकै तबादलै रै खांडै री धार सिर माथै हमेशा लटकती रैवै। श्री स्वामी रै कामकाज अर व्यवहार सूं उण विभाग रा निदेशक, अन्य अधिकारी नै दूजा लोग सदा संतुष्ट अर उणां रा प्रशंसक रैया।

आपरै सेवाकाळ में यद्यपि श्री स्वामी नै राज्य में दौरो करणै री जरूरत नगण्य-सी ही पण विभाग रा प्रमुख तकनीकी अर अनुभवी अधिकारी हुवण वास्तै उणां नै राज्य सूं वारै भारत रै प्रमुख प्रदेशां व नगरां में सरकारी काम अंजाम देवणनै विभिन्न तकनीकी संस्थावां अर समितियां रै अधिवेशनां में राज्य सरकार अर विभाग रै प्रतिनिधि रै रूप में घणी वार जावणो पड़तो हो।

श्री स्वामी सन् 1970 रै मई महीनै रै अंत में राज्य-सेवा सूं निवृत्त हुया। निवृत्त हुयां पछै 1972 तांई उणां नै आपरै निजी काम सूं उदयपुर रैवणो पड़चो। बै जून 1972 रै अंत में बीकानेर पाछा आयग्या। अठै उण समय सूं बीच में सन् 1974-75 में अेक वरस नै छोड़ नै, जद बै आपरै मोभी बेटै डा. प्रभातकुमार स्वामी रै सागै रुड़की विश्वविद्यालय परिसर में रैया, बीकानेर ही उणारो निवासस्थळ रैयो।

सरकारी सेवा सूं रिटायर हुयां पछै श्री स्वामी आपरै अग्रज स्वर्गीय श्री नरोत्तमदास जी स्वामी रै राजस्थानी-सेवा रै काम में पूरी लगन सूं जुड़ग्या। राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान रै गठन में बै संस्थापक सदस्य तो रैया ई, संस्थान रै महत्वपूर्ण पीठाध्यक्ष पद नै भी उणां ई पैली वार सहर्ष स्वीकारनै बखूबी निभायो। श्री नरोत्तमदासजी रै सरगवास पछै उणां संस्थान रै गरिमापूर्ण 'पीठाधिपति' पद नै संभाळचो नै राजस्थानी-जगत नै आश्चर्यचकित करतां थकां संस्थान सूं राजस्थानी भाषा री सिरमौड़ त्रैमासिक पत्रिका 'राजस्थानी गंगा' रो शुभारंभ करचो। उणांरै अनूठै संपादन में पत्रिका नै आछी साख मिली

है। अबार तांई उणां श्री नरोत्तमदासजी रो संपादित करचोड़ो घणकरोक लोकसाहित्य रो संग्रह 'राजस्थानी गंगा' रै अंकां में प्रकाशित करचो। राजस्थानी री इण सेवा़ नै उजागर करण सारू राजस्थानी मासिकी 'माणक' आपरै मई 1987 रै अंक में श्री स्वा़मी रो अेक लांबो-चौड़ो इंटरव्यू छाप्यो।

श्री स्वा़मी री राजस्थानी सेवा़ और उणां रै शानदार मार्गदरसण सारू कृतज्ञता-ज्ञापन रूप में संस्थान उणां री पिचंतरवीं वर्षगांठ रै उपलक्ष्य में उणां नै अेक अभिनंदन-ग्रंथ भेंट करण री योजना वणायी। उण सारू अेक कमेटी ई वणी पण दुर्भाग्य सूं आ योजना अधूरी ई रैयी अर दिनांक 9 जून 1988 ई. नै स्वा़मीजी इहलीला संव़रण कर लीनी।

श्री पुरुषोत्तमदास स्वा़मी विरचित साहित्य

ग्रंथ सूची

1. पदावली (अप्रकाशित और अप्राप्य)
2. स्वास्थ्यरक्षा, दूसरा भाग, नवयुग ग्रंथ कुटीर, वीकानेर
3. विज्ञान के पथ पर, नवयुग ग्रंथ कुटीर, वीकानेर
4. नूतन रसायन विज्ञान, भाग 1 व 2, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
5. दैनिक जीवन में विज्ञान (अप्रकाशित, गिरधारी लाल टांटिया पुरस्कार-प्राप्त)
6. Clays of Rajasthan, Directorate of Mines & Geology, Rajasthan, Udaipur.
7. Ceramic Industry in Rajasthan, Directorate of Mines & Geology Rajasthan, Udaipur.
8. रत्न विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद
9. औद्योगिक अेवं आभियांत्रिक उपयोग के पदार्थ (अप्रकाशित)
10. सुंदर कांड, स्व. श्री नरोत्तमदास स्वा़मी के सहयोग में संपादन, इंडियन प्रेस, प्रयाग
11. शरीर अेवं स्वास्थ्य विज्ञान (अंग्रेजी सूं अनुवाद)–दी स्टुडेंट्स बुक कंपनी, जोधपुर
12. सरल सामान्य विज्ञान (अप्रकाशित)
13. मकान वणाव़ण रा पदार्थ (अप्रकाशित)
14. स्वास्थ्य चंद्रिका (अप्रकाशित)
15. स्वास्थ्य सुधा (अप्रकाशित)
16. स्वास्थ्य कौमुदी (अप्रकाशित)
17. नूतन सामान्य विज्ञान (अप्रकाशित)

लेख सूची

1. प्रेम की पराकाष्ठा : खांडल विप्र हितैषी, मारवाड़ मूंडवा
2. राजस्थानी साहित्य और उसकी प्रगति : नागरी-प्रचारिणी पत्रिका, काशी
3. अैल्युमीनियम, उसका महत्त्व और उपयोगिता : हंस, काशी
4. दादुर देव का दैन्य प्रदर्शन : हंस, काशी

5. विश्व का निर्माण : माधुरी, लखनऊ
6. राजस्थानी भाषा : वीणा, इंदौर
7. राजस्थानी का अलग अस्तित्व : राजस्थान साहित्य, उदयपुर
8. मिट्टी : प्राची, कलकत्ता
9. महिला, समाज का गौरवमय अंग : चांद, इलाहाबाद
10. सूर्य : हंस, काशी
11. चन्द्रमा : हंस, काशी
12. मंगल : हंस, काशी
13. बृहस्पति : हंस, काशी
14. शुक्र : हंस, काशी
15. बुध : हंस, काशी
16. पृथ्वी : हंस, काशी
17. फास्फेट उर्वरक : सरस्वती, इलाहाबाद
18. कुल नाम : सरस्वती, इलाहाबाद
19. राजस्थान की खनिज संपत्ति : राजस्थान भारती, बीकानेर
20. Transposition of Insoluble phosphates by sodium peroxide and sodium carbonate : Proceedings of Indian science Congress I942 Baroda session
21. Transposition of Insolulbe oxalates by sodium peroxide and sodium carbonate : Dungar College Magazine, Bikaner
22. Ceramic Raw materials of Rajasthan : C.G.C.R.I, Bulletin, Calcutta
23. धरती माता : जागती जोत, बीकानेर
24. तत्वां री कथा : जागती जोत, बीकानेर
25. राजस्थानी रा अप्रतिम सपूत म्हारा अग्रज : जागती जोत, बीकानेर
26. अेक अनूठा व्यक्तित्व (श्री भागीरथमल स्वामी) : भागीरथमल स्वामी, जीवन दर्शन
27. पदार्थ अर वस्तु : माणक, जोधपुर
28. हवा अर उणरी उपयोगिता : राजस्थानी गंगा, बीकानेर
29. पाणी अर उणरो महत्व : राजस्थानी गंगा, बीकानेर
30. तिथियां री घट-वढ क्यूं ? : राजस्थानी गंगा, बीकानेर
31. धरती अर काळगणना : वंदना (स्मारिका), बीकानेर
32. माटी : राजस्थानी गंगा, बीकानेर
33. रवड़ : विज्ञान, इलाहाबाद
34. श्री भंवरलाल नाहटा : श्री भंवरलाल नाहटा अभिनंदन ग्रंथ, कलकत्ता
35. मां आवै, दही-वाटियो लावै, लोककथा प्रस्तुति : राजस्थानी गंगा, बीकानेर
36. वा हळदी-फळदी, हूं सूंठ कड़ाकड़ कैरो कचरो वारूंनी : राजस्थानी गंगा, बीकानेर

37. चिड़ी नै लाधी लाल, कागलै नै लाध्यो मोती : राजस्थानी गंगा, वीकानेर
38. काष्ठ अर्थात लकड़ी : राजस्थानी गंगा, वीकानेर
39. भवन निर्माणोपयोगी पत्थर : जागती जोत, वीकानेर
40. पेंट, वार्निश तथा रंग : सरस्वती, इलाहाबाद
41. स्नेहक पदार्थ : सरस्वती, इलाहाबाद
42. सरेस तथा अन्य चिपकाने वाले पदार्थ : सरस्वती, इलाहाबाद
43. चमड़ी तथा जिलेटीन : सरस्वती, इलाहाबाद
44. प्राणिज तथा वानस्पतिक तैल : सरस्वती, इलाहाबाद
45. अपघर्षक पदार्थ : सरस्वती, इलाहाबाद
46. सीमेंट तथा कांक्रीट : सरस्वती, इलाहाबाद
47. चूना तथा जिप्सम : सरस्वती, इलाहाबाद
48. कांच अेवं तामचीनी के पदार्थ : सरस्वती, इलाहाबाद
49. ताप तथा विद्युत् विसंवाहक पदार्थ : सरस्वती, इलाहाबाद

शान्ति आश्रम, पुराने बिजली घर के पास
वीकानेर

□

मेरे पूज्य गुरुजी

हजारीमल बांठिया

स्वामीजी ! हां, प्रा. पुरुषोत्तमदासजी स्वामी मेरे गुरुजी रहे थे। मैं सन् 1942-44 में डूंगर कालेज, वीकानेर में विज्ञान का छात्र था, तब उनसे शिक्षण ग्रहण किया था। पूज्य नरोत्तमदासजी स्वामी से, जो स्वामीजी के अग्रज थे, तो बचपन से संपर्क रहा था। वे आदरणीय मामाजी (स्व. अगरचन्दजी नाहटा) के अभय जैन ग्रंथालय में प्रायः हर इतवार को बराबर आते थे। दोनों बंधुओं में विशेष गुण यह रहा कि बोलना कम और काम अधिक करना।

सन् 1945 में कालेज छोड़ कर उत्तरप्रदेश में व्यापार-निमित्त आकर बस गया तो संपर्क प्रायः टूट-सा गया था, किन्तु अग्रज स्वामीजी से तो थोड़ा-बहुत रहा। पिछले पांच वर्षों से 'राजस्थानी गंगा' का जब से प्रवाह चलने लगा तो गुरुजी का प्रथम पत्र मिला कि कि तुम मेरे शिष्य हो, गुरु के नाते तुम्हें आदेश है कि राजस्थानी ज्ञानपीठ को सहयोग दो। तब से राजस्थानी गंगा में मैं भी गोते लगाने लगा।

अग्रज श्री स्वामीजी राजस्थानी भाषा के स्तंभ थे। उनके अधूरे कार्य को पूरा करने के लिये गुरुजी वृद्धावस्था में भी जी-जान से जुट गये थे। 'राजस्थानी गंगा' के साथ उनकी अक्षय कीर्त्ति सदैव जुड़ी रहेगी।

—52/16 शक्करपट्टी,
कानपुर-208001

श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी – अेक विलक्षण व्यक्तित्व

कृष्णवीर सिंह

जीवन में हम कई लोगों के संपक में आते हैं, जो अपने सान्निध्य का हम पर अलग-अलग प्रभाव छोड़ते हैं। कुछ व्यक्ति अैसे होते हैं, जो अपने स्वभाव, व्यवहार एवं विद्वत्ता का अविस्मरणीय प्रभाव छोड़ देते हैं। अैसे व्यक्तियों का सान्निध्य हमारे मस्तिष्क में एक प्रकाशपुंज की तरह छा जाता है। श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी से मेरा सान्निध्य कुछ इसी प्रकार का रहा।

श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी ने राजस्थान के खान अेवं भूविज्ञान विभाग में केमिस्ट-कम-सिरेमिक टेक्नोलोजिस्ट के पद का कार्यभार 29 अगस्त, 1953 को संभाला। उस समय विभाग में कुछ ही गिने चुने अधिकारी थे और विभाग भी अपेक्षाकृत बहुत ही छोटा था। श्री मुंशीलाल सेठी उस समय इस विभाग के निदेशक थे। श्री सेठी अेक दबंग प्रशासक थे, जिससे उनके आधीन कार्यरत अन्य अधिकारियों में अेक विशेष प्रकार के भाईचारे अेवं संबंध का स्थापित होना स्वाभाविक था। श्री स्वामी की विभाग की रासायनिक प्रयोगशाला की स्थापना में अेक महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस नई सर्जित प्रयोगशाला ने सन् 1954 में विश्लेषण का कार्य प्रारंभ किया। यह श्री स्वामी की सूझबूझ अेवं कर्तव्यनिष्ठा का ही परिणाम था कि आधारभूत सुविधाओं के न होते हुअे भी इस प्रयोगशाला ने विश्लेषण-कार्य प्रारंभ कर दिया। धीरे-धीरे श्री स्वामी ने इस विभाग की प्रयोगशाला को विभाग की आकांक्षाओं के अनुरूप विकसित किया, जिसके फल-स्वरूप सिरेमिक उद्योग में प्रयुक्त होने वाले खनिजों की जांच आदि का काम भी इस प्रयोगशाला में किया जाने लगा। यह श्री स्वामी द्वारा प्रयोगशाला के लिये बनाये गये ठोस आधार का ही परिणाम है कि आज यह प्रयोगशाला इस विभाग की पूर्णतः विकसित अेवं महत्त्वपूर्ण इकाई बन गई है अेवं यहां किये गये कार्य की तुलना राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं द्वारा किये गये कार्य से की जा सकती है।

श्री स्वामी ने इंडियन स्टैण्डर्ड्स इंस्टिट्यूट (I.S.I.) की विभिन्न तकनीकी समितियों में इस विभाग का प्रतिनिधित्व किया। इन समितियों में उनका योगदान उल्लेखनीय रहा। खनिजों से संबंधित तकनीकी समस्याओं के लिये निदेशक अेवं विभाग के अन्य अधिकारी श्री स्वामी के ज्ञान का लाभ प्राप्त करते रहते थे। मुझे याद नहीं पड़ता कि कभी किसी मामले में श्री स्वामी ने अपनी असमर्थता जताई हो। समस्या चाहे अधात्विक खनिजों से संबंधित हो या धात्विक खनिजों से, श्री स्वामी के पास सभी समस्याओं का समुचित समाधान उपलब्ध होता था। अपने विषय पर इस अधिकार अेवं सौम्य व्यक्तित्व के कारण उनको सभी अधिकारियों से सम्मान मिलता था।

अपने विषय में अधिकार तो कई लोगों को हो सकता है, पर अेक तकनीकी अधिकारी का हिंदी अेवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं पर समान अधिकार बिरले लोगों का ही होता है। श्री स्वामी दोनों ही भाषाओं में लेखन की क्षमता रखते थे, जिसके फलस्वरूप विभाग के कई महत्त्वपूर्ण पत्रों, लेखों अेवं प्रतिवेदनों में श्री स्वामी की इस प्रतिभा की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। श्री स्वामी अेक कुशल प्रशासक भी थे अेवं उन्होंने कई बार संयुक्त निदेशक (प्रशासन) का कार्य भी कुशलतापूर्वक किया था।

श्री स्वामी सन् 1970 में रासायनिक अेवं सिरेमिक अभियंता के पद से सेवा-निवृत्त हुए पर आज भी श्री स्वामी की स्मृति उन अधिकारियों अेवं व्यक्तियों के लिये प्रेरणा की स्रोत है जिनको श्री स्वामी के साथ कार्य करने का अवसर मिला। जो पद्धति श्री स्वामी ने प्रयोगशाला के लिये आज से 34 वर्ष पूर्व निर्धारित की थी, वही पद्धति आज भी उसी रूप में प्रयोगशाला में अपनाई जा रही है।

श्री स्वामी अेक सौम्य, मृदुभाषी अेवं सहृदय अधिकारी थे, जिनका ध्येय सदा 'सादा जीवन, उच्च विचार' रहा। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब भी तत्कालीन निदेशक महोदय नाराज होकर विभिन्न अधिकारियों को कुछ कह देते थे तो अन्य अधिकारी अपनी नाराजगी अपने अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों पर उतार देते थे जबकि श्री स्वामी उसको अपने तक ही सीमित रखते थे।

श्री स्वामी ने सन् 1960 में 'सिरेमिक इंडस्ट्री इन राजस्थान' पर जो पुस्तक लिखी थी, उसमें दिये गये तथ्य, आंकड़े, विश्लेषण इत्यादि आज 27 साल बाद भी संदर्भ के रूप में विभाग द्वारा प्रयुक्त किये जाते हैं। इसी प्रकार श्री स्वामी द्वारा लिखी पुस्तक 'रत्नविज्ञान' आज भी संदर्भ-ग्रंथ के रूप में प्रयुक्त की जाती है। श्री स्वामी का झामरकोटड़ा की फास्फेट परियोजना के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान रहा, जिसके फलस्वरूप विभागीय प्रयोगशाला के चार व्यक्तियों को राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया।

श्री स्वामी ने विभाग के कार्यों को अपना स्वयं का कार्य मानते हुअे हीं संपादित किया जिसमें उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा अेवं ईमानदारी स्पष्ट झलकती है। इस विभाग के प्रति श्री स्वामी का लगाव उनके द्वारा उनकी विदाई समारोह के समय उद्धृत निम्न पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है—

'मेरो मन अनत कहां सुख पावै ?
जैसे उड़ि जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवै।'

यद्यपि श्री स्वामी अनंत की दिशा में प्रयाण कर चुके हैं, पर आज भी उनका स्मरण विभाग में उनके संपर्क में आये हुअे सभी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हमेशा किया जाता है।

□

—निदेशक, खान अेवं भूविज्ञान विभाग,
राजस्थान, उदयपुर-313 001

अग्रज रा भोळा, अनुज भांग्या

श्रीलाल नथमल जोशी

कोई भी वडो काम हुवै तो उण नै सरू करणिया इक्का-दुक्का लोग ई हुवै । वै लोग जे दृढ संकल्प रा धणी है तो काम पुखता रूप धारण करै, आपरी जड़ जमावै अर दूजां रो सहयोग भी उण नै मिलै । राजस्थानी भाषा रै आंदोलन बाबत ई आ ई वात लागू हुवै । जदपी ठाकुर, पारीक अर स्वामी रै मन में आंदोलन जिसी कोई धारणा नई ही, फेर भी बां जिकी लगन सूं राजस्थानी भाषा अर साहित्य रै उद्धार रो काम छेड़्यो, बो इत्ती प्रवळ गति सूं छेड़्यो कै बो आंदोलन हुवै ज्यूं दीसण लागग्यो ।

ठाकुर रामसिंह कनै सर्जनधर्मी दिमाग हो अर वै सगळी भांत आप रै दोनूं बेल्यां माथै यथासंभव छत्तरछैयां करता । अठीनै सूर्यकरण पारीक पिलाणी गया परा इण कारण ठाकुर अर स्वामी सूं अलग-थलग पड़ग्या । आंदोलन सारू अेकजुटता जरूरी है । जे अै तीनूं बराबर भेळा वण्या रैवता, तो राजस्थानी भाषा री स्थिति जिकी आज है, उण सूं साव न्यारी-निरवाळी हुवती । पण भाषा रै भागां तो रोभा लिख्योड़ा हा । तीनां मांय सूं कायम ई दो रैया, कारण पारीकजी असमै सरग सिधारग्या ।

पारीकजी रै सरग सिधारण सूं राजस्थानी आंदोलन री कमर टूटगी । 'मरुवाणी' रै अेक लेख में ठीक लिख्यो कै पारीकजी राजस्थानी-रथ री धुरी हा । धुरी टूटतां ई दोनूं पइया न्यारा-न्यारा गुड़ पड़्या अर रथ रो अस्तित्व खतरै में पड़ग्यो । रथ नै पाछो ऊभा-वण में, चौखळै खड़ो करण में खेचा घणा खावणा पड़्या है । जिको रथ पैली सहज रूप सूं आपरी चाल पकड़्यां चालै हो, रुकावट पछै पैलीआळी सागी चाल पकड़ण रै प्रयास में वरसां रा वरस वदीत हुयग्या । फेर भी आ कैय सकां कोनी कै रथ सागी रफतार माथै है, जदपी आज सालूं-साल मोकळी पोथ्यां छपर बजार में आवै पण अै पोथ्यां पारीकजी रै वैदुष्य रो स्पर्श कर सकै ?

जठै तांई राजस्थानी-संगठण रो सवाल है, इण काम नै स्व. नरोत्तमदास स्वामी ही आपरै हाथां में राख्यो अर ठेट तांई संभाळयो । जवान औस्था में वै साप्ताहिक गोष्ठयां सारू आपरै हाथां सूं मांड-मांडर सूचना री चिटां भेज्या करता । बठै रचनावां वांचीजती, वांरी समीक्षा हुवती अर बांनै छपावण रो इंतजाम करीजतो ।

राजस्थानी रै संगठण सारू स्वामी नरोत्तमदासजी वि. सं. 1978 में वीकानेर में राजस्थानी साहित्य सभा री स्थापना करी अर वि. सं. 1980 में ई इण संस्था रो नांव पळटर राजस्थानी साहित्यपीठ कर दियो । आपरै जीवण में स्वामीजी भाषा, साहित्य अर

व्याकरण रै आछै-आछै ग्रंथां रो संपादन कर्‌यो अर इण कारण प्रकाशक भी बांनै आछा-आछा मिल जावता। इत्तो हुवण रै बावजूद बांरी दिली इंछा रैयी कै बै इण संस्था सूं राजस्थानी री कोई चोखी-सीक पत्रिका काढै। स्वामीजी संपादक तो ऊंचै दरजै रा हा, पण प्रकाशन री व्यवस्था रा झमेला वांरै तावै आवण आळा नईं हा। इण कारण, चावता थकां भी बै पत्रिका छापण री हीमत जुटा पाया कोनी।

13 अगस्त, सन् 1981 नै नरोत्तमदासजी स्वामी रो सरगवास हुयग्यो। स्वर्गीय स्वामीजी री अपूरण अभिलाषा सूं उणां रा छोटा भाई श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी पूरा वाकब हा। अग्रज अर अनुज री जीवण धारावां जाबक न्यारी-न्यारी रैयोड़ी ही। अग्रज लगभग ताजिंदगी अध्यापन-संपादन करचो, तो अनुज थोड़ै समै सारू डूंगर महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक रै पद माथै रैया, बाकी सगळी जिंदगी प्रशासनिक सेवा में लगायी। जदपी पुरुषोत्तमदास स्वामी राजस्थानी रै आंदोलन सूं विशेष जुड़चोड़ा नईं हा, प्रण वगत रै तगादै नै बां आछी तरै ओळख्यो अर सावळ सोच-विचार नै निर्णय लियो कै राजस्थानी साहित्य-समाज नै अग्रज रो अभाव खटकणो नईं चाहीजै। संभवतः अग्रज री पूर्ति सारू ई पुरुषोत्तमदास स्वामी राजस्थानी रै क्षेत्र में कूदचा अर उण वगत इयां लाग्यो कै राजस्थानी रै क्षेत्र में विशेष उपलब्धि उणां रै बूतै सूं बारै री चीज है; पण घणै इचरज री वात कै पैंसठ सीयाळा पार कर्‌योड़ा पुरुषोत्तमदास इण क्षेत्र में इत्तै उछाह अर उमंग सूं वड़चा कै बां भला–भलां नै लारैं छोड दिया। 31 जनवरी उणां री वरसगांठ रो दिन हुवै। वरस-गांठ रो दिन प्रायः लोग प्रेरणा रो दिन मानै। स्वामीजी खातर तो वरसगांठ जाणै प्रेरणा रो अजस्र स्रोत ही। 31 दिसम्बर 1983 नै वरसगांठ सूं ठीक अेक माह पैली राजस्थानी भाषा रै इतिहास में एक इतिहासी घटना घटी—त्रैमासिक पत्रिका 'राजस्थानी गंगा' री प्रस्तावना-रूप में 'वन्दना' रो प्रकाशन। जदपी 'वन्दना' रो प्रकाशन सगळी भांत सरावण-जोग हो, फेर भी संकाळुवां रा मन 'राजस्थानी गंगा' रै प्रकाशन, अर फेर नियमित प्रका-शन सारू आश्वस्त नईं हा। जे स्वामीजी री आगली खिमता कायम रैयी हुवती तो कठणाई री कोई बात नईं ही, पण संभवतः, वन्दना रै विमोचन आळै दिन ई पुरुषोत्तमदासजी जद सड़क पार करता हा, एक साइकल-सवार बांरै हळकी-सीक टक्कर लगायर आगै वधग्यो। पण आ हळकी टक्कर महंगी घणी पड़ी। उणां री साथळ री हड्डी रो फ्रैकचर हुयग्यो अर स्वामीजी नै केई महनां तांई पलंग-सेवन करणो पड़चो। 'राजस्थानी गंगा' रो प्रकाशन अबै कळपना सूं वारै री चीज ही। पण राजस्थानी रा भाग आछा। स्वामीजी में जिजीविषा भरपूर! बां सावधानी सूं इलाज करायो अर पाछा खड़ा हुयग्या। इण अेक्सीडेंट सूं बांरी चाल-ढाल में, काम री गती में रुकावट तो मोकळी आई पण अेक्सीडेंट उणां नै आपरै उद्देश्य सूं पाछा मोड़ सक्यो कोनी।

राजस्थानी भाषा अर साहित्य री जिकी भी पत्रिकावां आज छपै है बां में 'राजस्थानी गंगा' आपरो सर्वथा न्यारो-निरवाळो स्थान वणा राख्यो है, जदपी आपां जाणां कै सरकारी खरचै सूं छपण आळी, लिखारां नै मैनतानो देवण आळी पत्रिकावां भी अनेक संकटां सूं

घिरीजण कारण निरबाध रूप सूं चाल सकै कोनी। 'राजस्थानो गंगा' छपाई, सफाई, भाषा री अेकरूपता अर समै री पाबंदी वगैरै सगळी दीठ सूं आपरो स्थान सराव्णजोग ई नईं, ईसकै-जोग वणाय लियो। इयां तो राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान री तरफ सूं आ पत्रिका छपै जिण री कार्यकारिणी रो बाकायदा गठन हुयोड़ो है, पण फेर भी जठै तांई पत्रिका रै काम रो सवाल है, बो लगभग सगळो स्वा्मीजी ई आप री छेड़ली घड़ी तांई करचो।

पत्रिका में रचनावां मंगाव्ण सारू खतोकिताबत तो खुद करता ई हा, पण सगळां सूं खेचळभर्यो काम हुवै — संशोधन। बो काम भी स्वा्मीजी खुद करता। अेक काम इसो है जिणमें खेचळ री इतिश्री हुय जावै — सगळी रचनावां री प्रेसकापी खातर पांडुलिपि त्यार करणी, अर आ पांडुलिपि भी स्वा्मीजी खुद, आपरै हाथां सूं, घणै सोव्णै आखरां में करता। इण सूं प्रेस रै काम नै घणी मदद मिलती अर छपाई री खोट्यां कम रैव्ती।

आ तो हुई पत्रिका रै संपादन री वात। लारै रैयी उण रै वितरण री व्यव्स्था। सगळा ग्राहकां सारू लिफाफां माथै ठिकाणा करणा, पत्रिका नै पैक करणी अर फेर बांनै डाक में गेरणी, ओ सगळो काम भी स्वा्मीजी नै निजोनिज सळटाव्णो पड़तो। विचार आवै कै अेक आदमी जिको हमेसा अफसराना तरीकै सूं रैयो, बो 'पीर-बवर्ची-भिस्ती-खर' रै रूप में कियां चीतारीज सकै ? पण मायड़ रो हेलो, मातृभाषा रो तगादो आयां पछै मायड़ रा साचा सपूत सुख री नींदां कियां पौढ सकै ?

राजस्थानी भाषा री समृद्धि जग-जाणी है। दूजी भाषावां नै मानता है अर आ सिमरथवान हुव्तां थकां जे आपरै 'सपूतां' सामी टुकर-टुकर जोव्ती रैवै तो उण सूं दुख-दायक वात और कांई हुसी ? संभवत: मायड़ री इण विषम वेदना रै कारण ई स्वा्मीजी नै उण ढळती अव्स्था में भी कोछा टांगर कमर कसणी पड़ी। वा अव्स्था रस्तो बताव्ण री हीं, सुझाव् देव्ण री ही, पण मैदान में उतरण री कोनी।

स्वा्मीजी री अप्रतिम खिमता देखर मैं अेकर कैयो कै राजस्थानी भाषा में थांरी अनन्य सरधा-भगती देखतां थे स्व. नरोत्तमदासजी री वगत में इण संस्थान अर पत्रिका रो काम सांभ लेव्ता तो अवार तांई मोकळी प्रगति हुय जाव्ती। स्वा्मीजी थोड़ी ताळ तो चुप रैया, फेर धीरै-धीरै बोल्या कै भाईसाब अर म्हारै विचाळै इत्ती लौड़-वडाई ही कै बांरै अगाड़ी मूंढो खोलण री म्हारै में कदेई हीमत हुई कोनी। म्हारी तरफ सूं प्रस्ताव् रो मतळव हुव्तो कै बांसूं ओ काम पार पड़ै कोनी। म्हारै सामनै तो बै आदर्श हा, बांरै वतायोड़ै गेलै चालणो ई म्हारो फरज हो। जद बै गया परा, तो वडेरचारो म्हारै कनै आयग्यो अर मनै इण काम नै अवि्लंब सांभणो पड़चो।

अव्स्था री निमळाई अर काम री गरुआई रै कारण स्वा्मीजी नै इण काम में रात-दिन जूझणो पड़चो। पण फेर भी उद्देश्य री पवि्त्रता नै ध्यान में राखतां वांरो मन सदाई अकथ उछाह सूं लबालब रैव्तो अर बै इण काम में थाकेलो अनुभव् नईं करता, फेर भी इण में दो

राय कोनी कै लारलै दिनां बांरी आंख्यां बराबर इसै मिनख री खोज में ही जिको इण काम नै बांरी मौजूदगी में साव़ल सांभनै बांरो भार हळको कर सकतो ।

किणी भाषा रो रुतबो वधाव़ण में व्यक्ति ही प्रधान हुव़ै, भीड़ नईं । इजरायली भाषा आज बेन यहूदा रै कारण आदरीज्योड़ी है। भरोसो है— राजस्थानी रो मान वधाव़ण आळां में स्व़ामीजी रो नांव़ ई कोड सूं लिरीजसी ।

□

सोनगिरी चौक, वीकानेर

दो रुबाइयां

(अंग्रेजी सूं अनूदित)

जीव़णराम सगतिया

वात मान वूढै खयाम री,
ज्ञानी नै तूं वकव़ा दे
अेक वात री गांठ बांध लै,
आ जिंदगाणी जासी ही
और वांरतां सारी कूड़ी,
साची है वस अेकज वात
फूल चुक्यो जो फूल अंत में,
बो निश्चय मुरझासी ही ।

आ गुलाब रो फूल डाळ पर,
मुळक-मुळक कर वोल रैयो
इण जगती रै वागां मांहीं
ओ कितणो हूं लहर रैयो
पण, लै ! मेरै वटव़ै री,
आ रेशम डोरी टूट गयी
नगदाव़ण जो भरी पड़ी ही,
इणी वाग में विखर गयी 2

□

— 8, इंडियन मिरर स्ट्रीट
कलकत्ता-700013

श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वामी, म्हारी दीठ में

दीनदयाल ओझा

गहरी मुलाकात रै अभाव में माणस माणस रै साचै मोल री कूंत नीं कर सकै। माणस री विद्वत्ता, उणरी सूझ-बूझ, आचार-विचार रो पतो उणी वेळा लाग सकै, जद कै वो उण माणस विशेष रै घणो नैड़ो आवै अथवा उण रै ज्ञान नै निरखै, परखै।

डिंगळ-साहित्य री व्याख्या अर डिंगळ शब्द री उत्पत्ति रै बाबत श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी रो नांव घणकरी वार पढ्यो, मोकै-मोकै उणां रै नांवरो लेखां में उपयोग भी करयो, पण श्री पुरुषोत्तमदासजी सूं मन-मेळू मुलाकात स्व. श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै मार्फत हुयी। स्वामीजी राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, बीकानेर रै अेक अधिवेशन में श्री पुरुषोतम-दासजी सूं मुलाकात करवायी। इण मुलाकात रै बाद श्री नरोत्तमदासजी स्वामी, ज्ञान-पीठ री दूजी मीटिंगां में श्री पुरुषोत्तमदासजी नै बुलावता अर वै बीकानेर में जद भी रैवता, जरूर पधारता।

श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वामी स्वर्गीय श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रा छोटा भाई हा। दोनूं भाइयां में जठै घणो सनेव हो, बठै आदरभाव भी सरावणजोग। दोनूं भाइयां रै कद-काठी में जठै समानता बठै हस्त-लेख (आखरां) में असाधारण समता देखण में मिलै। अेक विज्ञान रो गुणी विद्वान तो दूजो राजस्थानी अर हिंदी-साहित्य रो प्रकांड पंडित; अंदरूणी रुचियां में दोनां री सरावणजोग समता।

आदरजोग श्री नरोत्तमदासजी स्वामी रै गोलोकवासी हुवण रै बाद श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान रो कार्यभार संभाळयो। स्वामीजी धुन रा धणी हा। जिकी बात बांरै मन में जच जावती उणनै अवश्य आछी तरियां पूरी करता। आपरी इण प्रकृति रै ताण बां राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान रो पुनर्गठन कर सही रूप सूं चलावण री चर्चा संस्थान रै संस्थापक सदस्यां सूं करी। क्यूंकै हूं भी संस्थान रै संस्थापक सदस्यां में अेक हो, इण खातर संस्थान नै आछी तरै चलावण री बात कैवण रै सागै-सागै संस्थान नै कीं सावळ समय देयर काम करण री बात करी। मैं साहित्यिक मीटिंगां में आया-जाया करतो हो अर स्वामीजी म्हारी मोकळी गतिविधियां सूं वाकिफ हा। स्वामीजी मनै संस्थान रो पीठमन्त्री बणायो अर काम चालण लाग्यो।

म्हारी नौकरी रेलवे वर्कशोप रै लालगढ-स्थित आफिस में ही अर स्वामीजी रो निवास वसुधा नांव रो बंगलो अमरसिंहपुरा में हुवण सूं, जद कदैई भी आफिस सूं हूं घरै

जावतो श्री स्वामीजी सूं घणकरी वार मिलनै घरै पूगतो। इण मोकळी मुलाकातां में श्री स्वामीजी नै निकट सूं देखण री म्हारी हूंस पूरी हुयी।

स्वामीजी अंतस सूं चावता हा कै श्री नरोत्तमदासजी रो सगळो अणकूंत्यो महताऊ साहित्य प्रकाशित हुवै अर गुणी विद्वानां तथा पाठकां तांई पूगै। इण खातर उणां सोच विचारनै 'राजस्थानी गंगा' नांव री राजस्थानी में संस्थान री मुख-पत्रिका निकाळण रो दृढ़ निश्चय करयो। इण पत्रिका रै परिचय रूप में स्मारिका 'वंदना' शीर्षक सूं निकळी, उणरै पछै 'राजस्थानी गंगा' रो अवतरण अंक, फेरूं उणरो प्रवाह अंक अर उणरै पछै 'राजस्थानी गंगा' रा नियमित रूप सूं दूजा अंक निकळता रैया। अबार तांई इणरा दस अंक प्रकाशित हुय चुक्या है।

स्वामीजी मूळतः विज्ञान रा विद्यार्थी अर प्राध्यापक हा। पण उणांरी दीठ राजस्थानी, हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, अर संस्कृत साहित्य कानी भी घणी गहरी ही। डिंगळ साहित्य रो गंभीर अध्ययन, 'डिंगळ' शब्द री उत्पत्ति, उण रो विकास आदि-आदि प्रसंगां माथै उणां मोकळो सोच्यो, विचारयो अर लिख्यो। राजस्थानी भाषा री अेक-रूपता रा हिमायती श्री स्वामीजी राजस्थानी भाषा रो लेखण श्री नरोत्तमदासजी री वणायोड़ी वर्त्तनी नै थोड़ै-घणै वदळाव रै सागै सही मानता। स्वामीजी इण खातर लेखकां सूं आयोड़ी सगळी रचनावां नै दूसर लिखर प्रेसकापी तैयार करता। उण पछै सगळी सामग्री मुद्रण हेतु प्रेस में देवता। प्रूफ री गळतियां नीं रैवणी चाहीजै, छपाई चोखी हुवै, कागद टिकाऊ अर फूटरो प्रयुक्त हुवै अर पत्रिका रो अंक दीखण में घणो रूपाळो लागै। इण सगळी वातां कानी स्वामीजी आपरो पूरो ध्यान देवण में कीं कोर-कसर नीं राखता।

स्वामीजी घणा मेहनती हा। अबार तांई 74-75 वरसां री ऊमर में भगवती सरस्वती री कृपा सूं अेक जोध-जवान सूं घणो सही, घणो आकरो, पुख्तो अर वेगो काम करता। वात उण दिनां री है, जद दिनांक 31 दिसम्बर 1983 सूं 2 जनवरी 1984 तांई ज्ञान-पीठ संस्थान री तरफ सूं स्व. श्री नरोत्तमदास स्वामी रो अस्सीवों जयन्ती-समारोह अर स्व. श्री अगरचंदजी नाहटा रो स्मृति-दिवस मनायो जावणो हो, उण वेळा श्री पुरुषोत्तम-दासजी स्वामी जिती लगन, निष्ठा अर धीरज सूं काम लियो, बो सगळो उणां रै असाधारण व्यक्तित्व रो परिचायक हो। दिन-रात अेक कर उणां सगळा कार्ड छपाया, प्रूफ देख्या, बारै जठै डाक सूं भेजणा हा, उणां खुद डाक में चढायनै सगळां रा पता लिख-लिख टिकटां चेपर डाक में नखवाया। उण वेळा उणां री मेहनत देखनै हूं तो दंग रैयग्यो। अप्रत्यक्ष रूप सूं ओ जरूर मन में निश्चय करयो कै जे प्रभु कृपा करी तो लारली ऊमर इणी तरह साहित्य-सेवा-साधना में विताऊंला।

स्वामीजी हिसाब रै प्रति घणा साचा हा। अेक पईसै रो दुरुपयोग उणां नै सहन को हुवतो नी, सदुपयोग सारू भलै ही सैकड़ूं रुपिया खर्च हुय जावै। सार्वजनिक संपत्ति रो हिसाब अेक-अेक पईसै रो राखणो और सगळां रै आगै जमा-खरच रो व्यौरो प्रस्तुत करणो श्री स्वामीजी आपरो सगळां सूं वडो फरज समझता। हाल ही में उणां लारलै तीन वरसां

रै हिसाब–किताब रो अेक चार्टर्ड अेकाउंटेंट फर्म सूं अंकेक्षण (हिसाब परीक्षण) करायो हो। उणरी रिपोर्ट मुताबिक संस्थान रो हिसाब ठीक ढंग सूं राख्यो गयो है अर रत्ती भर भी गोळमाळ नीं हुयो। 'राजस्थानी गंगा' में दानदाता सूं प्राप्त 100 रु. सूं वेसी रकम रो उल्लेख कर उणरै प्रति आभार प्रकट करीजतो रैयो है। सार्व़जनिक संपत्ति रै इण सदुपयोग री भाव़ना लारै श्री स्वा़मीजी री सराव़णा सारा धनदातां करी अर खुलै हाथां सहायता प्रदान करै है।

स्वा़मीजी वातां माथै नीं, काम माथै विश्वास राखता। अणूती वातां, लफ्फाबाजी स्वा़मीजी नै रत्तीभर भी पसन्द नीं ही। काम हुवै उत्ती वात, नीं जणै आपरो काम करता। इणी तरियां स्वा़मीजी समय रा बडा पावंद हा। जद मिलण खातर वखत दियोड़ो हुव़तो उण वखत स्वा़मीजी आपरा सगळा काम-धंधा छोडनै आव़ण वाळै व्यक्ति री उडीक में रैव़ता। नम्रता, सज्जनता अर शालीनता इण तरै री कै आव़ण वा़ळै अतिथि नै बारणो खोलण वास्तै खुद पधारता, ओपतो आदर देयर मांय बुलाय सगळी वात-चींत करता। सादगी तो उणां रो आभूषण ही हो। जीव़ण में कठै ही वणाव़टीपणो को होनी। फूठरै बंगलै में आछी तरियां रैव़णो, सगळी चीज वस्तुवां, किताबां करीनै सूं राखणी उणां री अनुकरणजोग विशेषताव़ां ही।

स्वा़मीजी विचार देव़ता, व्याख्या कोनी करता। उणां रा विचार किता दूरगामी हुसी, उण रो परिणाम कांई हुसी, इणरी घणी चिंता फिकर बै को करता नी। उणांनै ओ ध्यान रैव़तो कै आज रै काम नै हजार वरस वाद भी कोई देखै तो आ कैय सकै कै ओ काम समझ-दार आदम्यां सूं समझदारी रै सागै करियोड़ो है, ऊंताव़ळ अर हड़बड़ाहट में नीं।

स्वा़मीजी ऊपर सूं जिता रूखा, भोळा, अस्त-व्यस्त-सा दीखता, मांयनै उत्ता ही सरस, समझदार अर सधियोड़ा हा। अेक-अेक आखर नै तोल-तोल बोलणो अर सोच-सोचनै लिखणो उणां री सहज प्रवृत्ति ही। स्वा़मीजी दर असल अेक साचा साहित्यकार संत हा। आज उणां रै भागीरथ-प्रयत्न सूं 'राजस्थानी गंगा' वेगव़ती हुयर प्रवा़हित हुय रैयी है।

स्वा़मीजी मोकळी पोथ्यां लिखी, विज्ञान रै मोकळा छात्रां नै पढाया। माध्यम उम्र भर घणकरो अंग्रेजी रो रैयो पण हिंदी अर राजस्थानी तो उणां रै खून में, रग-रग में रमियोड़ी ही। कणै-कणैई हिंदी बोलो भलां ही पण लिखणो हुव़तो जणै ठाव़ी, टकसाळी राजस्थानी लिखणै में कदै ही पाछ नीं राखता। स्वा़मीजी कवि़, निबंधकार, समीक्षक अर अनूठा संपादक हा।

मनै श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वा़मी रै श्रीचरणां में बैठर पढणै रो तो मौको नीं मिलियो पण जद सूं उणा सूं मिलणो-जुलणो चालू हुयो, उण वखत सूं अप्रत्यक्ष अर प्रत्यक्ष रूप सूं भी मोकळी वातां सीखी। हूं उणां रो जीव़ण-भर कृतज्ञ रैसूं। □

—साहित्य साधना सदन
केला पाड़ा, जैसळमेर-345 001

श्री पुरुषोत्तदासजी स्वामी -- अेक अनुकरणीय जीवण-दर्शन

नानूराम संस्कर्ता

उण वखत रै वीकानेर राज्य में उघड़तै उजास री फड़फड़ाहट फैल रैयी ही। राज्य रै आखा महकमां माथै मोटा साब बारै सूं बुलाया जाया करता हा। आम लोगां में उणां रै दरसण री अखूट लालसा जागी। वै गोरी चाम रा टोपधारी दूधिया मोटियार आपरी विदेशी–अंग्रेजी बोली में समय परवा़ण हिंदी शब्दां री लड़ां रै टुकड़ां नै पाव-पूण करता उळझावता दीखता। कई नगरवासियां रै हिड़दां में होळी री चिणगारयां उपड़ण लागती। अेहड़ा अव़सर माथै शहर रै लोगां रै जठै-कठै आपरै आंधलै ज्ञान रा चींचड़-सा चढण लागता। वै सोचता– आपणै देश में सागीड़ो सो कीं वापरै अर लाधै; पण आंख्यां में प्रकाश तो दीयै सूं देख्यां ही नीं पांगरै।

पैलड़ै विश्व़ युद्ध री प्राणघाती लाय में यूरोपवा़ळा आपरै लालच सूं अठै रा जवा़न मिनखां नै बुला-बुलाय नै झूंका भरती करणा चाव़ता हा। पण समझदार लोग आपरै गाभरू टाबरां नै फौज सूं अलायदा राखणै री जुगत बैठाव़ता तथा टाबरां नै भणाई रै चानणपाखै में टोरण-सरकाव़ण रो प्रयत्न करता। केई ज्ञानी-ध्यानी सत्संगी कथावाचक संत 'माता शत्रु पिता वैरी, येन बालो न पाठितः' वाळी कैव़त सूं अणभिज्ञ कोनी रैया।

देश रै खदबदतै ज्ञान-उफाण रै समय-औसाण राजस्थानीरत्न श्री पुरुषोत्तमदास स्वा़मी रो जनम 31 जनव़री 1913 नै, इण मुजब विक्रमीय संव़त 1969 रै माघ वदी दस्यूं शुक्रवार रै दिन वीकानेर में पं. जयश्रीरामजी रै राम-नेमी घराणै में हुयो। उणां रो परिव़ार (नख–सूव़टा) पैली दुळचासर सूं उठनै आयो हो, इण कारण दुळचासरियो वाजै। आप भजनीक अर भणायी रै केड़-कड़ूंवै में अव़तरिया, फूल्या-फळचा अर वडा हुया। उण वखत दूजा गांवां में तो पढाई रो जावक नांव़ नीं हो, पण बीकानेर में वखत वळ अंग्रेजी री पढाई रा केई मदरसा थरपीजग्या हा। घर रा वण्या वधता कारणां सूं उणांरा संस्कार साव़ ऊजळा वणनै ऊंचा चढता-खिंचता रैया। उणांरै आगै आठ श्रेणी ऊंचा भणीजता उणांरा वडा भाई श्री नरोत्तमदासजी री लेखणकळा सूं मोव़णी मोड़ रा मोती सिरखा सोव़णा-चमकणा आखरां रो लेखण उणां भी सीख्यो अर जमायो। साहित्य अर व्याकरण रो हियाव़ ही उणां साथै खुल्यो। संस्कृत रै प्रति अनुराग-भाव़ भी उणां में आपरै दो और वडा भायां लक्ष्मणदासजी अर माधव़दासजी सूं विरासत में उपज्यो अर फळाप्यो। काका स्व. महंत चतुर्भुजदासजी पण अेक जाण्या-मान्या वडा भक्त कवि़ हा। उणां 'भवा़नी

मंगल' री रचना करी ही। उणां रो साहित्य बांरै घरां घणो गायीजतो सुण्यो गुण्यो। संगातियां रै वतायै मुजब 'पुरुषोत्तमदासजी बाळपणै सूं ही मेधावी अर अध्यवसायी विद्यार्थी रैया हा। उणां रो पढणो-लिखणो, मनन-चिंतण सूं सराबोर कैयीजतो।'

आंठवीं सूं दसवीं कक्षा रै वीच पुरुषोत्तमदासजी हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग री प्रथमा, मध्यमा (विशारद) व सम्पादन कला प्रवेशिका जिसी महत्त्वपूर्ण परीक्षावां उत्तीर्ण करी। मध्यमा री परीक्षा देवण में उणांरा साथी डूंगर कालेज में उण वखत रा शिक्षक श्री लाभदत्त गड़सी व्यास हा।

श्री नरोत्तमदासजी आपरै केई सहयोगी मित्रां रै साथै जिणां में पं. सूर्यकरणजी पारीक भी हा, सन् 1923 में राजस्थानी में शोध-खोज अर नूवें साहित्य सरजण खातर राजस्थानी साहित्य सभा स्थापित करी। आगै चालनै पनरै बरस पछै इण संस्था रो नांव 'राजस्थानी साहित्यपीठ' राख्यो गयो। पुरुषोत्तमदासजी सरुवात सूं इण संस्था रा कोडायत सदस्य अर सक्रिय कार्यकर्ता रैया। इण संस्था रो सभापति पद सरूपोत में तत्कालीन वाल्टर नोबल्स स्कूल रा संस्कृत–अध्यापक अर मानीता विद्वान पं. विद्याधरजी शास्त्री संभाळचो-सोभायो। दूजा अगुवा विद्वानां री कार्यकारिणी समिति वणीजी जिण में ठा. रामसिंहजी, पं. दशरथ शर्मा, पं. रामनिवास हारीत, श्री रावत सारस्वत, नाथूरामजी खड़गावत अर अगरचन्दजी नाहटा रा नांव उल्लेख करणजोग है। इण संस्था द्वारा अनुसंधान रो लूंठो काम-काज हुयो।

इण सूं प्रेरणा लेयर पुरुषोत्तमदासजी भी आपरै विद्यार्थी-काळ में नाना भांत रा लेख, निवंध, कहाणी, कविता वगैरै तैयार कर उण बखतरी घणकरी प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकावां में प्रकाशित कराया। इण पत्रिकावां में खांडल विप्र हितैषी सूं लेयनै काशी री नागरी-प्रचारिणी पत्रिका भी आवै है।

श्री स्वामी आपरै अग्रज नरोत्तमदासजी रै साहित्य-पथ पर चालनै लगोलग लूंठा कदम धरता गया। म्हारी जाण में अै बै ही श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी हा, जिणां रो नांव नागरी-प्रचारिणी पत्रिका भाग, 14 अंक 2 पृष्ठ 225 माथै 'डिंगळ' रो अर्थ वतावणिया तथ्य-कारणां में प्रकाशित हुयोड़ो है; उणनै सदा सूं शोधार्थी वांचै–घोटै। (आपरो ओ कयास सही है– संपादक।) बै जद विश्वविदयालय काशी में विदयाध्ययन करता हा, वडा स्वामीजी रै सहयोग सूं सुंदर-कांड रो संपादन करचो जिको इंडियन प्रेस प्रयाग सूं प्रकाशित हुयो।

श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी वीकानेर री पढ़ाई पूरी करियां पछै काशी हिंदू विश्व-विदयालय में पढणै वेगी गया। श्री नरोत्तमदासजी रा अनुज हुवणै रै नातै वठै उणां नै केई-अेक व्याख्यातावां सूं आछा काम-इनाम मिल्या। अधिकारी बिद्वानां साहित्य सभावां री ठावी जाग्यां उणां नै सूंपी-संभळायी। उणां करड़ा-कंवळा सैंग कारज खिमता-बिखमता सूं करचा तथा संतुलण रो सागीड़ो परिचय दियो; जियां कैयीजै– प्रकृति विकृति न जायते

चोत्तमानां, मोटा मिनखां री प्रकृति में विकार नीं आवै । श्री स्वामीजी उण विश्व-विद्यालय में शिक्षा-साहित्य री प्रवृत्तियां में पूरमपूर भाग लियां राख्यो जिकां री जाणकारी अनुसार वाराणसी रै विद्वानां में भी उणां रो मान-काण वध्यो। बठै सूं अेम. एस-सी. रसायन विज्ञान में सन् 1938 में उत्तीर्ण करी अर ओठा वीकानेर घरै आया। बै छात्रावस्था सूं ही साहित्यसेवी अर मातृभाषा राजस्थानी रा महान हिमायती रैवता आया हा।

सन् 1939 में स्वामीजी वीकानेर राज्य रै महकमा खास में फोरेन अेंड पोलिटिकल डिपार्टमेंट में राज्य-सेवा में लाग्या। बै 1-8-40 नै वीकानेर महाराजा गंगासिहजी रै पोतां भंवर करणीसिहजी तथा भंवर अमरसिहजी रा साइंस टच्यूटर (विज्ञान-शिक्षक) नियुक्त हुया। 17-11-40 नै वै गुणप्रकाशक सज्जनालय रा पुस्तकाध्यक्ष चुणीज्या। उण वखत इण संस्था री कार्यकारिणी समिति रा अध्यक्ष ठा. रामसिंह अर सचिव डा. हरनारायण हर्ष हा। सन् 1942 में अखिल भारतीय रांकावत ब्राह्मण महासभा रा स्वामीजी मानीता साहित्यमंत्री वण्या। उणां रै संपादकत्व में 'रांकावत ब्राह्मण' रो पैलड़ो अंक वडी सजधज रै साथै निकळचो।

ऊंची पढाई री उणां री लालसा वणी रैयी। देश रै स्वतंत्र हुवणै रै समय वै संयुक्त राज्य अमेरिका रै ओहायो राजकीय विश्वविदचालय में वीकानेर राज्य री छात्र-वृत्ति पायनै जा पूग्या अर बठै अेम. अेस. (रासायनिक आभियांत्रिकी अर सिरेमिक टेक्नो-लोजी) री उपाधि सन् 1948 में प्राप्त करी। उणां अमेरिका रै विभिन्न स्थानां रो भ्रमण पर्यटक रै तौर पर आपरै दो अन्य सहपाठियां अर प्रसिद्ध सिने- तारिका शोभना समर्थ रै सागै करचो। बठै लोस अेंजेलस में अेक फर्म में कार्यानुभव भी प्राप्त करचो। उणां रै कार्य री प्रशंसा उण फर्म रै तकनीकी अधिकारचां मुक्तकंठ सूं करी।

अमेरिका सूं वापस आयां पछै अेक-दो व्यावसायिक औद्योगिक फर्मां में उणां सफळता-पूर्वक काम करचो। पछै वै राजस्थान सरकार री सेवा में आयग्या। खान तथा भूविज्ञान विभाग में रासायनिक अेवं सिरेमिक अभियंता रै पद सूं वै 25 मई 1970 में सेवानिवृत्त हुया। विज्ञान अर तकनीकी अधिकारी हुवता थकां बै प्रशासन रै काम में भी पटु हा अर घणी वार उणां संयुक्त निदेशक (प्रशासन) अर निदेशक रै पदां पर काम करचो। हिंदी अर अंग्रेजी री अनूठी अभिज्ञता रै कारण उणां नै विभाग में घणी प्रसिद्धि मिली। अंग्रेजी सूं हिंदी में अनुवाद रो काम उणां री देखरेख विना कोनी करचो जावतो।

श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वामी सदैव श्रद्धास्वरूप हिंदी, राजस्थानी अर अंग्रेजी में लेख लिखणै में अग्रणी रैया, तो भी विज्ञान-वाङ्मय में उणां री रचनावां कम संख्या में नीं है। उणां री पोथ्यां रा नांव है– रत्नविज्ञान, विज्ञान के पथ पर, दैनिक जीवन में विज्ञान, स्वास्थ्य रक्षा, औद्योगिक अर आभियांत्रिक उपयोग के पदार्थ, नूतन रसायन विज्ञान, Clays of Rajasthan, Ceramic industry in Rajasthan इत्यादि।

श्री स्वामी नै हास्यरस में भी अभिरुचि कम नीं ही। उणां रो हास्य रस रो प्रसिद्ध लेख 'दादुर देव रो दैन्य-प्रदर्शन' जिकै रो हिंदी रूप 'हंस' में छप्यो हो आज भी लोगां नै

याद आवै है। ओ हास्य रस सूं सराबोर लेख उणां बीकानेर में नागरीभंडार तथा गुण-प्रकाशक सज्जनालय री विशाल जनसभावां में, जिकै री अध्यक्षता क्रमशः श्री जुगलसिंह खीची अर श्री केसरीप्रसादजी शास्त्री करी ही, सुणायो हो। उण री उण वखत भूरि-भूरि प्रशंसा करीजी।

उणां री साहित्यसेवा सूं हिंदी अर राजस्थानी री घणकरीक पत्रिकावां अछूती नीं रैयी। इणां में चांद, माधुरी, हंस, वीणा, सरस्वती, विज्ञान, लेखक, कमलिनी, राजस्थान भारती, जागती जोत, माणक, डूंगर कालेज मैगेजीन, सिरेमिक बुलेटिन, प्राची, राजस्थानी गंगा आदि उल्लेखनीय है।

स्वामीजी डूंगर कालेज रै हस्तलिखित मुखपत्र 'आलोक' रो संपादन करचो। उणां श्री गुरुप्रकाश गुप्त 'मुकुल' रै सहयोग सूं हिंदी री हस्तलिखित पत्रिका 'धारा' रो संपादन भी खासा दिनां तांई करचो। अै दोनूं पत्रिकावां स्थानीय साहित्यिक क्षेत्र में खूब सरायीजी।

श्री स्वामी बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन रै चौथै अधिवेशन में, जिको चूरू में हुयो अर जिणरा अध्यक्ष प्रसिद्ध राजस्थानी-त्रयी रा प्रमुख सदस्य ठा. रामसिंहजी हा, गिरधारी-लाल टांटिया पुरस्कार सूं सन् 1944 में सम्मानित हुया। ओ पुरस्कार उणांनै 'दैनिक जीवन में विज्ञान' शीर्षक पोथी पर मिल्यो हो। निर्णायकां में डा. दशरथ शर्मा भी हा।

श्री स्वामीजी महाप्रयाण तांई राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, बीकानेर रा पीठा-धिपति हा। इण संस्थान री तिमाही मुखपत्रिका रो संपादन-कार्य भी स्वामीजी ही कर रैया हा। वै विज्ञान परिषद्, प्रयाग रा आजीवन सभ्य, भारत री प्रसिद्ध विज्ञान संस्था इंडियन साइंस कांग्रेस असोसियेशन, कलकत्ता रा सन् 1942 सूं आजीवन सदस्य अर सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टिट्यूट, बीकानेर रा संस्थापक सभ्य हा।

प्रशस्ति

पिता प्रभ जयश्रीराम, जप्यो नित राम-नाम
वसुधा अमर धाम, बीकानेर वास है।
रांकावत महाराज, करत साहित्य काज
राजस्थानी गंगा गाज, भ्रातृप्रेम खास है।।
ओज अनुराग भाल, संयम नियम पाल
विद्यागुरु गुणमाल, ज्ञानपीठ रास है।
आखर मोती सरूप, ज्ञान-साधना अनूप
माता मीरां रा सपूत, पुरुषोत्तमदास है।।

☐

लोक साहित्य प्रतिष्ठान,
काळू (बीकानेर)

स्व. पुरुषोत्तमदास स्वामी

रामनिवास शर्मा

लू जोर सूं चालै ही। डील रो पसीनो आवण सूं पैली भाप वणनै उडै हो। छियां आप रो अस्तित्व वचावण खातर ठंडी जागा जोवै ही। हूं कमरै में बैठो-बैठो जीवण रा लारला पाना उथळै हो। पंखै री पून लू री भायली ही। इतै नै मोड़ो खड़खड़ायीज्यो। लिलाड़ माथै तीन सळ घालनै मोड़ो खोल्यो। भायलै नै देखर इचरज हुयो। वो मनै बोल्यो–'अबार ई श्री नरोत्तमदासजी स्वामी कनै चालणो है। वां कनै सूं वनस्थळी में भरती करावण री जाणकारी लेवणी है।'

'थोड़ा पछै चालां तो कीं हरज है कांई ?'

'नहीं, अबार ही सगळी वात पूछनै कागद नाखणो है।'

हारनै उण रै सागै श्री नरोत्तमदामजी रै घरै गयो।

स्वामी जी वनस्थळी सूं रिटायर हुयर आपरै घरै रैवण खातर थोड़ा दिनां पैली आया हा। उणां री पिरोळ खुली ही। जीवणै हाथ कानी कमरै में स्वामीजी ढोलियै माथै बैठा पढै हा। नमस्कार करनै भरती संबंधी वातां करी। सगळी जाणकारी मिली। इत्तै नै घर मांय सूं बांसूं मिलतो-जुलतो थोड़ी ऊंची काठी रो आदमी कमरै में आयो। नमस्कार करनै पूछ्यो—'आप कद पधारचा ?'

आपरै वडै भाई जियां ही होळै-सैक बोल्या–'काल। सगळा ठीक है नी ?'

थोड़ी ताळ वात करनै पाछा घरै आयग्या।

आज उण वात नै याद करण खातर याददास्त रो दरवाजो वार-वार खोलणो पड़ै। श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी आपरै वडै भाई श्री नरोत्तमदासजी स्वामी जियां ही दुवळा-पतळा थोड़ा पकै रंग रा हा। मितभाषी भी बिसा ई। आ मुलाकात दूसरी ही। पैली मुलाकात नवयुग ग्रंथ-कुटीर में स्व. श्री शंभूदयालजी सक्सेना साथै हुयी ही।

आज जद बां सगळी वातां नै याद करां जणै मन में अेक रिक्तता वण जावै। श्री शंभू-दयालजी चल्या गया। नरोत्तमदासजी स्वामी भी चल्या गया अर चल्या श्री पुरुषोत्तम-दासजी ही गया।

रिटायर हुयां पछै श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वामी उदयपुर छोडनै आपरै घरै आयग्या हा। नागरी भंडार अर शोध प्रतिष्ठान रै सभा-समारोहां में बराबर मिलणो हुवतो रैवतो।

वां अेम. अेस-सी. तांई पढाई करी अर हिंदी में साहित्यरत्न हा। राजस्थानी सूं उणां रो घणो नेह हो। उणां री, केई वरसां पैली, आ इच्छा हुयी कै वडै भाई रा संपादित ग्रंथ जित्ता भी है सगळां नै प्रकाशित करवा दूं। आ सोचनै उणां अेक राजस्थानी पत्रिका चलावण री योजना वणायी। उण योजना रो साकार रूप 'राजस्थानी गंगा' है।

वृद्धावस्था, दुबळो-पतळो डील, वीमार सरीर पण स्वस्थ मन लेयर बै इण काम में अेकलव्य दांई जुटग्या। रात अर दिन अेक-सा कर दिया। आंधी देखी नां तावड़ो। लोगां सूं बराबर मिलणै अर 'राजस्थानी गंगा' सारू धन संग्रह करण सारू अेक कर्मठ युवक दांई इण अनुष्ठान में मिशनरी भावना सूं लागग्या। छाती वजर री करनै सगळा दुख सैवणा सरू कर दिया, पण मूंढै माथै कदैई सळ नईं आवण दियो।

श्री पुरुषोत्तमदासजी व्याकरणाचार्य जियां शब्दां में मितभाषी हा, धन वासतै भी बियां ई मितव्ययी हा। मनै अेक वात याद आवै है कै मार्च में हूं लालगढ सूं स्कूल जावै हो। अेक वजण आळी ही। तावड़ो पड़ै हो। गेडियै रै सारै-सारै स्वामीजी जावै हा। म्हारै कनै छोटी गाडी ही। कनै जायनै गाडी ढाबी। नमस्कार करनै बोल्यो—'आप कठीनै पधारो हो?'

'लालगढ जायर आयो हूं। घरै जाऊं हूं। अबार घड़ीक नै पूग जासूं।'

'म्हारै सागै चालो, अबार घरै छोड़ दूं।'

'आप पधारो, मनै कोई तकलीफ कोनी।'

'हूं स्कूल जाऊं हूं। आपनै घरै छोड देसूं। म्हारै कनै गाडी है।'

गाडी में वैठायर उणां नै घरै छोड दिया। पण हूं सोचतो रैयो— उणां में कित्तो धीरज है, काम री कित्ती लगन है। गोडै में दरद है, चालण-फिरण में तकलीफ है, फेर भी लकड़ी रै सारै घूमै-फिरै अर सगळो काम करै है। काम रै पेटै किती आस्था है, विश्वास है, लगन है। इसा लोगां नै देखां जणै मन सोचण नै मजवूर हुवै कै मिनख-मिनख में कितो फरक है। अेक आपरै स्वार्थ रै लारै लाग्योड़ो रैवै अर अेक सेवा में भागतो फिरै—नां तो जस री लिप्सा अर नां धन री चावना। अेक मिशन राखै, ध्येय राखै काम करण रो। भावना कित्ती ऊंची है, त्याग कितो वडो है। आज श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वामी मौजूद कोनी पण उणां री प्रेरणा कायम है।

□

प्रिंसिपल,
राजस्थान वाल भारती, वीकानेर

म्हारो अमरीका-प्रवा़स

पुरुषोत्तमदास स्वा़मी

(1)

मैं 15 नवंबर, 1945 नै दोपारै रा दो वजी कराची बंदरगाह सूं सजळ नयनां सूं आपणी भारतभोम सूं विदा ली। पूरा इक्कीस दिन मैं टारेंस नांव़ रै जहाज में विताया। ओ नार्वे में वण्योड़ो जहाज हो, जिकै नै अमरीका री सरकार युद्धकाळ में उपयोग करणै वास्तै ले लियो हो। इण रो वजन करीब पन्द्रह हजार टण हो। युद्ध अबार-अबार ही समाप्त हुयो हो। अमरीका रा सिपाही घरै जाव़ण नै घणा उत्सुक हा। इण जहाज में सगळी जागां इणां वा़स्तै राखी गयी ही, पण भारत सरकार रै अनुरोध पर इणां मांय सूं पचास जागां भारत रै विद्यार्थियां नै दे दी गयी ही। उण पचास भाग्यशाली लोगां में हूं भी अेक हो।

म्हांरो ओ टारेंस जहाज रस्तै में खाली पोर्ट-सईद में केई घंटां रै वा़स्तै रुक्यो हो। अठै सूं मैं भारत अपणै रिश्तेदारां अर मित्रां नै कागद लिखनै भेज्या। म्हांरी आ समंदर-यात्रा खूब आनन्दप्रद रैयी। अेक-दो दिन नै छोड़'र जद अटलांटिक (अशांत) महासागर में टारेंस प्रव़ेश करयो हो कदै ही समुद्री बीमारी मनै को संताई नी। म्हांरै केई दोस्तां नै आ यात्रा सगळा दिन वडी कष्टदायी रैयी। बै सरू सूं अंत तांई जहाज रै अस्पताळ में ही रैया।

उण दिनां जठै-कठैई निजर पड़ती पाणी ही पाणी देखण में आव़तो। केई दिनां तांई तो इसो दृश्य खूब चोखो लागतो पण पछै ओ कीं अखरण सो लागग्यो। अशांत महासागर में जद म्हांनै दूर सूं अेजोर्स द्वीप रा दरसण हुया तो हृदय बांसां उछलण लागग्यो। जी करतो कै म्हे धरती माथै पग धरां पण ओ कद संभव़ हो?

जहाज रै मांय म्हांनै यथेष्ट खाव़ण नै मिलतो। इण रै अलावा़ कराची सूं चालती वखत म्हारै मित्र श्री नरहरि वैद्य खाव़ण रो पूरो समान म्हारै सागै कर दियो हो। इण वास्तै इण बारै में मनै कदैई कोई शिकायत नीं रैयी।

जहाज यद्यपि सेना रै आदमियां नै लेजाव़ण वास्तै ही हो, आ वात हुव़ता थकां भी उण में मनोरंजन री काफी व्यव़स्था ही। सिनेमा री चालती-फिरती अर बोलती तसवीरां (मूवी़) दिखाव़ण रो प्रबंध भी उण में हो। इणरै अतिरिक्त अमरीकी सेना रा अफसरां विशेष रूप सूं अेक वाद-विवाद समिति रो आयोजन करयो हो। इणरी बैठक रोजीनै

तीसरै प्रहर दो-तीन वज्यां हुया करती ही। उण में विभिन्न भारतीय अर अमरीकी प्रश्नां पर चर्चा हुया करती।

टारेंस जहाज में शल्य-चिकित्सा रै वास्तै पूरो समान हो। जहाज में अेक अमरीकी सैनिक रै उंडुक शोथ (अपेंडिसाइटिस) रोग रो आपरेशन सफळतापूर्वक करीज्यो। इण वा़स्तै जहाज नै समंदर पर विना लंगर नाख्यां करीब-करीब स्थिर राखण में जहाज रै चालक अभूतपूर्व़ कौशल रो प्रदर्शन करयो। न्यूयार्क पूगणै सूं पैली बो सैनिक चोखो भलो-चंगो हुयग्यो हो।

छव़ दिसम्बर नै सिञ्झ्या रा तीन वजी म्हांरो जहाज अमरीकन धरती रै कनै आ पूग्यो। दूर सूं स्व़तन्त्रता देव़ी री मूर्त्ति रा दर्शन करनै जी खिल उठयो। मन में सोच्यो– कदै ही भारत माथै भी इण देव़ी री कृपा हुसी। इमिग्रेशन-सम्बन्धी कागदां री जरूरी खाना-पूरी में घणो वखत लागग्यो। अमरीकन भूमि माथै पग धरतां समै रात पड़गी ही। न्यूयार्क में सूरज सीयाळै रै दिनां में लगभग चार वजी छिप जाया करै है। कीं वखत चुंगी सम्बन्धी कार्यवाही में लाग्यो। होटल पूगनै विश्राम करतां रात आधी सूं घणी वीतगी ही।

(2)

हूं अमरीका में करीब इकतीस महीनां तांई रैयो। इण अव़धि में हूं वठै खूब घूम्यो-फिरयो। घणकरोक घूमणो रेल सूं ही हुयो पण बस अर कार रो भी उपयोग करणै में कोताही को वरती नी। अमरीका रै आधै सूं वेसी राज्यां नै घूम-फिरनै देख्या। न्यूयार्क, सेन- फ्रांसिस्को, शिकागो, सियेटल, लास-अेंजेलस, सेंट लुई, क्लीवलैंड, डिट्रोइट, वाशिंगटन, पोर्टलैंड, लास वेगस, साल्ट लेक, सेंट पाल, मेडिसन, सिनसिनैटी, मिलवा़की, इंडियाना-पोलिस, कैंसस, कोलंबस आदि प्रसिद्ध नगरां में कोई अछूतो नीं वच्यो।

सन् 1947 रै गरमी रै दिनां में लगभग दो महीना मैं लास-अेंजेलस नगर में रैयो। इण नै देव़दूतां रो शहर कैयो जाव़ै है। ओ संसार भर रो सगळां सूं विस्तृत नगर है। ओ 451 वर्ग-मील रै घेरै में फैल्योड़ो है। इण नै अगर कार सूं अेक सिरै सूं दूजै सिरै तांई पार करयो जाव़ै तो 50 मील री यात्रा करणी पड़सी। लास-अेंजेलस नगर में पाणी रो वितरण नळां द्वारा कोलेरेडो नदी रै बांध बोल्डर डैम री झील सूं लायनै करीजै है। आ झील मानव-निर्मित झीलां में सब सूं वडी है। अेक इसी ही वडी भील राजस्थान में उदयपुर कनै जयसमंद भील है। इण भील री गहराई 589 फुट है अर इणमें 33,500,000 अेकड़ फुट पाणी है। इणरै किनारै री लम्बाई 550 मील है। बोल्डर डैम नामक बांध री ऊंचाई 726 फुट है। ओ सबसूं ऊंचा वांधां मांयसूं अेक है। इण बांध अर विजळीघर रै वणाव़ण में लगभग साढी इग्यारै करोड़ डालर लाग्या हा। अजकाळै (1987 में) अेक डालर कोई तेरह रुपियां बरोबर हुव़ै है। विजळीघर में पूगणै वास्तै वांध रै नीचै लिफ्ट सूं जाव़णो हुव़ै। नीचै जाणै री फीस करीब डेढ रुपियो है। साथै अेक पथप्रदर्शक रैव़ै। बो सब वातां समझायनै वताव़ै।

सिनेमा-संसार रो सब सूं प्रसिद्ध नगर हालीवुड लास अेंजेलस रो ही भाग है। सिनेमा-जगत री विश्वप्रसिद्ध तारिकावां बेवरली हिल्स नांव रै उपनगर में रैवै। हालीवुड बुलिवार्ड री छटा रात में देखतां ही वणै। उणनै देखनै बच्चन री आ ओळी सहसा याद आ जावै — 'दिन को होली, रात दिवाली, सदा मनाती मधुशाला'। अेक तरचां अगर ओ कैयो जावै कै अमरीका रो प्रत्येक शहर रात नै जगमगाया करै तो कीं भी अत्युक्ति कोनी हुवै। हाली.वुड में अेक प्राकृतिक अेंफीथियेटर वणियोड़ो है जिकै नै हालीवुड बाउल (bowl) कैवै। अठै वीस हजार लोग बैठ सकै है। हालीवुड में ही च्यार वडी ब्राडकास्टिंग कंपनियां रै प्रशांत तटीय मुख्य स्थान है। अै च्यार कम्पनियां नेशनल ब्रोडकास्टिंग, कोलंबिया ब्रोडका-स्टिंग, अमेरिका ब्रोडकास्टिंग अर म्युचुअल ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन है। इणां री शृंखलावां सगळै देश में जठै-तठै फैल्योड़ी है।

लास अेंजेलस सूं बाईस मील दूर प्रशांत महासागर में स्थित सांता कैटेलिना द्वीप छुट्टियां वितावण वास्तै अेक आदर्श जागा है। अठै जहाज सूं ढाई घंटां में पूग्यो जा सकै है। हूं म्हारै मित्र राजेश्वरदयाल माथुर अर अेक भारतीय सिंधी धलवानी परिवार रै, जिको अमरीका में ही वसग्यो हो, सदस्यां रै साथै बठै गयो हो। ओ द्वीप सताईस मील लांबो अर 7।। मील चवड़ो है। इण में अेक चिड़ियाघर है जिकै में उष्णदेशीय घणीसारी चिड़ियां है। बठै मोर नै देखनै म्हां लोगां नै घणी खुशी हुयी। बठै सूं नाव में वैठनै सील चट्टाणां नै देखणनै गया। बठै हजारूं सील मछल्यां मिलै।

लास अेंजेलस में केई दर्शनीय जागां देखण नै मिलै। अेक्सपोजिशन पार्क नै देखनै तो तुळसीदासजी री आ उक्ति वरबस याद आ जावै—'अवसि देखिये देखन जोगू' अठै 120 जात्यां रै गुलाब रा करीब 15000 पेड़ है। दूसरो दर्शनीय स्थान ग्रिफिथ पार्क में वेधशाला अर प्लेनेटोरियम है। इण में गोलाकार छत पर लाग्योड़ै रजत-पटमाथै सिनेमा फिल्म द्वारा ग्रहां री जागां, आकार अर उणां री गति पर प्रकाश नाख्यो जावै है। इणी ग्रिफिथ पार्क में झूलै माथै अेक अमरीकन महिला रै आपरै टाबर नै झुलावण रो दृश्य मन नै सहसा अपणै कानी आकर्षित कर लियो। ओ दृश्य घणो चोखो लाग्यो। साथै कैमरो हुयां सूं उणरो फोटू भी खांच लियो।

(3)

नेवादा राज्य रो लास वेगस नगर छोटो अर स्वच्छ हुवण सूं काफी आकर्षक लाग्यो। नेवादा राज्य में हर कठै ही खुलै आम जूवो खेलीजै, हर जागां आप नै स्लोट मशीनां मिलसी जिकां नै देखनै आप पइसा नाखनै वेसी रुपिया पावण रो लोभ संवरण कोनी कर सको। मैं भी कीं पईसा इणां में नाख्या हा। अेक-दो वार दूणा-तिगणा दाम मिल भी गया। म्हारै मित्र श्री माथुर सौ डालर रै ऊंचै इनाम वास्तै केई मशीनां में उणसूं वेसी डालर नाखनै स्वाहा कर दिया। लास वेगस नगर सूं वस द्वारा बोल्डर सिटी नै जावै जठै सूं बोल्डर डैम नेड़ो रैवै। नेवदा राज्य में तलाक रा नियम वडा आसान है।

यूटा राज्य री साल्टलेक नगरी भी स्मरणीय रैसी। अठै नमक री बहोत वडी झील है। इण में न्हावण वास्तै घणा-सारा लोग आवै। झील रै पाणी में लूण री मात्रा 27% है। इण री आ खूबी है कै इण में कोई आदमी डूबै कोनी। इण वास्तै जिकै व्यक्ति नै तिरणो नीं आवै बो उठै बखूबी तिरणो सीख सकै है। डूबण रो तो कोई खतरो है ही कोनी। म्हे भी इण झील में काफी देर तांई तिरता रैया। साल्टलेक नगरी में हीमार्मन लोगां रो मिंदर है जिको घणो खूबसूरत वणियोड़ो है। मिंदर रै वणावण में चाळीस वरस लाग्या हा। इणरै कनै ही टेवरनकल है जिणरी छत गोळाकार वणी है। इण में आठ हजार लोग बैठ सकै है। ओ इण भांत वण्योड़ो है कै आंगणै में पिन रै गिरणै री आवाज भी दूर सूं दूर बैठ्योड़ै आदमी नै सुणीज जावै है। साल्टलेक यूटा राज्य री राजधानी है। जद म्हे बठै पूग्या तो यूटा राज्य रो शती-समारोह मनायीजतो हो। यूटा नै अमरीकन फेडरेशन में सामल हुयां सौ वरस बीत चूक्या हा। साल्टलेक नगरी कनै थोड़ी दूर माथै तांबै री खाणां है।

न्यूयार्क नै तो विश्व री राजधानी वणनै रो सौभाग्य मिल्योड़ो है। ओ बहोत ही घणो वस्योड़ो नगर है। ओ अमरीका रो सबसूं वडो नगर है। न्यूयार्क रो सबसूं मुख्य भाग मैनहैटन द्वीप है। ओ अमरीका रै आदिम निवासी लाल-भारतीयां (रेड इंडियन) सूं चौईस डालर में खरीद्यो गयो हो। ओ आथूण में हडसन, जिकै नै उत्तरी नदी (नार्थ रिवर) कैवै है अर अगूण में ईस्ट रिवर सूं घिरियोड़ो है। हडसन अशांत महासागर में जायनै मिलै।

न्यूयार्क री दर्शनीय जागां में स्वतंत्रता देवी री मूर्ति रो जिक्र कर्‌यो जा चुक्यो है। आ डेबलो द्वीप में स्थित है। आ 51 फुट लांबै अर 156 फुट ऊंचै प्लेटफार्म पर बण्योड़ी है। लिफ्ट में बैठनै बालकनी तांई पूगीजै। उण सूं ऊपर जावण वास्तै घेरैदार पगोथिया वण्योड़ा है जिका मूर्ति रै सिर तांई ले जावै। न्यूयार्क री दूजी देखण-जोग जागा ॲंपायर स्टेट इमारत संसार भर रो सब सूं ऊंचो भवन है। इण री ऊंचाई 1248 फुट है। इण में 102 तल्ला है। इण भवन में इती जाग्यां है कै 80,000 व्यक्ति इण में रैय सकै है। इणरै ऊपर पूगनै न्यूयार्क नगर रो विहंगम दृश्य घणो मनोरम लागै। नीचै सड़क माथै चालता आदमी वहोत ही छोटा बावनियां ज्यूं मालम पड़ै। न्यूयार्क री ब्राडवै सड़क घणी सोवणी लागै। न्यूयार्क री और दर्शनीय जागां में सेंट्रल पार्क, वाल स्ट्रीट, टाइम्स स्क्वायर, मेडिसन स्क्वायर, गार्डन हेडन, प्लैनैटोरियम आदि है। टाइम्स स्क्वायर री छवि रात नै देखतां ही वणै। अठै खबरां रा शीर्षक चक्कर खावती बिजळी द्वारा दिखायीजै। न्यूयार्क रो सबसूं मशहूर होटल वालडोर्फ ॲस्टोरिया है।

न्यूयार्क रै समुद्री तट माथै कोनी द्वीप नै देखनै बंबई री चौपाटी रो दृश्य कीं-कीं याद आ जावै। अठै लोग रेती माथै लेटनै धूप-स्नान करै। कोनी द्वीप में मनोरंजन रा तरह-तरह रा साधन मौजूद है। बठै पूगनै तबियत वेगी पाछो जावण री नीं करै। बठै पूगणै वास्तै सर्वोत्तम साधन जमीन रै मांय चालणै वाळी रेलगाड़ी है। ब्रुकलिन में आ घरां री छतां री ऊंचाई तांई चालै। न्यूयार्क रै प्रसिद्ध नियागरा-प्रपात री शोभा तो विश्वविख्यात है।

म्हारो घणो वखत ओहायो राज्य रै कोलंबस नगर में वीत्यो। ओ शहर ओहायो राज्य री राजधानी है। ओ सीयोटो अर ओलंटेजी सरितावां रै संगम माथै वस्योड़ो है।

मिसूरी राज्य रै सेंट लुई नगर री प्राणिशाला में राजस्थान रै सुपरिचित जिनावर—ऊंट नै देखनै घणी खुशी हुई। वीकानेर रै महाराजा रायसिंह री उण अवस्था रो स्मरण हुयो जद उणां परदेस में फोग नै देख'र ओ दूहो कैयो हो—

तूं सैं देसी रूंखड़ो, म्हे परदेसी लोग
म्हांनै अकबर तेड़िया, तूं कत आयो फोग ?

मनै अमरीका में यलोस्टोन नेशनल पार्क, पोर्टलैंड नगर, मिसिसिपी नदी, वोल्डर वांध, ओहायो राजकीय विश्वविद्यालय रो परिसर, वाशिंगटन री ट्राम-गाडचां, न्यूयार्क री तेज भूगर्भ-रेल अर नियागरा प्रपात खूब आछा लाग्या।

(4)

अमरीका रो ग्राम्य-जीवण भी देख्यो। ओ घणो दाय आयो। गांवां में भी बै ही सुविधावां मिलै जिकी नगरां में प्राप्य है। भीड़-भड़क्को बठै कम है। आळस रो तो बठै नामनिशाण को देख्यो नी। म्हारै अेक किसान-मित्र अेडगर बेग मनै उणरै अठै आयनै कीं दिन वितावण रो नूंतो दियो। मैं इण नूंतै नै घणी खुशी सूं स्वीकार करचो। आपरै अेक भारतीय मित्र शांतिलाल जैन रै सागै हूं उणरै अठै कोलवंस-ग्रोव गयो। उणां अर उणां री धर्मपत्नी श्रीमती (अबै स्व.) अेस्थर वेग बडै प्रेम सूं स्वागत करचो अर भोजन करायो। म्हे दोनूं उणां रै अतिथिघर में ठहराया गया हा। सियाळै रा दिन हा। जद म्हे सोवण वासतै उण कमरै में पूग्या तो देख्यो कै उणनै गरम करणै रो बठै कोई साधन को होनी। घणो अचूंभो हुयो। अमरीका में विना गरम कियां किणी जागां में ठंड रै दिनां में सोवणो मौत नै बुलावण सूं कम कोनी हुवै। मैं म्हारै दोस्त जैन सूं हंसनै कैयो—शायद अमरीका में पावणां नै ठंडी जाग्यां सोवण खातर देवण री रीत है, जिकै सूं बो फेर पावणो वणनै आवण रो दुस्साहस नीं करै। म्हे दोनूं जणा उण कमरै में सोया अर सुखद अचरज री वात तो आ है कै म्हांनै ठंड बिलकुल नीं लागी। कमरो गरमी अर सरदी सूं चोखी तरै सुरक्षित वण्योड़ो हो।

अमरीकन लोगां रै आतिथ्य नै देखनै मनै दांता नीचै आंगळी दबावणी पड़ती ही। आपां रो देश भारत इण दिशा में सब सूं आगै मानीजै पण मैं देख्यो कै आपां नै इण तरफ भी अमरीका सूं घणो सीखणो है। वेग-दंपति अर उणरा दो वच्चां -- जोन अर विल रो कुटुंब रै व्यक्ति सरीखो म्हारै प्रति आचरण मनै सदा याद रैसी।

अमरीकन लोगां रो निष्कपट व्यवहार अर मात्र दिखाऊ शिष्टाचार रो अभाव उणां सूं घुलणै-मिलणै में सहायक हुवै। उणां सूं वातां करणै वास्तै किणी दूजै व्यक्ति द्वारा परिचय दिरीजणै री जरूरत कोनी हुवै। उणां री स्पष्टवादिता मनै आछी लागी। मीठी वातां कैयनै टाळनै री प्रवृत्ति उणां में मैं को देखी नी। म्हारो केई अमरीकन परिवारां

साथै घनिष्ठ संबंध रैयो है। श्रीमती कोरा राइन हार्ट रै अठै हूं किरायो देयनै अतिथि रूप में लगभग दो वरस तांई रैयो। उणां मनै सदा ही बेटै ज्यूं मान्यो। म्हारो परिचय बै सदा दूजां नै म्हारो भारतीय बेटो कैयनै देवती ही। हूं सदा उणां नै आपरै कागदां में अमरीकन माजी सूं संबोधन करतो रैयो हो। उणां थोड़ो कीं बीमार पड़्यां जिण तरै सेवाशुश्रूषा करणै में तत्परता दिखायी बा मैं कदैई नीं भूल सकूं। शिकागो में डालर शेष हुय जावणै पर टेलीफोन द्वारा खबर करतां ही तुरंत तार सूं आवश्यक रकम भेजनै जिण विश्वास अर स्नेह रो उणां परिचय दियो बो मनै सदा याद रैसी। त्यूहारां रै मौकां माथै भेंट वगैरा रो आदान-प्रदान इण अमरीकन परिवारां अर म्हारै बीच हुवतो रैवतो। कप, गोर्डन, राइन-हार्ट, जेकब्सन, मैकोर्मिक अर बैग परिवार रा व्यक्ति मनै सदा ही आपरै कुटंब रो आदमी मानता हा।

मन केई सभा-संस्थावां में विचार-विमर्श रो अवसर भी मिल्यो। भारतीय समाज, धर्म अेवं राजनीति सम्बन्धी विषयां माथै अमरीकन लोगां री घणी रुचि है। अवश्य ही बै इणां बाबत कम जाणै पर और वेसी जाणनै खातर काफी उत्सुक मालूम पड़ै। मनै अेक संस्था में हिंदू धर्म पर भाषण देवण रो मौको मिल्यो। भाषण रै पछै अेक महिला-श्रोता सूं आ वात सुणनै मनै घणो अचूंभो हुयो कै बै उण वखत तांई आ समझ बैठी ही कै हिंदू धर्म ईश्वर नै को मानैनी— किमाश्चर्यमतः परम्।

अमरीकन टाबर माईतां माथै घणा निर्भर नीं रैवै। धन कमावणो भी बै छोटी ऊमर सूं ही सरू कर देवै। उणांरी आ वात मनै आछी लागी।

जठै इतरा आछा अनुभव मनै हुया बठै कीं कड़वा अनुभवां रो भी मनै सामनो करणो पड़्यो। केई लोग धर्म रै मामलै में काफी अनुदार मालूम हुया। उणां रो विश्वास, ओ मालूम पड़्यो, है कै निर्वाण रा अधिकारी मात्र क्राइस्ट रा अनुयायी ही हुय सकै है। इणरो विरोध करणै रै कारण मनै अेकर म्हारै रैवण रो कमरो खाली कर देवणो पड़्यो। वाशिंगटन में बस में बैठनै स्टेशन पाछी आवतां वखत अेक अमरीकन वृद्धा नै ओ जाणनै दुःख हुयो कै हूं ईसाई नीं हूं अर इण कारण मोक्ष रो अधिकार मनै कोनी। शिकागो में वटुवै रो अर लास वेगस में घड़ी रो खो जावणो अेक-दो इसी दुःखद घटनावां है पण इणरी संख्या नगण्य है।

चरित्र रै लिहाज सूं घणा-सा लोग अमरीका रै लोगां नै निम्न कोटि रा मानै पण हूं इण सूं सहमत कोनी। उणां चरित्र रो जिको मापदंड वणा राख्यो है, उण सूं बै शायद ही च्युत हुवता हुसी। हां, अपवाद री वात न्यारी है।

जळवायु री दृष्टि सूं अमरीका रो कैलिफोर्निया राज्य आछो है। बठै सूर्य भगवान रा दरसण लगभग रोजीनै ही हुवता रैवै। रहण-सहण रै लिहाज सूं मध्य-पश्चिम रा राज्य सस्ता पड़ै। इणां रो जळवायु काफी ठण्डो रैवै। सीयाळै में तापमान–20^0 फैरेनहाइट तांई केई जागां पूग जावै है।

अमरीका नै छोडती वखत आनन्द अर दुःख दोनूं ही हुया। खुशी स्वदेश पाछो आवणरी अर दुःख अमरीकन धरती अर उण रै लोगां नै छोडणै रो। 16 जुलाई, 1948 रै दिनूगै क्वीन अेलिजाबेथ जहाज न्यूयार्क नगर सूं साउथहैंपटन री कानी प्रयाण करचो। सजळ नेत्रां सूं अमरीकन भोम सूं विदाई ली। 21 जुलाई नै लंदन पूग्यो अर बठै करीब अेक महीनो ठहरनै वायुयान सूं 28 अगस्त नै भारत री धरती पर पग धरचो। जद तांई भारत स्वाधीन हुय चुक्यो हो।

□

संत-सुभाव

उदयवीर शर्मा

संतां री जग-जातरा, सुगणी सदा सुरंग
मिनखपणो जागै खरो, वाजै इमरत-चंग 1

संतां री जग-जातरा, मेटै सकल विकार
जागै सत री साधना, समरस इमरत-धार 2

संतां री कीरत-कथा, इमरत रूप अपार
कथै-सुणै जग चाव सूं, थरपै जीवण-सार 3

करड़ी जीवण-साधना, जग-जंजाळ अनंत
मुळक मगन हुय जो करै, सो ज्ञानी जन संत 4

सत, रज, तम तीनूं मिला, करता रचियो जाळ
ज्यूं सुळझायो उलझियो, संतां लियो संभाळ 5

माया में भटकै मिनख, भूलर कुळ री रीत
धरम-करम सब छोडिया, गावै अवळा गीत 6

संसारी माया रम्या, जीवतड़ा बेजान
रस वरसावै रामजी, पीवै संत सुजान 7

गुरु दरसायो जगत-पथ, समझायी जग-रीत
सौनै रो सूरज उग्यो, पायो ज्ञान पुनीत 8

□

—राजस्थान साहित्य समिति
विसाऊ (राजस्थान)

दूहा-इक्कीसी

नागरमल सहल

ओळखाण कवि री हुवै,
जद आपो नीं याद
विन डूब्यां चितराम में,
नीं कविता रो स्वाद 1

भजण जीव टाळो करै,
करतां आज-र काल
कदै न निवड़ै काम अै,
समझ काळ री चाल 2

महाजन रो मतळब अवै,
धनपति जाण कुबेर
पइसां री महिमा घणी,
कर दी चोट अबेर 3

ध्यान रात-दिन जगत रो,
पूजा करै छिनेक
ईश्वर नीं भोळो इतो,
राखो तनिक विवेक 4

मूळ धरम रो अेक है,
डाळी-पात अनेक
विना मूळ संभाळ रै,
हरी डाळ नहं अेक 5

आज सियाळो है सही,
होसी काल वसंत
मौसम रैवै वदळतो,
दुख क्यूं फेर निरंत ? 6

मनमोहक सुख भोग रो,
माया खींचणहार
डोलर - हींडा हींडतां,
खावै सिर पर मार 7

दरपण साफ हुया विना
नीं चिलकै प्रतिबिंब
विन आतम निरमळ हुयां,
धुंधळो दीखै बिंब 8

अणविवेक, जोबन, सता
करै नरां नै अंध
अंकुश विना विवेक रै,
फैल जाय दुरगंध 9

देस-भगत रो भेस धर,
फैलावै जंजाळ
स्वारथ सूं वढ देस नीं,
करचां जाय पंपाळ 10

कोई धरम वुरो नहीं,
अड़भिड़िया संप्रदाय
नाम धरम पण स्वारथी,
उळटो-सुळटो खाय 11

आडंबर, छापा-तिलक,
है या मन री हूंस
जप सूं हुवै नचीत मन,
जदै मिटै काळूस 12

रे मन! टाळचां हरिभजन
औसर जासी चूक
चाल रुकै नीं काळ री,
मत उठबा दै हूक 13

बुरा मिनख मिल बैठकर,
तिकड़म करै अनेक
गळो दबोचै न्याय रो,
उळटा पासा फेंक 14

धन री होवै तीन गत,
दान, भोग अर नाम
देय नहीं, भोगै नहीं,
उणरी कदै न आस 15

प्रेमी हार न मानवै,
जस बूवना जलाल
टेढो-मेढो प्रेम-पथ,
डरा सकै नीं काळ 16

अपरिग्रह उपदेश पण,
है प्रभाव विपरीत
जाणै सै भूंडो-भलो,
चालै उळटी रीत 17

वकील मानो कतरणी,
करै न अपणी काट
विच में आवणिया कटै,
पइसां री है चाट 18

धन री गरमी जावतां,
मिनख घणो वेहाल
छिन में क्यूं-रो-क्यूं वणै,
दीखै दूजी चाल 19

तीरथ, तप, सत, यज्ञ, जप,
है सगळा वेकाम
जे पवित्र मन सौ टका,
होवै धन्य सुनाम 20

धन हाथां रो मैल है,
धन अखूट संतोष
दुनिया में संतोष विन,
दुरगत लूटाखोस 21

□

— वासंती, हाइकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-342 001

पदमै चारण री वात : अेक विवेचन

मनोहर शर्मा

राजस्थान री केई वातां (कहाणियां) आकार में घणी छोटी है, पण इण छोटी वातां में अनेक घणी रोचक नै महत्त्व री है। पदमै चारण री वात इणी भांतरी है। उणरो मूळ-पाठ इण प्रकार रो है—

गुजरात मांहे सिधराज जेसंघदे राज्य करै। मारवाड़ मांहे पदमो चारण रहै। सु मारवाड़ मांहे मेह न हुवो। ताहरां पदमै विचारीयो, कबीलै क्यूं करि टंबै ? ताहरां दीठो सिधराजा आगि जाईजै। ताहरां वहिल जोगडी, सखरा विछावण करि वहिल बैसिनै पदमो चारण गुजरात नूं हालियो।

नेउरो गांव छै। नडै रो तळाव छै। सु झोंटीगा आगा वसण न पावै। तठै पदमो चारण ओथ जाइ नीसरियो। ताहरां पदमो यंत्रचारी करण लागो। सु भूत वैठो हुतो, आवतो दीठो। ताहरां जाणियो — ईयै नूं मारीस, ईयै मारिग क्यूं आयो ? आज लग मारिग ईयै कोई वहतो नहीं, म्हांहूं वीहतो। अर ओ मनुष्य कठा सूं आयो ? ज्यूं नेड़ो आयो, सु आलाप सुणि अर राजी हुवो। बैठो राग सुणण लागो। मारण री वात वीसरि गई।

वहिल आधी हाली, ज्यूं वांसै हूवो चालियो। यंत्र हेठो मेल्हियो, ताहरां भूत मनुष्य रूप करि आइ राम-राम कीयो। पूछियो—'तूं कुण छै ?' कह्यो—'जी, हूं चारण छूं।' 'यंत्र तूं हीज वजावतो ?' तो कह्यो—'अेक वार यंत्र वजावो, आलापचारी करो।' ताहरां चारण बोलियो—'आवो, ऊंचा बैसो।' ताहरां भूत वहिल बैठो।

चारण यंत्र पकड़िनै आलापचारी करण लागो। ताहरां भूत बहुत राजी हुवो। ताहरां भूत बोलियो—'तूं मोनूं ओळखै छै ?' कह्यो—'जी, जाणूं छूं। साहिबजादो छै।' कहियो— हूं भूत छूं।' ताहरां पदमो बीहण लागो। भूत कह्यो— तूं बीह नां। हूं तोनूं निहाल करीस। हालो, म्हे गुजरात आविस्यां।

ताहरां भूत पदमै रै साथै हालियो छै। गुजरात अणहिलपुर पाटण जाइ पहुंचा छै। ताहरां पदमो बोलियो— हूं तो गांव मांहे डेरो करीस। भूत बोलियो— हूं वाग में रहीस। तूं मो कन्है दोपहरि आयो करै। यंत्र वजाइनै पछै जीमै।

हिवै पदमो राजा रो मुजरो करि भूत कन्है आवै, यंत्र वजावै। पाछलै पोहर डेरै आवै। हिवै भूत लागै लोकां नूं। ताहरां पदमो आवै, यंत्र वजावै। मांगै जितरो ले,

ताहरां भूत उतरै। वरस अेक रह्या। द्रव्य भेळो कीयो। हिवं घर यादि आया। राजा सूं विदा करि चारण भूत नूं कह्यो— हालो। ताहरां हालिया छै।

आवतां-आवतां सागी नडै रै तळाव आया। ताहरां भूत पदमै राम-राम किया। भूत वहिल सूं उतरि नडै बैठो। पदमो आघो हालियो। ताहरां भूत दूहा कहै—

दिहाड़ा रो दिलार, पदमै सूं पाटण गया।
बीजा बीजी वार, निगमिस्यां बैठा नडै॥ 1॥
ओ इस नडो निवाण, ओ इस कौडो नेउरो।
ओ मो आही ठाण, ओ बोळावो सजणां॥2॥

वात इती सी ही है। आधुनिक सरल राजस्थानी में इणरो सार इण भांत है—

गुजरात में जद सिद्धराज राज करतो हो उण वखत मारवाड़ में पदमो नांव रो अेक चारण रैवतो हो। अेकर मारवाड़ में विरखा नीं हुयी जद पदमै सिद्धराज रै कनै जावण रो निश्चय करयो। उण आपरी वहली जोती अर गुजरात कानी टुरग्यो। मार्ग में नेउरा नांव रो गांव आयो। उणरै कनै ही अेक तळाव हो जिणमें भूतां रा डेरा हा। उणांरै डर सूं बठै कोई कोनी जाया करतो, पण पदमो आपरो यंत्र वजावतो आणंदपूर्वक जा रैयो हो।

भूत सोच्यो— ओ कुण है जिको इण पासी सूं आ रैयो है? इण नै अबार मार नाखूं। पण जद भूत पदमै रै कनै पूग्यो जणै बो उण रै संगीत माथै मुग्ध हुयग्यो अर उण नै मारणै री वात भूलग्यो। ज्यूं-ज्यूं वहली आगै चालती त्यूं-त्यूं भूत उण रै लारै लाग्यो चालतो रैयो। जद पदमै यंत्र नीचै राख्यो तो भूत उण रै सामनै मिनख रूप में प्रकट हुयनै बोल्यो— थांरो यंत्र वजावो अर गावो। जणै चारण उण नै भी आपरी वहली माथै बैठा लियो अर संगीत सरू करयो। इण सूं भूत खूब राजी हुयो।

जद भूत आपरो परिचय दियो तो चारण डरण लागग्यो। भूत उणनै समझायो कै तूं डर मती। हूं तनै निहाल कर देसूं। पदमै रै सागै भूत ई गुजरात आयग्यो। बै अणहिलपुर आ पूग्या। बठै पदमै शहर में डेरो करयो जद कै भूत नगर सूं बारै अेक वाग में ठैरग्यो। भूत पदमै नै कैयो कै तूं रोजीनै दोपारै रा म्हारै कनै आ जाया कर अर गाणो सुणाया कर। पछै खाणो खाया कर। पदमै उणरी वात मान ली।

भूत नगर रै लोगां रै सिर चढतो अर पदमो आयनै यंत्र वजावतो जणै बो उतर जावतो। इण वासतै पदमो मूंढै-मांग्यो धन लोगां कनै सूं ले लेवतो। इण भांत चारण कनै मोकळो धन भेळो हुयग्यो जणै उणनै घर याद आयो। लगै-टगै अेक वरस पाटण में रैयनै बो भूत रै सागै पाछो आयग्यो।

मारग में भूत रो निवास-स्थान आयो जणै बो बहली सूं नीचै उतरनै बठै ठैरग्यो अर पदमो आगै चाल पड़यो। भूत पदमै रै संगीत नै याद करतो रैयो।

इण वात में मात्र दो पात्र है। उणां में अेक मानव अर दूजो अति-मानव अर्थात् भूत। भूत में अलौकिक शक्ति है पण फेर भी उण में मानवीयता जाग उठी। बो संगीत-प्रेमी है

अर कळा पर मुग्ध हुयनै आपरी क्रूरता नै भूल जावै है। वो आप री अलौकिक शक्ति सूं कलाकार नै निहाल कर देवै है। इण भांत उण में मानव अर अति-मानव दोनां रूपां रो अेकीकरण प्रकट हुवै।

असल में इण वात में संगीत-कला री महिमा प्रकट करी गयी है। इण विषय में 'सयणी चारणी री वात', 'मृग तमाइची री वात', 'राव तीडै री वात' जिसी वातां रा नांव लिया जा सकै है। इण सूं लागै कै इण प्रदेश में संगीत रै प्रति जनता री विशेष अभिरुचि रैयी है। लोक-कथावां में वीणा वजावणआळी वहू री कहाणी भी उल्लेखकरण-जोग है। राजस्थान ऊपर सूं सूको अर फीको-सो लागै पण भीतर सूं ओ वडो सरस है। अठै संगीत संबंधी अनेक ग्रंथ लिख्या गया है। राग-रागण्यां सूं संवद्ध चित्रां री तो गिणती ही नीं है। इण सूं राजस्थान रो कळा-प्रेम सहज ई स्पष्ट हुय जावै है।

उपर्युक्त वात रै साथै ही आपां रो ध्यान पदमसी नांव रै राजपूत री मौखिक कहाणी माथै चल्यो जावै है। कहाणी रो सार इण भांत है—

किणी गांव में पदमसी नांव रो अेक राजपूत रैया करतो हो। वो खेती करनै आपरो गुजर चलावतो हो। अेकर खेत में फसल आछी खड़ी ही, इण वासतै रुखाळी खातर पदमसी रात नै बठै ही सोवणो सरू कर दियो। संजोग इसो हुयो कै अेक भूत अेक रात में नारी रूप धारण करनै उण रै साथै ई आयनै सोयग्यो। पदमसी री आंख खुली जद उण देख्यो कै उण युवती रै रूप-सौंदर्य में उतार-चढ़ाव हुय रैयो है। इण सूं वो समझग्यो कै आ सगळी प्रेत–लीला है। फेर तो उण प्रेत नै ललकारचो। अवै प्रेत आपरै असली रुप में प्रगट हुयग्यो।

इणरै पछै प्रेत अर राजपूत में युद्ध छिड़ग्यो। इण में कदैई राजपूत नीचो पड़तो तो कदैई भूत। छेकड़ वीर राजपूत भूत नै छका दियो अर वो भूत री छाती माथै जा बैठचो। अवै भूत घबरायो अर दीनता सूं गिड़गिड़ावण लागग्यो। पदमसी उण नै इण शर्त माथै छोडचो कै वो जलमभर उण री सेवा-चाकरी करतो रैसी। भूत आ शर्त मंजूर कर ली अर राजपूत रो चाकर वणनै उण रै सागै ही रैवण लागग्यो।

पदमसी रै खेत अर घर रो काम मानव रूप धारण करनै भूत ई करतो। रात हुवो चावै दिन, जद कदैई राजपूत रो जिसो हुकम हुवतो भूत तत्काळ उण रो पालण करतो। कीं वखत वीत्यो अर अेक साल उण इलाकै में मेह नीं हुयो। काळ री हालत में पदमसी परदेस जावण रो विचार करचो तो भूत ई सेवक रै रूप में उण रै साथै चाल पड़चो।

बै दोनूं पाटण पूग्या। अवै भूत रो तो ओ धंधो हो कै वो धनवान लोगां रै सिर माथै चढ जावतो अर पदमसी खूब-सारो धन लेयर उण व्यक्ति रो इलाज करतो। इण भांत अेक वरस पाटण में रैयनै पदमसी घणो ई धन भेळो कर लियो अर पछै बै आपरै गांव पाछा आयग्या। बठै आयनै भी जितै तांई पदमसी जीवतो रैयो, वो भूत सदा ई उण री चाकरी में लाग्यो रैयो। छेकड़ जद पदमसी रो निधन हुयो जद भूत उणरै घर नै छोडर आप रै थान-मुकाम गयो।

स्पष्ट ई आ कहाणी अर ऊपर आळी वात दोनां में अेक ही चीज रा दो रूप है। राजस्थानी वातां में वडी संख्या राजपूत-जीवण सूं संबंध राखै, पण घणकरीक वातां में चारण भी उणां रै साथै ही चित्रित करीज्या है। केई वातां स्वतंत्र रूप सूं चारण-जीवण रै विषय री ई है। 'जोगराज चारण री वात' अेक इसी ई वात है।

ऊपर आळी वात रो प्रधान पात्र पदमो चारण है, जिको खेती सूं आप रो गुजारो करै। विशेषता आ है कै वात रो भूत संगीत पर मुग्ध हुयनै चारण नै आप री चतुराई सूं निहाल कर देवै है तो कहाणीआळो भूत लड़ाई में हारनै राजपूत री जिंदगी-भर चाकरी करै। वो आप रै प्रण रो पक्को अर स्वामि-भक्त है। इसी स्थिति में वो भूत ई प्रतीत को हुवै नी। दूजी केई वातां भी इसी है कै जिणां में राजपूत सूं भूत पराजित हुवै है। मांडणसी, सिखरो आदि राजपूतां सूं संबंधित वातां में इण भांत ही हुयो है। इण सूं प्रगट हुवै कै जनता में भूत-प्रेतां रै अस्तित्व में विश्वास रैयो है तो महावीर राजपूतां री असाधारण शक्ति में भी पूरी श्रद्धा रैयी है।

इण कथा रो उत्तर भाग दोनूं जाग्यां अेक-जिसो है, पण उण रै पूर्व-भाग में आ समानता कोनी। इण भिन्नता रो कारण प्रधान पात्र रो जाति-भेद है। राजपूत कनै आप री भुजावां रो पराक्रम है, चारण रै कनै उण री कळा री शक्ति। ध्यान राखणो चाहीजै कै इण अंतर रै कारण ही कथानक रै प्रारम्भ में घटना तथा वातावरण वदळग्यो है। इसी स्थिति में इण विषय में निश्चयपूर्वक कीं नीं कैयो जा सकै कै इण दोनां में मूळ-कथा कुण-सी है अर उण रो रूपांतर कुण-सो है। कथा-रचना री आ विशेषता घणी महत्त्वपूर्ण है।

□

—19, कैलास निकुंज, रानी बाजार
बीकानेर–334 001

फूफी रासो

बद्रीदान गाडण

राजस्थानी साहित्य री प्राचीन काव्य-परम्परा में किणी घटना विशेष अथवा व्यक्ति विशेष रै संबंध में वर्णन करण वास्तै 'रासो' अथवा 'रासा' शब्द रो प्रयोग करीजतो रैयो हो, जियां—पृथ्वीराज रासो, वीसळदेव रासो, खुमाण रासो, कायमखां रासो, इत्यादि अत्यंत उत्कृष्ट कोटि रा काव्यग्रंथ 'रासो' नांव सूं लिखिया गया है बठै ही लोकानुरंजन री सरल अर लघु काव्य-रचनावां भी 'रासो' नांव सूं समय-समय पर कवियां करी है, जिणां में 'फूफी रासो', वाण्यां रासो' आदि केई रचनावां घणी लोकप्रिय, बोधगम्य अर रोचक हुवण सूं लोगां रै कंठाग्र रैयी है। प्रस्तुत 'फूफी रासो' इणी कोटि री अेक रचना है। आ रचना लेखक आपरै बचपण सूं आज तांई केई व्यक्तियां सूं सुणी है, किन्तु संपूर्ण रूप में नीं। हाल ही में इणरी अेक हस्तलिखित प्रति श्री भोजराजसिंह रै सौजन्य सूं प्राप्त हुयी है जिण में प्रारंभिक 15 दूहा अर मूळ 'फूफी रासो' रा सैंतीस छंद है। हुय सकै है कै आ भी अपूर्ण हुवै। लोकमुख सूं सुण्योड़ा दूजा छव छंद इण साथै और भी सामिल कर दिया गया है।

प्रस्तुत 'फूफी रासो' रा रचयिता श्री मुरारिदास किसनावत बारठ हा। मिंडपी सांभर सूं मात्र तीन कोस उत्तर-आथूण री कानी अवस्थित है। श्री मुरारिदास रै जनम तथा निधन रै समय रो कीं व्यौरो को मिलै नी।

रचना रो विषय सांभर रो युद्ध (जिको सन् 1708 ईस्वी में हुयो हो) है। इण युद्ध में मेवात रै फौजदार सैयद हुसैन खां, आंबेर रै फौजदार गैरतखां अर सैयद इज्जत खां भाग लियो। रविवार दिनांक 3 अक्टूबर, 1708 नै भयानक युद्ध हुयो जिण में राजपूत परास्त हुयनै भागग्या अर सैयदां राजपूतां री सगळी संपत्ति माथै अधिकार कर लियो। जिण वखत शाही सेना विजयोल्लास में मगन ही, सैयद हुसैन खां बारहा री दृष्टि नरूका संग्रामसिंह नांव रै राजपूत सिरदार माथै पड़ी जिको आपरै दो हजार सैनिकां रै साथै भागणै री त्यारी कर रैयो हो। हुसैन खां तत्काळ थोड़ीसी सेना रै साथै उणरी तरफ वध्यो। संग्रामसिंह अेक टीलै पर हो। जद उण सैयदां नै आपरी तरफ आवतां देख्यो तो आपरी स्थिति रो फायदो उठायनै अेकै-साथै दोय सौ बंदूकां सूं गोळचां वरसावणी सरू कर दी। सैयदां नै म्यान सूं तरवार निकाळण रो अवसर भी कोनी मिलियो अर इण पहली ही वाढ में बो आपरै दो भाइयां तथा पचास सैनिकां सागै मारचो गयो। उणरी मौत रै साथै ही शाही सैनिकां में भगदड़ मचगी। कछवाहा राजा जयसिंह अर राठौड़ अजीतसिंह भी

पाछा आयग्या अर सांभर माथै कब्जो कर लियो। प्रायः दो हजार मुगल सैनिक खेत रैया। सांभर रो फौजदार अली अहमद तथा सांभर रो काजी खालिकमुहम्मद भी बंदी बणा लिया गया।

उपर्युक्त ओळचां सूं सांभर युद्ध रो ऐतिहासिक पक्ष स्पष्ट हुय जावै है (महाराजा अजीतसिंह अेवं उनका युग, लेखक – मीरा मित्र, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण, 1973 ई., पृष्ठ 158)।

'फूफी रासो' रै अनुसार इण युद्ध में जयपुर रा कछवाहां तथा जोधपुर रै राठौड़ां संमिलित रूप सूं भाग लियो हो अर अंततोगत्वा मुगलां नै (जिणां में सैयद, शेख तथा मीरखां सामल हा) हराय नै सांभर सामलात रो प्रबंध स्थापित करचो हो; किंतु युद्ध रै पूर्व भाग में कछवाहां री फौज बुरी तरियां हारी अर भाग खड़ी हुयी। कवि सरू रा पंद्रह दूहां में युद्ध री भूमिका तथा तैयारी बाबत वर्णन करचो है। उण रै मुताबिक जोधपुर अर जयपुर रै राजावां मिल'र युद्ध रचणै री वात कैयी है तथा जोधपुर नरेश सूं राठौड़ां रै क्रुद्ध हुवण री वात कैयी गयी है जिण सूं युद्ध में कुचामण, आउवा, रायपुर, रियां, बगड़ी, मीठड़ी तथा बूडसू ठाकुरां रै सिवाय कछवाहां री सेना ही मूळ रूप सूं भाग ले रैयी ही। युद्ध रो वर्णन अेक मुसलिम नारी रै मुख सूं कैवायो गयो है जिणनै कवि 'फूफी' नांव सूं संबोधित करी है।

'फूफी रासो' री मूळ रचना में कवि जिण छंद रो प्रयोग करचो है, उणनै 'सबदी' (अथवा शब्दी) लिखियो है। इणमें किण भांत भिन्न-भिन्न ठाकुर (राजावत, खंगारोत, शेखावत, नाथावत, गौड़ आदि) युद्ध में सामल हुया अर किण प्रकार भाग्या—इण रो घणो रोचक वर्णन हुयो है। कवि रै अनुसार युद्ध तीन चरणां में हुयो जिण रै अंतिम चरण में बूडसू ठाकुर री वीरता सूं युद्ध में राजपूतां री जीत हुवण रो संकेत है—

'तीन वार तुरक मिल सारा, करली सहा करतूती
भाग्या नहीं बूडसू ठाकर, राख लिवी रजपूती।'

कवि रै अनुसार आ घटना सोमवार सन् 1700 रै सावण री है, यथा 'सोमवार सत्रासै सावण वंधी राव कै राखी। ठाकुरदास मंडपी को बारठ देखी जिसड़ी दाखी।'

वास्तव में सांभर युद्ध सन् 1708 ई. तदनुसार विक्रमी संवत 1765 में हुयो हो।

इण आखरी 'सबदी' रै अनुसार तो मुरारिदास स्वयं प्रत्यक्षदर्शी हो, किन्तु रचना रै अंत में अेक दूहो इण भांत है :—

भूंडी वा अथवा भली, है बिधना कै हाथ
कवि नै तो कहणी पड़ै, सुणै जिसी सह बात

इण दूहै सूं आ ध्वनित हुवै कै कवि तो जिसी सुणी बा ही वात कैयी है। लेखक रै विचार सूं आ घटना 'फूफी' सूं सुणियोड़ी वात रै आधार पर कवि इण वास्तै लिखी है जिण सूं तत्कालीन राजपूत लोग नाराज नीं हुवै अर कवि रै लारै नीं पड़ जावै क्यूं कै उण

वखत सत्ता उणां रै हाथां में ही। कीं भी हुवै अेक वात स्पष्ट है कै कवि तथ्यां नै निडर हुयनै उजागर करचा है अर आपरै तीखै व्यंग द्वारा भगोड़ां रो वडो सजीव चित्रण प्रस्तुत करचो है जिको इण आम धारणा नै 'कै चारण कवि केवळ प्रशस्ति-गायक चाटुकार हुवै है' खंडित करै है।

जठै तांई युद्ध री तिथि रो प्रश्न है 'फूफी रासो' में वतळायो गयो समय ठीक नीं है अर नां ही सत्य है कै वूडसू रै ठाकुर री वीरता रै फळ-स्वरूप ही कछवाहां अर राठौड़ां री सेना नै विजय प्राप्त हुयी। इतिहास सूं तो विजय रो श्रेय नरूका संग्रामसिंह उणियारा नै मिलै है। अस्तु।

रचना में प्रयुक्त छंद 'सबदी' रै विषय में कोई मत व्यक्त करणो संभव कोनी क्यूं कै इसो छंद कठै ही पिंगळ या छंदशास्त्रां में वर्णित कोनी। हां, संत कवियां री रचनावां में 'सबद' जरूर मिलै, किंतु उणां सूं इण 'सबदी'री रचना सर्वथा न्यारी है। स्वर्गीय हिंगलाज-दान कविया कृत 'वाण्यां रासो' में प्रयुक्त छंद भी कीं इणी भांत सूं नूंवो ही प्रयोग लागै।

इण प्रकार री रचनावां में जठै ध्वनि अर प्रवाह रो क्रम रैवै वठै शैली री विशेषता रो चमत्कार श्रोतावां नै आह्लादित करै। 'फूफी रासो' री जिकी चौतीस सबदियां इण हस्तलिखित प्रति में प्राप्य है उणां रै अतिरिक्त अेक और 'सबदी' जिकी इण रचना रै प्रारंभ री प्रतीत हुवै इण तरै सरू हुवै है :—

'फूफी कह सांभर की बातां। पगड़ी खोस लई घर जातां।।'

अठै फूफी रासो अविकळ रूप में दियो जा रैयो है।

फूफी रासो

(रचयिता– श्री मुरारदास बारहठ, ग्राम मंडपी)

दोहा

पत जैपर जोधाण पत, भेळां ह्वै दुहुं भूप
सांभर में कीन्ही सला, रचो राड़ को रूप 1

कूरभ भाखी कमध नै, अैसी करां उपाय
उभय राज राखां अठै, आखां चौड़ै आय 2

आप पती आमेर हैं, कही कमध कर जोड़
आफत मो वीती इसी, रीस गया राठौड़ 3

तिण जागां इक तुरकणी, आई करण उपाय
बैकाई दळ देखकै, जकै सुणाई जाय 4

जैपर दळ आयो जबर, धरो अबै मत धीर
ताण दिया तंबू वडा, तिण नळियासर तीर 5

सेख सय्यद काजी मुगल, सुण सारा समचार
मदत बुलाओ मीर खां, धीरज मन में धार 6

आठ दिवस आयो नहीं, बो मुगलन को मोड़
सह सांभर खाली करी, कछवाहा राठौड़ 7

हंसतै हिंदू नगर में, नोपत लगै घुरान
मैं जाकै महजीत में, कैसे पढ़ूं कुरान 8

पोढे हम नित पिलंग पै, ओढे साल दुसाल
दोय दिवस में कर दिये, बिसमिल्ला बेहाल 9

मसळै आंख्यां मुगल सब, आंसू पड़ै अपार
खुदा आज खोटी करी, बण बैठै बेकार 10

मन में सोची मीरखां, सुण सांभर की बात
काजी कागद बांचकै, कियो कूच परभात 11

लड़बा लागो मीरखां, भागो भूप अगूण
आय गया उण दिवस ही, बगरू और बिचूण 12

उणियारां आयो अबस, ल्यायो बीठळ लार
दरसायो चौड़े दगो, मुगल हटायो मार 13

मरै मुगल हिंदू हटै, फटै फौज दुहुं ओर
रटै खुदा रघुनाथ नै, कटै बगतरां कोर 14

कोप चढचो कूरम कटक, पटक मूंछ पर हाथ
ग्रीध मांस गहरो गटक, रटक उडै दिन रात 15

सबदी

फूफी कह सांभर की बातां, पगड़ी खोस लई घर जातां
इण राठोड़ां इण कछवाआं, कैसा जुलम किया है।
नळियासर की तीर ऊपरै, तंबू ताण दिया है 1

दीपक, डिगी, पचेवर, दूदू, बोराबाज बखाणूं
आया अै सारां सूं पहली, पूरी रीत पिछाणूं 2

जेतासुत जगमालसिंह का, तेता मूंछां ताणै
भाईपो भेळो कर लीनो, नामी भूप निराणै 3

मूंछ हाथ धर कहै मीरखां, हिंदू सब हट जाणा
तुरकां तेज घटैगो नांही, कर में रखां कबाणा 4

पूछचो जाय पाडळी ठाकर, विरथा वात बखाणै
क्या जाणै क्या होय मीरखां, तुरक मूंछ मत ताणै 5

रावण रामचन्द्र नै कहतो, करूं सिया महराणी
भालू, रींछ, भांग्या दसमाथा, लंका भई बिराणी 6

साली अर साखूण सिरोही, मीढा बिरगी मानो
सर में सेल बंदूकां राळी, धरचो विप्र को वानो 7

मांगी सीख ममाणै ठाकर, घबराया म्हे गाढा
मरवै ठाकर घणा मिजाजी, आसी वै कद आडा 8

छेड़ वात छर्‌र का ठाकर, चौड़े चुगली खावै
सांभर में सारा दुख पावां, मरवो मौज उडावै 9

रैळाणो गागरड़ू लड़बा, सांभर सरै सिधाया
चढतै दिन चाळीस जणां नै, मुगल दोय मचकाया 10

धूळैराव दगो कर आयो, बायो एक दुधारो
पैखानो पैली कर दीनो, बोल्यो नहीं बिचारो 11

दूणी राव देख तुरकां नै, भरचा रीस में भारी
आया घर अेडचां उचकाता, कोय न लागी कारी 12

चढता तुरंग चौकड़ी ठाकर, सूण हुया सह खोटा
वडा बाप को करचो कनागत, आय घरां नै ओठा 13

मुगलां चरख चढाई तोपां, हिंदू दळ अब हारचा
ईसरदो अचरोळ उसी दिन, काळख किलै पधारचा 14

चौमू अर सामोद सरीसा, जका रीत नहं जाणी
भेळा होय भाजगा सारा, नामी भड़ नाथाणी 15

सीकर खेतड़ी सागै भीळी वीसाऊ में आकर
खूड़ ठिकाणै बाटचां खावै पूरी पदवी पाकर 16

खाग लियां खूड़ को ठाकर, मानो मूंछ मरोड़ै
हीमत हार घरां नहिं जाऊं, कह दरसाई चौड़ै 17

मींडो और मारोठ गिणीजै, गोडारी रा राजा
लुकता छिपता लियो लूणवों, सातभायां का साजा 18

आकोदो उणियारो दोऊं, कर ली अेक कमेटी
तंबू बाळ दिया तुरकां का, सारी फौज समेटी 19

काचरोदा कूरम बड़वंका, दे डंका दळ मांही
तोप चोर लेग्या तुरकां की, पूरी सोभा पाई 20

भूल करी भादवै ठाकर, भिड़ियां पहली भग्गा
ढालां का तो करचा टोकरा, लूण काढबा लग्गा 21

बागडचास का यूं उठ बोल्या, म्हे झगड़ा का मांझी
भीड़ पड़चां दरगां में धसग्या, खाग खोस ली खांजी 22

कुरब लिया कुचामण ठाकर, जका जुद्ध में आया
तुरकां का तंबू में वड़ग्या, मूंडा यूं मुरझाया 23

नीमी और बेरी धणकोली, मोटी कूक मचाई
तेरा दिन तोसीणै ठाकर, रहग्या मरता लाई 24

लेडी और लाडणू देखो, भेळा दोन्यूं भाई
गींगोली सूं गया गांवनैं, सारी सरम गमाई 25

अेकट करी आउवै ठाकर, लूंठो लाछण लागो
माल गंवाय मीठड़ी ठाकर, भाकर सामूं भागो 26

रीयां और रायपुर ठाकर, बगड़ी जाय बिराज्या
जावा दिया जोधपुर मांहीं, भूम छोडकर भाज्या 27

भकरी और जावळो जंगी, निलज होय बै नीता
मेड़तियां घर मांही बैठचा, नारचा जेम नचीता 28

काजी कहै सुणो सब हिंदू, झटपट खाणा खाओ
मुगल आज मारेगा तुमकूं, अपणै घर उठ जाओ 29

मरबा खातर आय मरद सब, घोड़ां पाखर घाल्यो
फुड़कट करै बात क्यूं फीकी, दूदूपती दकाल्यो 30

डचोडी कोडी, मंढो भादवो, जोबनेर का सारा
बै तरवार कठै सूं वावै माता तणा पुजारा 31

हेक बार हरसोली ठाकर, लियो फौज को लेखो
भाग्या जाय भोजपर ठाकर, दूदू सामां देखो 32

कूहड़ धणी वडाळो कूरम, मरद धार मजबूती
तुरकां रा ताबूत तोड़िया, राख लई रजपूती
फूफी कहो सांभर की वातां,
घोड़ै खोस लिअे घर जातां 33

गबदे-सी खाडा में बड़ग्यो, सोहृदो लेगो सरणो
भिड़तां पैली भाज गयो, ओ काळवा़ड़ को करणो 34
भागा धीर डाबडी वाळा, वह सादा का पोता
भिड़तां फौज अणी की दोनूं गैला खाय गया गोता 35
तीन वार तुरक मिल सारा, कर ली सह करतूती
भाग्या नहीं बूडसू ठाकर, राख लई रजपूती 36
धूहड़सिंघ डूंगरीवा़ळो फौजां हृंदो लाडो
कूद पड़्चो नाथा को पोतो, भोभर को-सो गाडो 37
हाडी राणी यूं वतळायो, सुण देव़र हरिराम !
भिड़तर पैली भाजसी, अै थांरा म्हांरा जाम 38
बागरास का ठाकर बोल्या— म्हे झगड़ै का मांझी
घोड़ा लेय नळां में धसग्या, खड़ग खोस ली खांजी 39
गांवां-गांवां खूद घालतां, घोड़ा रखता ताजा
भिड़तां ही झट भाज गया अै, नीमेड़ा का राजा 40
कूला फिरै खुसामदचा, स्वा़रथ सबनै मीठो
खाटूवा़ळै खारडै, ओ देवो भाग्यो पूठो 41
सोमवार सतरासै साव़ण, बंधी राव़ कै राखी
मुरारदास मंडपी को बारठ, देखी जिसड़ी दाखी 42

दोहा

भूंडी वा़ अथवा भली, है बिधना कै हाथ
कवि़ नै तो कहणी पड़ै, सुणै जिसी सह वात 43

□

—पो. हरमाड़ा (जयपुर), राजस्थान

विघन-संतोषी

नृसिंह राजपुरोहित

— नींद आयगी कांई ?

— ··· ··· ऊं हूं ऽऽऽ !

— तो अपूठा कियां फिरग्या ? दो दिनां में ही धापग्या कांई ?

गिरधारी पसवाड़ो फोरनै धापू नै पाछी काठी बाथ में भरली ।

वो दियाळी माथै च्यार दिन वासतै गांव आयोड़ो । कनलै शहर में वो नौकरी करै । गवर जिसी रूपाळी धापू, जिणनै देखनै संगी-साथी गिरधारी सूं ईसको करै । गिरधारी केई वार उणां नै मजाक में कैया करै —

उर चवड़ी कड़ पातळी, झीणी पांसळियांह
कै तो हर तूठचां मिलै, (कै) हीमाळै गळियांह !

व्यांव हुयां नै पांच-सात वरस हुया । धापू रै हाल पेट मंडचो नीं । नौकरी में छुट्टी मिलै कै वो भागनै गांव आय जावै अर च्यार दिन रळी मनायनै पाछो वुवो जावै ।

वडो भाई जगमाल घर-गृहस्थी अर खेती-पाती संभाळै । गिरधारी तो कुंवरपदाई में वडै भाई रै पाण निचींतो रैवै अर मौज करै । घर में रामजी राजी, कोई देण दुवाळ नीं । पण अबकाळै गांव आयनै गिरधारी जंजाळ में फसग्यो । धापू रै नां जाणै कांई जची सो अेक रट पकड़ ली········· वस, आपणै तो जेठजी सूं न्यारो हुवणो······सौ वात री अेक वात ! ·········अबै भेळा तो अेक दिन ही नीं चालै । चालग्यो जिको ही घणो समझो ।

गिरधारी कीं पड़ूतर नीं दियो । वो धापू री आदत जाणै । वा जद कोई रट पकड़ लेवै तो वस वा आपरी ही गायां जासी । आगलै री कीं सुणै आथ नीं । थोड़ी ताळ में वा फेरूं वोली – तो कांई विचार कियो थां ?

— किण वात रो ?

— तो कांई इतरी ताळ मैं भैंस रै आगै भागवत ही वांची ? हे भगवान ! म्हारै वाप नै दूजो कोई ठायो नीं मिल्यो सो मन्नै लायनै इण नरकवाड़ै में पटक दी ।

गिरधारी री वाथ ढीली पड़गी । वो पाछो अपूठो फुरनै चुपचाप सूयग्यो । कमरै में स्यापो छायग्यो । रात आधी ढळगी ही । लारली कानी वाड़ै में तिवरियां तरणाट करै ही ।

थोड़ीक ताळ में उणनै महसूस हुयो कै धापू मांयनै ही मांयनै रोय रैयी है। उणरो अंदाज सही निकळियो। इतो गाजियां-खिवियां पछै छांटो-छिड़को हुवणो तो स्वाभाविक ही हो।

बो इण वात नै खूब जाणतो हो कै देराणी-जेठाणी रै आपसरी में कम वणै। पण अै वातां तो जग-चावी। माटी रा चूल्हा घर-घर में। इण में कोई नूवीं वात नीं। उण नै आ तो ठा ही कै जेठाणी थोड़ी बड़का-बोली है, पण कम देराणी भी कोनी। पूनम पूरी है तो ओछी अमावस ही नीं। पण मामलो इण हद तांई पूग जासी, ओ अंदाज उणनै नीं हो। भेळा पड़चा तो ठाम-ठीकर खड़बड़ै ही। देराणियां-जेठाणियां री खटपट परंपरा सूं बुवी आयी। कठै ही कमती तो कठै ही वेसी। पण घर-घर अै ही रांडी-रोणा। आ वात उणरै दिमाग में कदै ही नीं आयी कै इतरो वेगो वडै भाई सूं न्यारो हुवण बाबत सोचणो पड़ैला।

उण रो बाप टाबरपणै में ही गुजरग्यो हो जिण सूं घर में नैनग पड़गी ही। तिण उपरांत घर में अंगां ही खालीपो हो। मां बापड़ी दोनूं भाईयां नै पांखड़ां में घालनै घणै कळापां सूं मोटा करचा। जगमाल गिरधारी सूं दस-बारै साल वडो हो। जिण साल जगमाल रो व्यांव हुयो उण साल डोकरी चालती रैयी। उण वखत तांई घर में थाकेलो ही हो।

पण अबै घर अठोरियां में। जगमाल वडो मैणती। अेकल हळियो हुवता थकां ही पैदावारी में गांव में सै सूं आगै। अठीनै गिरधारी री कमाई घर में आवण लागी तो देखतां-देखतां घर में नवों-नंद रा वासा हुयग्या। लिछमी नै भूंडो सुहावै कोनी सो सै वातां रा ठाट हुयग्या। जमीन-जायदाद, घर-बार, ढोर-डांगर अर गहणो-गांठो, केई वात री कमी नीं रैयी। माया वधै तो मन ही वधै। इण कारण चढियां-उतरियां री ही पूरी चाकरी। मिनखां जिसी मनवार। भूखो आवै अर धापनै जावै। घी-दूध सूं चळू करावै। पछै क्यूं बूझो इण घर री वातां? दुनिया रो तो कायदो कै खावै मूंडो अर लाजै आंख। कैयो है— हाथ पोलो तो जगत गोलो। इण भांत ओ घर चोखळै-चावो हुयग्यो।

पण गांव में मिंदर हुवै उठै उखरड़ा भी तैयार लाधै। गांव में भला मिनख मिळै तो भूंडा जणां री भी कमी कोनी। किणी नै सुखी देखनै उणांरो पेट दूखण लाग जावै। उणांरी मनस्या आ ही रैवै कै म्हारै जिसा सगळा ही हुय जावै तो ठीक। कोई सोगरो सोरो खावै तो भला क्यूं? इसा मिनखां नै इण घर री संपत अर समृद्धि अंगां ही नीं सुहायी।

वातां रा फटकारा लागण लाग्या। मूंडै मीठा अर परपूठै खोटा इसा पेट-खोटा मिनखां री गांव में कोई कमी नीं ही। इसा दो-च्यार-अेक लखणा भेळा हुयां परनिंदा-पुराण सरू हुय जावतो— देखो वखत आयो...कीड़ियां रै ही पांख्यां आयगी। अबै राब कैवै मनै दांतां सूं चाबो। काल री जोगण अर गोडां सूधी जटा। बाप तो जियो जितै अन्न दांतै वैर रैयो अर अबै बेटा घोड़ै चढचा फिरै। थोड़ा धीमा खड़ा रैवो भायां। कठै ही आखड़-नै पड़ग्या तो मूंडै री बतीसी बारै आय जासी। लारला दिन याद राखो वीरां! इतरा फाट नै फळै मत जावो। माजी तो मरिया जितै ही फाटोड़ै फेटियै फिरचा अर अबै बेटा बारै जावै तो मांचै में ही कोनी मावै... देखो तो सही, दुनिया रो खिलको!

दूजा पुराणां रो तो अध्याय पूरा हुयां छेह आय जावै पण परनिंदा-पुराण रो कोई छेह नीं। अध्याय खतम हुयां क्षेपक सरू हुय जावै अर क्षेपक रो अंत आयां पाछो नूवों अध्याय प्रारम्भ हुय जावै। वाचकां रो कोई घाटो नीं, ज्यूं श्रोतावां री ही कोई कमी नीं। जरूरी काम सूं खोटी हुयनै श्रोता मारग वैंवता पग थामनै ही अेकाध श्लोक रो श्रवण-लाभ तो लेय ही लेवै।

इसा घर भंगावणिया मिनखां जायनै गिरधारी री सासू रा कान भरणा सरू करचा— भला मिनखां ! थे बेटी नै परणायनै सासरै भेजी है कै उण घर री दासी वणायनै सीख दीनी है ? ... जेठाणी तो बैठी हुकम चलावै अर वा बापड़ी रात दिन घाणी रो बळद वणी आठ पोहर काम में पीलीज्योड़ी रैवै। तिण उपरांत ही जेठाणी मूंडै में आवै ज्यूं बोलै अर वा तो बोलै सो बोलै ही उणरी छोरियां भी सागै री सागै बोलणै में कीं कसर को राखै नी। आ तो भला माईतां री जायी है जद इतरी गाळचां-राळचां सुणै। कोई दूसरी हुवती नीं तो कदै ही कूवो-वावड़ी कर लेवती। म्हे तो देखां जिसी कैवां। बाकी म्हांरै कांई लेणो-देणो। पण अन्याय हुवतो देखां तो चुप को रैयीजै नी।

गिरधारी री सासू रै घर-भंगावणियां अर विघन-संतोषियां री अै बातां हियै में पूरी ढूकगी। वा निसासा नाखनै बोली— थे साची कैवो सा ! पण इण रो इलाज कांई ?

—इलाज ? इलाज क्यूं कोनी ? भाई-भागिया परंपरा सूं जुदा हुवता आया। फेर थांरो जंवाई तो वांकड़ो कमाऊ है। घर रो हरको जगमालजी रै पाण को चालैनी। म्हांसूं कोई वात छानी कोयनी। गिरधारी सीधो अर असराफ आदमी है। आपरो भलो-भूंडो समझै कोनी ! वाकी कालै न्यारो हुय जावै, आपरी लुगाई नै सागै लेयनै नौकरी माथै जावै अर ठाठ सूं रैवै। म्हे तो देखां जिसी कैय दां। पछै मानो कै मत मानो, आगलै री मरजी। खांधियो खांध देवै, भेळो को बळै नी। कैयो है— अकल सरीरां ऊपजै, दीयां लागै डाम। छेवट तो आगलै री अकल ही काम आसी।

बेटी पीहर आयी तो गिरधारी री सासू उणनै पाटी पढावणी सरू करी। ऊपर सूं समझायनै कैयो— थारै जेठ रै दोनूं बेटियां परणावणजोग हुयगी। इण वरस नीं तो आगलै साल हाथ पीळा करणा ही पड़सी। अर अवै जिसो थारै घर रो नामूदो है उणरै मुजब खरचो ही करणो पड़सी। थे अणूता क्यूं खरचै में पजो गैलां ! म्हारी मानो तो अबकी दीयाळी माथै न्यारा हुय जावो। भाई-भागिया परंपरा सूं जुदा हुवता आया है। इणमें कोई अणजोगी वात कोनी।

मा री मीठी सीख बेटी रै ही बराबर हियै ढूकगी अर दीयाळी माथै गिरधारी घरां आयो तो उण गोधम मचा ही नाख्यो।

अेक रात तो गिरधारी गाढ राखी, पण दूजी रात ही सागण बा हीज रामायण, सागण वा हीज रट। छेवट उण धापू नै जुदा हुवण रो कारण पूछचो, जणां वा रोवती थकी बोली— कारण ? थे मनै कारण पूछो ? थांनै दीसै कोनी कांई ? मैं इण घर में वहू वणनै आयी हूं।

किणी रै दायजै में गोली वणनै नीं आयी। आज इतरा वरस हुया, हूं नौकरणी ज्यूं इण घर रो सगळो घरड़ियो करूं, तिण उपरांत ही सगळो घर म्हारै लारै पड़चो रैवै, मूंडै में आवै ज्यूं बोलै, वात-वात में बांझड़ी हुवण रा मोसा देवै। इत्ता दिन मैं गाढ राख ली। अबै म्हारै सूं सहन को करीजै नी। जे थे अबै ही न्यारा नीं हुया तो अबै थांरै घर में ऊंधो पाकसी। कान खोलनै सुण लीजो हां। हूं अबै गळै-सूधी धापगी हूं, सो किणी दिन कूवो-वावड़ी कर लेसूं।

गिरधारी आ वात सुणनै चुप रैयग्यो। अेक आखर ही नीं बोल्यो। धापू रो सुभाव, घर रो वातावरण अर मौकै री नाजुकता देखतां उणनै आ उक्ति याद आयगी —

रोजीना री राड़, आपस री आछी नहीं
वणै जठा लग वाड़, चटपट करणी चकरिया!

बो सोचण लाग्यो– अबै इण हालत में समझदारी इण में ही है कै भाई सूं न्यारो हुय जाऊं। घर री इण खटपट में कदै ही कीं हुयग्यो तो काळो मूंडो हुय जासी अर गवाडी री इज्जत धूड़ में मिल जासी।

तीसरै दिन बंटवाड़ै री वात चाली तो दोनूं भाईयां गांव में चिड़ी रै जायै नै ही ठा नीं पड़ण दियो। पण भींतां रै ही कान हुवै। कांई ठा, लोगां नै कियां सुराग लागगी। दोनूं भाई बंटवाड़ै रो फैसलो करणै बैठा तो बिना बुलायां अेक-अेक करनै लोग आवणा सरू हुयग्या। कोई चिलम भरणै रै मिस आयो तो कोई कागद वंचावण रै मिस। कोई नै गिरधारी सागै शहर सूं कीं जरूरी चीज-वस्त मंगावणी ही तो कोई नै जगमाल सागै कीं सलाह-सूत करणी ही। पण बाई बतीस लखणी तो वीरो छतीस लखणो। दोनूं भाई लोगां री मनस्या समझग्या अर सगळां नै विदा करचा। पछै आडो जड़नै बंटवाड़ै री चरचा जबान माथै लाया।

चौथै दिन गिरधारी धापू नै सागै लेयनै नौकरी माथै शहर वुवो गयो जणां लोगड़ां नै नेहचो हुयो। उण गांव में घर-घर अै समंचार पुगाय दिया कै जगमाल अर गिरधारी न्यारा हुयग्या है। जिण लोगां सुण्यो उणां ही अचूंभो करियो। पण नूवीं वात नव दिन, खेंचीताणी दस दिन। कुण किणरो ध्यान राखै। वात आयी-गयी हुयगी।

दूजै वरस जगमाल री दोनूं बेटचां रो व्यांव मंडचो। गिरधारी अेकलो च्यार दिन वास्तै आयनै वुवो गयो। इण रै पछै लगोलग च्यार दुकाळ पड़ग्या अर जगमाल री माली हालत कमजोर हुयगी। पण गिरधारी घर कानी मूंडो ही नीं करचो। जगमाल नै माठो तो लाग्यो पण उण भाई नै कोई समंचार नीं करचा।

कुदरत रा खेल घणा अजूबा हुवै। मिनख सोचै कीं अर हुवै कीं और ही। गिरधारी री लुगाई सोरी सुखी रैवण वास्तै आपाळा खाया पण उलटी दुखी हुयगी। कैयो है– नर चींती होवै नहीं, हर चींती तत्काळ। वात यूं वणी कै गिरधारी अेक फर्म में नौकरी करतो। उणरै काम-काज खातर उणनै दौरै पर जावणो पड़तो। साल-डोढ साल तो मजै सूं निकळग्या।

धणी-लुगाई शहरी जिंदगी अर आजादी रो आणंद खूब लूटचो। दिन यूं बीत्या जाणै पांख लगायनै उडग्या हुवै।

अेकर गिरधारी कंपनी रै काम सूं दौरै माथै गयो तो अेक दुर्घटना में उणरो पग टूटग्यो। बेहोशी री हालत में उणनै अस्पताळ लाया तो डाक्टर टांग काटणै रो फैसलो सुणायो। सुणतां ही गिरधारी री वहू चेताचूक हुयगी। उणनै आपरै च्यारूंमेर अंधारो निजर आवण लागग्यो। लोगां उणनैं पूछनै जगमाल नै समंचार भेज्या। जगमाल नै इण वात री ठा पड़ी तो उणरो हिवड़ो फाटण लाग्यो। धणी-लुगाई दोनूं जणा तुरंत अस्पताळ पूग्या। भाई-भोजाई नै आया देखनै गिरधारी री छाती भरीजगी। दोनूं भाई बाथ घालनै रोवण लाग्या तो देखणवाळां रा भी मन पसीजग्या। खासी ताळ तांई तो किणी सूं बोलीज्यो ही कोनी। छेवट जगमाल बोल्यो जणै निःशब्दता भागी। पण गिरधारी रा बोल तो होठां तांई आयनै ही अटकग्या जाणै सबद-पंखी उडण वासतै पांख्यां खोलनै पाछी सांवट ली। वो अपराध री भावना सूं दब्रियोड़ो हो। पण अश्रु-प्रवाह दोनूं भायां रै मन री काळख धोय नाखी।

गिरधारी नै अस्पताळ में पूरा तीन महीनां रैवणो पड़चो। अेक टांग उणनै कटावणी पड़ी। जगमाल भाई री जबरी चाकरी कीधी। अस्पताळ सूं छुट्टी मिली जितरै गिरधारी नै नौकरी सूं ही छुट्टी मिलगी ही। जगमाल उणनै लेयनै गांव आयो तो सगळो गांव मिलणनै उमड़ पड़चो।

व्यांव, दुकाळ अर दुर्घटना रै कारण घर री माली हालत पहली जिसी नीं ही। दुनियां में चलती रो नांव गाडी है। माया थारा तीन नांव, फरसू, फरसो, फरसराम। जगमाल फरसू सूं फरसराम बण्यो हो जणां गांव रा केई भला मिनख राजी हा तो केई दुष्ट लोग दुखी पण हा। आज ही बो माली हालत सूं कमजोर भलां ही हुयो हुवै पण मन सूं वो थोड़ो भी कमजोर नीं हो।

उण गिरधारी नै हिम्मत बंधायी अर गांव में अेक दुकान खुलवा दी। धंधै में गिरधारी घणो हुसियार हो। दुकान जमगी अर आछी चालण लागी। अठीनै दो-तीन साल खेती री पैदावार ही चोखी बैठी। घर पाछो ठायै आयग्यो। देराणी-जेठाणी भी घणै संप सूं रैवण लागगी। इण भांत सगळी वातां ठीक हुयगी पण विघन-संतोषियां रै जीव नै पाछी गिरै हुयगी।

□

— खांडप, बाड़मेर

'खम्मा' शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ

नरोत्तमदास स्वामी

राजस्थान के राज्यों में प्रजाजन, दरबारी तथा अन्यान्य लोग राजा अेवं राज-परिवार के प्रमुख व्यक्तियों का अभिवादन अेवं अभिनंदन प्रायः 'खम्मा !' संबोधन के द्वारा करते हैं। साधारणतया यह समझा जाता है कि 'खम्मा' शब्द संस्कृत के 'क्षमा' शब्द का रूपांतर है, पर वास्तविक बात अैसी नहीं है। वस्तुतः 'खम्मा' शब्द संस्कृत के 'आयुष्मान्' शब्द से बना है। 'आयुष्मान्' से 'आयुखमाण' बना और जोर से पुकारते समय शब्द के पिछले भाग पर अधिक जोर पड़ने से उसका पूर्व भाग 'आयु' धीरे-धीरे लुप्त हो गया और 'खम्माण' शेष रहा, जो धीरे-धीरे 'खम्मा' बन गया।

'जय-जय !' की भांति 'खम्मा !' भी आशीर्वादात्मक अभिवादन है, जिसका अर्थ है– दीर्घजीवी हो। प्रजा, राजा को सदा आशीर्वाद ही देती आयी है, क्षमा मांगने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। अंग्रेजी में भी राजा-रानी का अभिवादन– Long live the King या Long live the Queen कहकर किया जाता है।

आशीर्वाद, बड़ों द्वारा छोटों को ही नहीं, किंतु छोटों द्वारा बड़ों को भी दिया जाता है। संस्कृत के नाटकों में सारथी, रथी को 'आयुष्मन्' कह कर संबोधित करता है।[1] मनुस्मृति में कहा गया है कि ब्राह्मण का अभिवादन 'आयुष्मान् हो' इन शब्दों के द्वारा करना चाहिये।[2]

□

---

1. देखिये कालिदासकृत अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक (अंक 1 में राजा दुष्यन्त और सूत का वार्तालाप) तथा भवभूति का उत्तररामचरित नाटक (अंक 5 में राजकुमार चंद्रकेतु और सुमित्र का संवाद)।
2. आयुष्मान् भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने (अध्याय 2, श्लोक 125)।

[वैचारिकी. भाग 1 अंक 2-3 से साभार]

जुगां सूं जूझता लोक-शब्द

रावत सारस्वत

आपरै इतिहास री ओळखाण लियां सैकड़ूं-हजारूं शब्द आपणी बोल-चाल में लाधै। उणां नै पिछाणनै अर परखणै री जरूरत है। अठै कुछेक शब्द विद्वानां रै विचार सारू मांडचा गया है।

1. लूंगी — गणगौर पूजबाळी कन्यावां अेक गीत गाया करै—
म्हारा ईसरजी ओ उमराव जटाधारी ! लूंगी लाज्योजी
लूंगी महंगी अे गुमानण राणी ! लूंगी महंगी अे......

आ लूंगी कांई है ? अजकाळै मरद घरां में जिकी तहमद पैरै उणनै भी लूंगी ही कैवै। मुसळमान-समाज में तो इणरो आम रिवाज है। 'आईने अकबरी' पृष्ठ 389 अर Fitch Pyley 118–119, अर्ली ट्रेवेल्स, 28 अर आईन 391, बंबई 208 पर जिक्र है कै 'उड़िया लोग घणा गरीब है। लूंगी रै अलावा कुछ भी कोनी पैरै या अेक सफेद कपड़ो कमर रै लपेट लेवै' (The Oriyas ... are very poor, wear no better habit than a Lungee, or a white cloth made fast about their waist.)

आ लूंगी तो लगभग बा ही है, जिणरो जिक्र ऊपर करचो है। आईन में फेर लिख्यो है—'Large number of men and women go naked and donot wear any thing except for the lean cloth (Lung). (Agrarian system of Mughal India, page 95, Irfan Habib, New Delhi, 1963). अेच. अेच. विल्सन आपरै कोश Glossary of Judicial and Revenue Terms, पृष्ठ 313 पर लिखै है—'Lung and Lungee, a cloth passed between the thighs, Bengali Lungi, a petticoat. It is said also to be a large handkerchief of blue silk and cotton mixed, carried over one shoulder; used sometimes as a searf, sometimes as a waist belt.'

इण अर्थां नै देखतां 'लूंगी' या तो कीमती कपड़ै रो लहंगो है या रेशमी ओढणो नीलै रंग रो। कानां में पैरणै री लूंग बाबत लोग जिकी कल्पना करै बा इण अर्थां नै देखतां संभव कोनी। लहंगो, लंगोट, लिंग जिसा शब्द भी ध्यान में राखणा चाहीजै जिका इण अर्थ में सहायक हुवै।

2. **सरबतो**—जयपुर रै राजमहलां में खासा दरबार रो अेक भवन है, जिण नै बोलचाल में 'सरबतो' कैवै । 'सरबतो' संस्कृत शब्द 'सर्वतोभद्र' सूं निकळचोड़ो है । ओ भवन च्यारूंमेर सूं खुलो है अर वीचूं-वीच राजा रै बैठणै री व्यवस्था रैयी हुसी । इण नै केई लोग 'सर्वतोभद्र' नांव री अेक तांत्रिक वणावट मानै । पण 'सर्वतोभद्र' अेक प्रकार रो प्रासाद हुवतो जिण री पूरी जाणकारी 'प्रासाद मंडन' में दी गयी है । 'केसरी' जाति रा पच्चीस प्रकारां में अेक रो नांव 'सर्वतोभद्र' हो —

'केसरी सर्वतोभद्रो नंदनो नंदशालिक'

इण री वणावट री पूरी व्याख्या रो पैलड़ो श्लोक यूं है—

'क्षेत्रे विभक्ते दशधा गर्भः षोडश कोष्ठकैः ।
भित्ति भ्रमंच भित्तिच भगभागं प्रकल्पयेत् ।।'

आ वणावट प्रासाद (मंदिरां) सारू हुवता हुयां भी जयपुर रै सरवतै पर भी घटै । भद्र शब्द रा अर्थ है – सोवणो, शुभ, कल्याणकारी । इण वास्तै चारूं कानी सूं फूटरो लागणवाळो अर च्यारूं दिसां सूं प्रवेश करणै पर शुभ महल 'सर्वतोभद्र' कैवायो । इसो प्रासाद राजा अर प्रजा दोनां रै कल्याण रो कारक है —

प्रासादाः केसरी मुख्याः सर्वदेवेषु पूजिताः ।
पुर रालः प्रजादीनां कर्त्तुः कल्याणकारिकाः ।।

अै परिभाषावां मूळरूप सूं प्रासादां पर लागू हुवै । पण सरवतै में चतुर्दिक् प्रवेश रै कारण ओ शुभ अर कल्याणकारी स्वरूप वणायीज्यो । प्रासाद मंडन (15/70) में राजगृह में चौतरफै प्रवेश रो विधान है—

'चतुर्द्वारं चतुर्दिक्षु शिव ब्रह्म जिनालये ।
होमशालायां कर्तव्यं क्वचित् राजगृहे तथा ।।'

इण प्रसंग में अेक वात और ध्यान देवणजोगी है । सिखां में 'सरवत खालसा' नांव रो अेक जलसो या संमेलन हुवै जिण में च्यारूं कूंट सूं लोग भेळा हुवै । ओ 'सरबतो' भी 'सर्वतो' रो ही विकृत रूप हुय सकै है । 'सरबत' (मीठो पेय) सूं इणरो संबंध बैठावणो ठीक कोनी । भारतीय समाज में शुभ, मंगळ अर कल्याण री भावनावां पर ही जोर रैवतो आयो है सो 'सरबतो' भी उण रो ही प्रतीक है ।

3. **सूरज सामी पोळ**— अेक राजस्थानी लोकगीत री झड़ इण भांत है— 'सूरज सामी पोळ, केळ झबरकै राजीड़ा रै बारणै ।' वास्तुशास्त्र रै मुजब भवन रो अेक ही दरवाजो हुवै तो बो अगूण दिशा में हुवणो चाहीजै, दो हुवै तो अगूण अर आथूण में अर तीन हुवै तो दोनूं दरवाजो रै वीच में मुख्य दरवाजो राखणो चाहीजै । पण दिखणाद में खास दरवाजो राखणै री मनाही है । 'प्रासाद मंडन' में ओ उल्लेख है—

अेकद्वारं भवेत् पूर्वे द्विद्वारं पूर्व-पश्चिमे ।
त्रिद्वारं मध्यमं द्वारं दाक्षिणात्यं विवर्जयेत् ।। (5/9)

इण श्लोक में उत्तरमुखी दरवाजो राखण रो भी कोई विधान कोनी। अपराजित-पृच्छा (सूत्र 157) में भी प्रासादां रा दरवाजा (प्रवेशद्वार) राखण रा न्यारा-न्यारा विधान है। पण अगूण दिशा रो द्वार सगळा ही मतां सूं शुभ मानीज्यो है।

घरां री 'सूरज सामी पोळ' री जड़ में भी आ ही मान्यता है। मौसम रै हिसाब सूं भी ओ विधान ठीक ही है। ऊगतै सूरज रो तावड़ो सुहावणो अर घर सारू जरूरी हुवै। दोपारै पछै रो तेज तावड़ो घरवाळां नै दुख कोनी देवै। आथूण री बारियां सूं सीलो वायरो भी आतो रैवै अर पिछोकड़ै में सांझ रै सूरज रो चानणो वण्यो रैवै।

4. **चिणगारी** — 'चिणी' शब्द चिंचा सूं वण्यो है जिणरो अर्थ है– 'इमली'। इण वास्तै चिणगि, चिणाग्नि, चिनाग्नि, चिनिगी अर चिणगारी रो अर्थ इमली रै अंगारै रै पतंगै सूं है। इमली रो कोयलो सगळां सूं वेसी दहकणवाळो अर साचो हुवै। इण री व्युत्पत्ति इण भांत है—

चिणीगारिका→चिनांगारिआ→चिनगारी→चिंगारी।

5. **भार** — अेक कहावत है— 'गाडै में छाजलै रो कांई भार?' अठै 'भार' रो मतलब है बोझ। भारवाहक, घास रो भारो, भार-बोझ, भार-तार आदि शब्द भी आजकल बोझ रै रूप में ही मानीजै। पण 'भार' खुद अेक खास वजन हुया करतो हो जियां मण, सेर वगैरा हुवै। अमरकोश में लिख्यो है कै पांच सेर री तुला अर वीस तुला रो अेक भार हुवै—

'तुलास्त्रियां पलशतंभारः स्याद्विंशतिस्तुला।
याचितो दशभाराः स्युः शाकटो भार आचितः॥' ('अमरकोश 2/9/87')

आज भी नाज वगैरा तोलै तो ताकड़ी में पांच सेर (किलोवाट) राखै अर पांच-पांच सेर (किलो) रै हिसाब सूं ही तोलै। पांच सेर रो ओ तोल 'तुला' कहीजतो अर इसी वीस तुला रो अेक भार यानी अढाई मण वण जातो। इण नै 'भार' इण वास्तै कहीजतो क्यूं कै अेक पळदार $2\frac{1}{2}$ मण (अेक भार) ही सरळता सूं उठा सकतो। ओ 'मिनख रो भार' वाजतो। 'गाडी रो भार' मिनख रै भार सूं दस गुणो हुवतो अर उणनै 'महाभार' कैवता हा जिको पच्चीस मण रै बरोबर हुवतो। पच्चीस मण री गाडी में अेक छाजलो और मेल दियो जावै तो 'भार' में किसी वढोतरी हुवै। आ वात ही कैवत वणगी। आज भी $2\frac{1}{2}$ मण रो वो 'मिनख रो भार' ही अेक क्विंटल री बोरी रै रूप में चालू है। आपणै जूनै व्योहार री आ चतराई हजारां वरसां सूं चाल रैयी है।

कृष्ण आपरी वैन सुभद्रा नै दायजै में जो दियो वो 'मनुष्यभार' भी वर्णित है—

कृता कृतस्य मुख्यस्य कनकस्याग्नि वर्चसः।
मनुष्यभारान् दाशार्हो ददौ दश जनार्दनः।

(महाभारत, आदिपर्व, 220 अध्याय)

ओ दस 'मनुष्यभार' अर्थात् 25 मण स्वर्ण अेक 'शकटभार' रै बरोबर हो। □

–डी-282, मीरां मार्ग,
वनी पार्क, जयपुर–302 006

राजस्थान-इतिहास रो महत्त्वपूर्ण स्रोत : राजस्थानी साहित्य

गिरिजाशंकर शर्मा

अपणै पैलै अेक लेख 'राजस्थानी भाषा साहित्य में इतिहास की आधारभूत सामग्री' रै संबंध में जद इण पंक्तियां रो लेखक सामग्री रो चयन कर रैयो हो, उण समय राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में अपुरालेखीय खंड री सामग्री में जोधपुर राज्य सूं प्राप्त राजस्थानी भाषा साहित्य सूं संबंधित अैतिहासिक सामग्री रो अध्ययन करणै रो अवसर मिलियो। यद्यपि राजस्थानी भाषा में लिखी आ सामग्री मुख्यत: जोधपुर रियासत रै विविध पहलुवां सूं ही संबद्ध है; फेर भी इण सामग्री री आ विशेषता है कै मध्यकाळ में राजस्थानी भाषा रै साहित्य रो जिण विविध रूपां में सृजन हुयो वै सगळा रूप इण सामग्री में मिलै है। इण वास्तै राजस्थान अर उण रै बारै रा शोध-अध्येतां वास्तै, जिका राजस्थान रै इतिहास रै अध्ययन में संलग्न है, इण सामग्री रो महत्त्व और घणो वधग्यो है। ओ सही है कै आजादी सूं पैलां रै भारतीय इतिहास रो राजस्थान रै संदर्भ में अध्ययन करचो जावै तो मालूम पड़सी कै तत्कालीन इतिहासकारां उण में साहित्यिक सामग्री रो भी काफी उपयोग करचो हो, पण तथ्यां सूं ओ पतो चालै कै इण तरै री सामग्री रो सबसूं वेसी उपयोग उण वखत री राजनीतिक घटनावां रो विस्तार सूं वर्णन करणै रै वास्तै ही हुयो हो। किंतु आज इतिहास-लेखन में राजनीति रै साथै-साथै तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक अर आर्थिक स्थिति रो अधिक अध्ययन करीजणै सूं राजस्थानी भाषा री साहित्यिक आधार-सामग्री रो महत्व काफी वधग्यो है, क्यूं कै इण साहित्य में उपर्युक्त पक्षां री घणी सारी जाणकारी मिलै। राजस्थानी भाषा में लिखियोड़ो ओ साहित्य, च्यार मुख्य भागां में वांटीजण री परंपरा रैयी है। अै च्यार भाग जैन-साहित्य, चारण-साहित्य, भक्ति-साहित्य अर लोक-साहित्य है। जैन साहित्य अधिकांशत: जैन यतियां अर उणां रा अनुयायी श्रावक-श्राविकावां द्वारा लिखियोड़ो है। चारण शैली में साहित्य रै निर्माण में चारण जाति रै लोगां री देन मानीजै। राजस्थान में भक्ति साहित्य भी घणी सारी मात्रा में लिखीज्यो है। संत कवियां री बाण्यां आज भी समाज में खूब प्रचलित है। इण तीनां रै अलावा राजस्थान रा हजारूं कवियां आपरी काव्य-कला रै माध्यम सूं राजस्थानी लोक साहित्य रो सृजन करचो जिको आज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुवै है। इण में जैन अर भक्ति साहित्य री आंतरिक सचाई, जियां—विभिन्न धर्म-संप्रदायां, उणां रा आंदोलनां अर क्रियाकलापां री पद्धतियां रो उण वखत रै परिप्रेक्ष में तटस्थ अर संतुलित दृष्टि सूं अध्ययन री जाणकारी वास्तै महत्वपूर्ण है, वठै ही चारण शैली में लिख्योड़ो अर दूजो लोक साहित्य समाज री छोटी-सूं-छोटी मान्यतावां,

धारणावां अर जीवण-मूल्यां नै समझणै वास्तै महत्त्वपूर्ण है। गद्य अर पद्य में रचियोड़ो राजस्थानी रो ओ साहित्य इतो विपुल परिमाण में है कै उण रो विवेचन अेक लेख में संभव कोनी। इण वात नै दृष्टिगत राखता थकां प्रस्तुत लेख में वीकानेर रै राजस्थान राज्य अभिलेखागार में राजस्थानी में उपलब्ध अैतिहासिक महत्व वाळै साहित्य री अेक संक्षिप्त ग्रंथ-सूची देवण रै साथै उणरै विभिन्न स्वरूपां रै बारै में वतलावण रो प्रयत्न करचो गयो है। राजस्थानी भाषा री उपलब्ध साहित्यिक सामग्री पद्य अेवं गद्य दोनूं रूपां में है। पद्य रूप में उपलब्ध सामग्री जठै विलास, रूपक, वचनिका, वेलि, नीसाणी, झूलणा, झमाल, गीत, कवित्त (छप्पय) व दूहा रूप में है, वठै ही गद्य साहित्य में ख्यात, तवारीख, वात, विगत, वंशावली अर वार्ता आदि रूपां में मिलै।

राजस्थानी गद्य साहित्य रै विकास में ख्यातां रो काफी महत्व है। साहित्यिक दृष्टि रै अतिरिक्त इण रो अैतिहासिक महत्व भी कम कोनी। राजस्थानी ख्यात शब्द प्रायः इतिहास रै पर्यायवाची शब्द रै रूप में ही प्रयुक्त हुवै है। अठारवीं सदी में कई ख्यातां लिखीजी। ख्यातां प्रायः दो ढंग सूं लिखी जावती ही। अेक तो वै है, जिकी लगातार इतिहास ग्रंथ रै रूप में, जिण में क्रमभंग नीं हुवै, लिखी गयी। इण कोटि में दयालदास री ख्यात राखी जा सकै है। दूजै भांत री वै ख्यातां है, जिण में क्रमबद्ध इतिहास रै स्थान पर फुटकर वातां पायी जावै। अगर इण वातां नै क्रमबद्ध कर दी जावै तो भी शृंखलावद्ध इतिहास ग्रंथ को वणै नी। इस भांत री ख्यातां में वांकीदासरी ख्यात उल्लेख करणै जोग है। ख्यात लेखक या तो ख्यात रो नामकरण आपरै नांव सूं कर देवतो हो, या जिण राजा या राजवंश रै नांव पर जिण नै बो आपरी ख्यात रो विषय बणावतो। उपर्युक्त ख्यातां में नैणसी री ख्यात व मुंदियाड़ री ख्यात में सतरहवीं सदी रै राजस्थान में राजपूत अर मुगलां रै संबंधां पर विस्तार सूं प्रकाश पड़ै। वांकीदास री ख्यात सूं दूजी वातां रै अलावा अंग्रेज-विरोधी विचारधारा री जाणकारी मिलै। दोनूं भांत री प्रमुख ख्यातां इण भांत है—

1. ठिकाणा मुंदियाड री पुस्तक, 2. राठौड़ां री ख्यात जोधपुर री, 3. परगना फलौदी रै गांव खारिया रै पठावतां री ख्यात (खुलासो). 4. ठाकुर रणजीतसिंघजी री ख्यात, 5. परगनै जालोर रै गांव भवरा रै राठौड वभूतसिंहजी खांप अडळावतां री पीढियां री ख्यात, 6. परगनै सोजत रै गांव वगड़ी खांप जेतावतां री ख्यात, 7. खांप कुमावतां री ख्यात, 8. खांप करणोतां री ख्यात, 9. खांप जोधाजी री ख्यात, 10. महाराणा अजीतसिंघजी री ख्यात, 11. खांप कांधळोत राठौड़ां री ख्यात, 12. खांप भिवोत राठौड़ां री ख्यात 13. खांप करमसोतां री ख्यात 14. ऊदावतां री ख्यात, 15. खांप मांडणोतां री ख्यात, 16. ख्यातरी वही वणसुर जादूदान री वही री नकल, 17. महाराजा श्री जसवंत सिंह री ख्यात, 18. रावसिंहाजी री ख्यात, 19. दिल्ली राजा पातसाह हुया जिणां री ख्यात, 20. मूंता नैणसी री ख्यात, 21. ख्यात श्री कुचामन री 22. महाराजा सवाई सूरसिंघजी री ख्यात, 23. राव श्री मालदेवजी री ख्यात, 24. राव श्री सातळजी री ख्यात, 25. महाराजा श्री रायसिंघजी रीं ख्यात, 26. महाराजा श्री अभयसिंघजी री ख्यात

27. परगना नागौर रै गांवां री ख्यात, 28. परगनै विलाडै रै गांवां री ख्यात 29. खांप भादावत चांपावत अर कुंपावतां री ख्यात, 30. मुंदियाड ठिकाणै री ख्यात, 31. ख्यात बीकानेर रै राठौड़ां री, 32. दयालदास री ख्यात, 33. ख्यात नैणसी री, 34. जोधपुर री ख्यात, 35-36 जोधपुर रा महाराज मानसिंघजी री नै तखतसिंघजी री ख्यात, 37. बांकीदास री ख्यात, आदि। इण ख्यातां में राजस्थान रै राजवंशां रै इतिहास री जाणकारी मिलै।

राजस्थान में ख्यात-लेखन रै साथै ही तवारीख-लेखन भी कम नीं हुयो। यद्यपि ओ लेखन अधिकांशतः उगणीसवीं सदी रै अंतिम दशकां अर उण रै बाद रो है। मुगल दरबार री भांत राजस्थान रा शासक वडा जागीरदारां नै आपरै स्वयं री अथवा आपरै पैली रा राज्यां, जागीरां अर उणां रै अन्तर्गत आवण वाळा गांवां री तवारीखां लिखावणी प्रारंभ कर दी ही। इण तवारीखां री विशेषता आ है कै अै मुगल शासन में लिखीजणवाळी तवारीखां री दांई फारसी में नीं लिखी जायनै राजस्थानी में लिखवायोड़ी मिलै! इण में कतिपय प्रमुख तवारीखां इण प्रकार है— तवारीख कुशलगढ राज्य, तवारीख खांप जोधा (दूसरो भाग), तवारीख महाराजा श्री तख्तसिंघजी, तवारीख जोधपुर महाराजा श्री विजयसिंघजी री, परगनै पाली रै गांव सेखा री तवारीख, सीतामऊ राज्य री तवारीख, रतलाम राज्य री तवारीख, टांटोटी इलाकै अजमेर री तवारीख, तवारीख रियासत झाबुआ री, मालपुरा री तवरीख, श्री अजीतसिंघ जी री तवारीख, परगना मेड़ता गांव छातो री तवारीख, मोटाराजा उदयसिंघजी री तवारीख, तवारीख ठाकुरां राज श्री शिवनाथजी री महाराजा श्री गजसिंहजी री तवारीख, महाराजा श्री भीमसिंहजी रै राज री तवारीख, महाराजा सूरसिंहजी रै राज री तवारीख, राव गांगाजी री तवारीख, राव चन्द्रसेन जी व मोटा राजा उदयसिंघजी रै काळ री तवारीख, महाराजा श्री अभयसिंघजी री तवारीख, महाराजा श्री विजयसिंघजी री तवारीख, महाराजा मानसिंघजी री तवारीख, राव सूजाजी अर बाघाजी री तवारीख, महाराजा श्री विजसिंघजी री तवारीख आदि। मुगलकालीन तवारीखां री भांत आं तवारीखां में भी घणी सारी अतिशयोक्तिपूर्ण वातां समायोड़ी है, पण इणरै हुवता थकां इणरो अैतिहासिक महत्व कम कोनी।

राजस्थानी गद्य-साहित्य में वात साहित्य रो इतिहास भी महत्वपूर्ण आधारभूत सामग्री है। ख्यातां रै विभिन्न अध्यायां नै वातां रै रूप में लिखणै री परंपरा रैयी है। इणरै अतिरिक्त राजावां रै विशिष्ट व्यक्तियां अर उणांरै कार्यकलापां रै आधार माथै भी अणगिणत वातां री रचना हुयी है। समृद्धता री दृष्टि सूं राजस्थानी रो वात साहित्य सबसूं वेसी महत्त्वपूर्ण है। इण में सूं अैतिहासिक वातां रो राजस्थान रै इतिहास लेखन में विशेष महत्व है। वातां री आ विशेषता है कै इण में सामान्य जन-जीवण री जाणकारी मिलै। वातां रो नामकरण भी ख्यातां री भांति ही राखीजतो हो। कतिपय प्रमुख वातां इण प्रकार है— बीकानेर रै राठौड़ां री वात, नागौर रै मामलै री वात, दिल्ली रै धणियां री वात, रायधण री वातां, लाखै फूलाणी री वात बीजी फुटकर वातां, फुटकर वातां रो संग्रह, जगदेव पंवार री वात, कुंवरसी सांखळा री वात, हाला झाला री वात, ढोला मरवण री

वातां, राव् रिड़मल री वात, पाबूजी री वात, कान्हड़दे री वात, नापै सांखळै री वात, राव् अमरसिंहजी री वात, फीरोजशाह पातिसाह री वात अर मूमल री वात।

वात साहित्य री दांई राजस्थान राज्य अभिलेखागार में वार्तावां रो संग्रह भी उपलब्ध है। वार्तावां ऐतिहासिक दृष्टि सूं काफी महत्त्वपूर्ण मानी गयी है। इण में कतिपय वार्तावां इण प्रकार है– वार्ता महाराणा सांगा री, वार्ता जलाल बूबना री, विविध वार्ता संग्रह, वार्ता शाहजादा कुतुबुद्दीन री, वार्ता रिड़मलखां वड़िया री, वार्ता पन्ना री, वार्ता ढोला-मरवण री, वार्ता महचो कंवर जगमालसिंघजी री, भाटियां री ख्यात वार्ता, अनंतराय सांखळा री वार्ता आदि वार्तावां महत्वपूर्ण है।

वार्ता साहित्य री भांति 'विगत' साहित्य भी ऐतिहासिक दृष्टि सूं घणो महत्त्व रो है। विगत रो शाब्दिक अर्थ वृत्तांत है। राजस्थानी में लिखी विगतां री संख्या कम कोनी। अठै आ वात उल्लेखनीय है कै आज रा इतिहासकार विगत साहित्य नै राजस्थान रै सामाजिक व आर्थिक इतिहास री जाणकारी रै वास्तै महत्त्वपूर्ण आधार सामग्री मान रैया है। महाराजा अनूपसिंघजी रै मुनसब रै तलब री विगत संवत् 1724 सूं 1752 तांई री मुगलकालीन घटनावां रै साथै तत्कालीन विषयां सूं संबंधित आंकड़ा भी प्रस्तुत करै है। नैणसी री मारवाड़ रा परगना री विगतां में, जिकी आज रै इतिहास री सर्वश्रेष्ठ आधारभूत सामग्री वणगी है, मारवाड़ रै परगना रै गांवां री भौगोलिक स्थिति, वाणिज्य, व्यौपार, व्यौपारी-मार्ग, विभिन्न स्रोतां सूं आय रा साधन, किसानां री स्थिति आदि पर विस्तार सूं प्रकाश पड़ै है। अभिलेखागार में प्राप्त कतिपय दूजी विगतां इण भांत है— महाराजा रामसिंघजी गढ ऊपर टीकै विराजिया री विगत, पुस्तक प्रकाश री जूनी वही में लिखी तिणरी विगत, श्रीजी साहबां रै अर रामचन्द्र रै ब्याह री विगत, महाराजा जसवंतसिंघजी रै ब्याह री विगत, महाराजा अजीतसिंघजी साहबां रै राज लोक री विगत आदि महत्त्वपूर्ण विगतां है। इण रै अतिरिक्त गहलोतां री चौवीस शाखां री विगत, कछवाहा-शेखावतां री विगत, जोधपुर-बीकानेर टीकायतां री विगत भी उल्लेखनीय है।

राजस्थान में कत्ता लिखणै री परंपरा काफी समय सूं रैयी है। कत्ता रो शाब्दिक अर्थ राजकीय विवरण सूं लेवां तो अतिशयोक्ति कोनी हुसी। इण वास्तै इण में ऐतिहासिक सामग्री भरपूर मात्रा में मिलै है। अभिलेखागार में पाया जावण वाळा कत्ता घणा पुराना तो कोनी पण फेर भी काफी महत्त्व रा है। उण मांय सूं केई कत्ता इण भांत है— डावी मिसल रो कत्तो, महाराजा श्री अजीतसिंघजी रै समय रो कत्तो, महाराजा श्री अजीतसिंघजी रो जीवणी मिसल रो कत्तो, राठौड़ां रै गढावतां री बंदगियां रो कत्तो, सन 1885 सूं 1886 तांई महाराजा सरदारसिंघजी रै राजतिलक रो कत्तो, सन 1885 सूं 1889 तांई रो कत्तो, महाराजा श्री जसवंतसिंघजी द्वितीय रै जन्म अर अहमदनगर पधारणै रो कत्तो आदि महत्त्वपूर्ण कत्ता कैया जा सकै है।

कुर्सीनांवै व वंशावळी रो ऐतिहासिक महत्व सर्वविदित है। राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में घणी सारी वंशावळियां अर कुर्सीनांवा मिलै है। इणां मांय सूं केई

प्रमुख वंशावळियां अर कुर्सीनांवा इण भांत है— कुर्सीनांवो अचळदास खीची रो, राठौड़ वंशावळी, वंशावळी उणियांरा रा राव राजा फतहसिंघजी री, खांप मेड़तिया विठलदासोत, केसोदासोत तथा मेड़तिया रघुनाथसिंघोत तथा आनंदसिंघोत रो कुर्सीनांवो, परगणै नागौर रै गांव माण रो पोटलिया रै जागीरदारां रायमलोत, नाहरसिंघ रै पट्टै रै गांव रो कुर्सीनांवो, नकल कुर्सीनांवो महाराजा साहब माढा, अचलदासजी, आसकरणजी, रावत सिंघोत, शंकरदास, भानीदासोत आदि रा कुर्सीनांवा अर खीचियां रा कुर्सीनांवा महत्वपूर्ण कैया जा सकै है।

राजस्थानी गद्य साहित्य में 'हाल' लिखणै री परंपरा भी रैयी है। इण रो भी काफी अैतिहासिक महत्व है। राजस्थान रै विभिन्न भागां में अनेक हाल मिलै है। महाराजा जोधा रो हाल व जोधा रो जन्म संबंधी हाल मारवाड़ रै इतिहास रै बारै में महत्वपूर्ण जाणकारी देवै। इण रै अलावा गद्य-साहित्य में अनेक दवावेत भी उपलब्ध है जिका हाल अर ख्यात री भांत इतिहास रै वास्तै आधार-सामग्री रै रूप में महत्वपूर्ण कैया जा सकै है। दवावेतां में राजस्थानी शब्दां रै सागै उर्दू रै शब्दां रो प्रयोग भी हुवतो हो। उपलब्ध दवावेतां में महाराजा अजीतसिंघजी रो दवावेत उल्लेखनीय है।

राजस्थानी भाषा रै गद्य साहित्य री भांत उण रो पद्य-साहित्य भी इतिहास री आधार-सामग्री रै रूप में कम महत्व रो नीं है। इण अभिलेखागार में पद्य रूप में जिको साहित्य उपलब्ध है, उण में वचनिका साहित्य भी अैतिहासिक दृष्टि सूं जाणकारी देवण में समर्थ है। वचनिका लिखणै री आ विशेषता रैयी है कै किणी अैतिहासिक व्यक्ति नै आधार वणायनै जिकी वचनिका री रचना करीजती ही, उण में गद्य अर पद्य दोनूं हुवता हा। शिवदास चारण कृत अचलदास खीची री वचनिका अर राठौड़ रतनसिंघजी महेसदासोत री वचनिका उल्लेख करणैजोग है।

राजस्थानी रै पद्य साहित्य में 'नीसाणी' लिखणै री भी परंपरा रैयी है। किणी व्यक्ति अथवा घटना री स्तुतिपरक अथवा स्मरण दिरावण वाळी रचना नीसाणी कैयीजती ही। राजस्थानी साहित्य में नीसाणी रो भी अैतिहासिक महत्व रैयो है। कतिपय उपलब्ध नीसाणियां इण प्रकार है— ठाकुर राजसिंघजी खीमावत री नीसाणियां, नीसाणी परगना सोजत रै गांव पंचोटिया रै किशनोजी दुरसावत री कही हुयी, नीसाणी ठाकुर विठलदास गोपाळदास चांपावत री, नीसाणियां भंडारी गंगारामजी री, नीसाणी सेवक मंछारामजी री री कही हुयी, नीसाणी वीरमाण री, गोगैजी चौहाण री नीसाणी अर आंबेर रा महाराजा प्रतापसिंघजी री नीसाणी उल्लेखनीय है।

नीसाणी अर वचनिका री भांत 'वेलि' लिखणै री परंपरा भी राजस्थान में काफी पुराणै काळ सूं रैयी है। इण कारण अठै वेलि-साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलै। वेलियां में वीर रसात्मक वेलियां अैतिहासिक महत्व री है। प्राचीन राजस्थानी में लोकहित रै वास्तै प्राणोत्सर्ग करणैवाळा वीरां री चारित्रिक विशेषतावां तथा उणां रै आदर्श कार्यां माथै घणी-सी वेलियां रो निर्माण हुयो है। सतरहवीं सदी में रचियोड़ी राठौड़ रतनसिंघजी री

वेलि काफी महत्वपूर्ण है। वेलि साहित्य री दूजी महत्वपूर्ण वेलियां क्रिसण रुक्मणि री वेलि, बीकानेर महाराज पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा विरचित अर राजा रायसिंघजी री वेलि, (ठाकुर माला सांदू) महत्वपूर्ण वेलि रचनावां है।

वचनिका अर वेलि रै अतिरिक्त राजस्थानी रै वीर रसात्मक साहित्य में अनेक काव्य गीत, फुटकर दूहा अेवं छंद आदि अठै उपलब्ध है। इण दूहां, गीतां अर कवित्त आदि में डिंगळ में छप्पय, कवित्त, रूपक, झमाल, झूलणा, मरसिया आदि रचनावां काफी महत्वपूर्ण है।

इतिहास रा अध्येता उक्त पद्य-साहित्य नै इतिहास री आधार सामग्री वणावै इण सूं पैली अनेकूं नांवां सूं प्रसिद्ध इण साहित्य रो शाब्दिक अर्थ जाण लेवणो ठीक रैसी। रूपक सूं तात्पर्य उण काव्य या ग्रंथ सूं है जिण में किणी महान योद्धा रो चरित्र-चित्रण हुवै, किंतु वास्तव में ओ डिंगळ गीत (छंद) विशेष है जिणरी संख्या 84 हुवै है। इणी भांत झमाल डिंगळ रो बो छंदविशेष है जिण में छंद रै पछै चांद्रायण अर फेर उल्लाला छंद राख'र सिंहावलोकन री रीत सूं पढचो जावै। झमाल री भांत झूलणा 37 मात्रावां रो मात्रिक छंद अथवा 24 आखरां रो वर्णिक छंदविशेष है जिण रै अंत में यगण (ISS) हुवै। मरसिया किणी मृत व्यक्ति रै शोक में वणायोड़ो पद्य हुवै है। उण अैतिहासिक घटनावां रै जिण रो दूजी मूळ सामग्री सूं सत्यापन नीं हुय पावै, सत्यापन रै वास्तै आ सारी सामग्री उपयोगी सिद्ध हुवै। अभिलेखागार में इण भांत री कुछ सामग्री इण प्रकार है— जोधपुर महाराजा जसवंतसिंघजी, मानसिंघजी, अजीतसिंघजी, देवीसिंघजी शेखावत, सीसोदिया भीमसिंघजी, राणा अमरसिंघजी आदि राजावां रा विड़द गीत, महाराजा अर वडा सरदार जिका युद्ध में काम आया तिणां रा विड़द अर यशगीत, कवित्त-छप्पय भटियाणाजी उम्मेदीजी राव मालदेवजी रै लारै सती हुवा तिण भाव रो, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, जैसळमेर इत्यादि रै राजावां रा विड़द गीत, जोधपुर महाराजा बखतसिंघजी रो फुटकर गीत, कवित्त, छप्पय, इत्यादि, महाराजा जसवंतसिंघ, रामसिंघ, रायमल, राव मालदेव, पृथ्वीराज इत्यादि रा विड़द गीत, जोधपुर, सीकर, उदयपुर रै सीहाजी, वखतसिंघजी, राणा अमर-सिंघजी तथा वडा सरदारां रा, जिका युद्ध में काम आया, विड़द गीत; उदयपुर, जयपुर रै राजावां समेत कोटा रै दुर्जनशाल तथा वडा सरदारां सूं संबंधित गीत; महाराजा अजीत-सिंघजी, अमरसिंघजी, मानसिंघजी, व महाराणा प्रतापसिंघजी रा विड़द गीत; जोधपुर महाराजा अभयसिंघजी अहमदाबाद रै नवाब शेरबुलंद खां सूं झगड़ो करचो, उण सूं संबंधित छप्पय, किशनगढ़ महाराजा बहादुरसिंघजी, जोधपुर महाराजा मानसिंघजी, अभयसिंघजी, अजीतसिंघजी, सरदारसिंघजी अर बूंदी रा महारावळ तथा जैसळमेर रा रावळ गजसिंघजी अर देवलिया अर विदनौर रै ठिकाणां रा गीत; जैसळमेर, बीकानेर, बूंदी, कोटा तथा जोधपुर ठिकाणां रै सरदारां री वीरता रा गीत; आलिया चारण अखैदानजी कृत डिंगळ भाषा काव्य-गीत, कवित्त, दूहा, छंद इत्यादि फुटकर संग्रह; उम्मेदसिंघजी रा कवित्त, छप्पय, छंद आदि, सांदू रिडमलदानजी कृत डिंगळ भाषा काव्य-गीत, कवित्त फुटकर संग्रह; महा-राजा तखतसिंघजी रो कवित्त, छप्पय, आढा चारण मूळराज कृत गीत-संग्रह, क्षेत्रपालजी

रा छंद, महाराजा मानसिंघजी रो जस कवित्त (आसिया वांकीदास कृत), फुटकर गीत दूहा, नाथियां तथा मोतीसरां रा दूहा, पोहकरण ठाकुर बभूतसिंघजी रा छप्पय, जळंधरनाथजी रो जस वर्णन, मेहड़ू महादान कृत नाथजी रा कवित्त, सेवक मघजी बड़लू वाळा कृत रूपनगर री सतियां रा कवित्त, परगनो जसवंतपुरा गांव अबातरी रै गांव-चारण हणूदानजी री पुस्तक री नकल, फुटकर गीत कवित्त आदि, फुटकर गीत कविराजा गणेशदानजी री पुस्तक री नकल, फुटकर गीत, कवित्त, दूहा (खिड़िया पीरदानजी री पुस्तक री नकल), फुटकर गीत, कवित्त, दूहा आदिनाथजी रा, विविध गीत, कवित्त संग्रह, बारहट रूपदान कृत; विविध गीत संग्रह, आढा चारण चतुर्भुज कृत; फुटकर गीत कवित्त संग्रह, खिड़िया चारण हरसुख कृत; फुटकर गीत कवित्त संग्रह, वणासुर महादानजी कृत; विरद प्रकाश फुटकर गीत कवित्त,– वीकानेर रै गांव सीलवा रै चारण आसिया मोतीराम कृत; उदयपुर, जोधपुर रै सरदारां अर राजावां रा फुटकर गीत; पाबूजी रा छंद; चौथ री कथा तथा अन्य फुटकर गीत, राजावां सरदारां अर वडा ठाकुरां रा यश अर वीरता रा गीत; महाराजा सूरतसिंघजी, महाराजा गजसिंघजी, राजा जसवंतसिंघजी, राव चौड़ो धूहड़जी, छत्रशालजी संबंधी गीत, विविध गीत संग्रह रो गुटको, जोधपुर रै राजा तखतसिंघजी रा कवित्त, छप्पय, तथा छंद आदि रो संग्रह; फुटकर गीत संग्रह कवित्त, दूहा आदि गोरखदान री पुस्तक मांय सूं लिया हुवा, डिंगळ काव्य फुटकर विविध गीत चारण शंकरदानजी री पुस्तक सूं संग्रहीत; आसिया मोतीराम कृत गीतां रो फुटकर संग्रह, बारठ रूपदान कृत विविध गीत संग्रह, चारण आढा चतुर्भुज कृत फुटकर गीत संग्रह; रतनू चारण पाबूदान अर जुगतीदान कृत गीत संग्रह; बारठ विहारीदास कृत फुटकर गीत कवित्त संग्रह; चारण दुरसाजी कृत विविध गीत संग्रह; सांदू चारण घनश्यामजी कृत विविध गीत संग्रह; बारठ देवकरण रतनू चारण, पाबूदान अर जुगतीदान कृत फुटकर गीत, कवित्त दूहा अर निसाणी; सिढायच पीरदान कृत फुटकर गीत, कवित्त अर दूहा संग्रह; जेतदान संग्रहीत फुटकर गीत, कवित्त अर दूहा; रतनू चारण गणेशदान तथा खेमदान द्वारा संग्रहीत फुटकर गीत, कवित्त; डिंगळ भाषा काव्य, गीत, कवित्त, दूहा अर छंद; सांदू चारण शोभजी कृत फुटकर गीत; बारठ रुद्रजी कृत फुटकर गीत, कवित्त अर दूहा; चारण नाथूदानजी कृत फुटकर गीत, कवित्त अर आढा पहाड़सिंघ विरचित फुटकर गीत-संग्रह उल्लेखनीय है।

गीत, कवित्त अर दूहां री भांत झमालां में उदयपुर महाराणा री झमाल, रतनू चारण कृत जोधपुर महाराजा री झमाल अर पोकरण देवीसिंह री झमाल उल्लेखनीय है। इणी भांत महत्वपूर्ण रूपकां में मोतीसर वखतावर कृत पाबूजी रो रूपक, गोगाजी रो रूपक, महाराजा वजरंगसिंघजी रो रूपक, चारण रामदीन कृत विरदप्रकाश रूपक, महाराजा गजसिंघ अर आयश देवनाथ रो रूपक उल्लेख करण जोग है। महाराजा मानसिंघ रो मरसियो अर रायसिंघ रो झूलणो, प्रमुख मरसिया नै झूलणां में उल्लेखनीय है।

उपर्युक्त सामग्री रै अतिरिक्त हिंदी अर राजस्थानी में लिखी दूजी अनेक रचनावां इण अभिलेखागार में उपलब्ध है, जिकी मध्यकालीन राजस्थान रै इतिहास री जाणकारी

रै वास्तै बहोत महत्वपूर्ण है। इणां मांय सूं केई इण भांत है— गुण भाषा चित्र महाराजा गजसिंहजी रो कह्यो, हेमकवि कृत तवारीख पातसाह री; विजय विलास, कवि बारठ विशनसिंह कृत, रतनरासो कविराजा गणेशदान कृत, भरतपुर रो इतिहास, झाबुवा राज्य रो संक्षिप्त इतिहास, सीतामऊ राज्य रो संक्षिप्त इतिहास, पृथ्वीराज दोलमतोत री विजय, गुण जिहाज महाराजा श्रीगजसिंघजी रा, गुण कुंडळिया सांवळदास भोजराजोतरा, गुण महाराजा श्रीगजसिंघजी रो हेमकवि कृत, वडा महाराजा श्री मानसिंह रा ख्यालातां रो खरडो, महाराजा मानसिंघजी रो राजविलास, देशी नाममाला, आढा सामदान कृत नाथजी रो वर्णन, गोगामेड़ी आसाजी री कही हुयी, मानजसोमंडण, आसिया वांकीदास कृत वीर सतसई, चारण सूरजमल कृत नाममाला डिंगल, हमीर रतनू कृत ओसवाळ उत्पत्ति, अनेकार्थ मंजरी नंददास कृत, परगना मलाणी रै गांव सेताराऊ री खांप, राठौड़ जैतमलोत तथा बाला नराराजोत दूदावत तथा वीदावत री खांपा, रजिस्टर खांप पतावतां री, रजिस्टर खांप नक्शो शेखावत लाडरवाणियां रो अर ऊदावतां राठौड़, गांव जसोल खांप करमसोत रा नक्शा, रजिस्टर गोगादे, पांगळिया, भाटी जैसा आदि री खांपां, रजिस्टर नक्शा मेड़तियै रघुनाथ सिंघोत चांदावत कल्याणदासोत इत्यादि पुराणी खांपां राठौड़ां री अमरखाण, रावजी श्री अमरसिंघजी रै समय रो रजिस्टर, राव रायसिंघजी अमरसिंह रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री जसवंतसिहजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्रीअभयसिह रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री विजयसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा तखतसिंघ जी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री भीमसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री सरदारसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, महाराजा श्री सुमेरसिंघजी रै काळ रो रजिस्टर, उदयपुर रै कविराजा श्यामलदासजी विरचित वीर विनोद में सत्ताजी सूं मंडोवर लेवण रो वृतांत, महाराजा मानसिंघजी विरचित जळंधर नाथजी रो जसभूषण पिंगल गुणग्रंथ, आलमगीर नामा, पृथ्वीराज रासो चंदवरदायी कृत अर ग्रंथ लच्छ सतसंग बारठ बिहारीदास कृत।

इण फुटकर रचनावां रो राजस्थान रै इतिहास लेखण में घणो महत्त्व है। मुगलकाळ सूं लेयनै राजस्थान में मराठां रो आक्रमण अर उणां पछै अंग्रेजीं सत्ता द्वारा रजवाड़ां रै आंतरिक मामलां में भरपूर मात्रा में हस्तक्षेप री सूचना इणां सूं मिलै। राव जैतसी रो छंद वीठू सूजा रो कह्यो, में वीकानेर माथै कामरान द्वारा कियै गयै आक्रमण अर वीकानेर रै शासक राव जैतसी द्वारा उणनै हरायै जावण रो महत्वपूर्ण वर्णन मिलै। राजरूपक में जोधपुर रै राठौड़ शासकां रो औरंगजेब रै मुगल सेनापतियां रै साथै हुयोड़ा युद्धां रो वर्णन करचो गयो है। उगणीसवीं सदी में बूंदी राज्य रै चारण कवि सूर्यमल्ल मीसण द्वारा रचित वंश भास्कर अर वीर सतसई क्रमशः राजस्थान में मराठा अर अंग्रेज विरोधी भावना री जाणकारी खातर महत्वपूर्ण आधार-सामग्री है। वांकीदास, महाराजा मानसिंह (जोधपुर) अर अन्य केई चारण कवियां आपरी अंग्रेज-विरोधी भावना सूं राजस्थान रै जनमानस नै झकझोर कर राख दियो। □

—अलखसागर मार्ग, वीकानेर-334 001

वीकै बीज थरप्पियो

परमेश्वर सोलंकी

इसो लखाव् कै वीकोजी रीसां बळता जोधपुर छोडियो अथवा बांनै देश निकाळो हुयो, कारण उणांरै कंवरपदै में घणी मुस्कलां आयगी। संवत् 1521 में राजकुंवर नींबो देवलोक हुग्यो। उण पाछै वीको वडो कुंवर हो पण रावजी सूजै नै कंवरपदो देवण रो कोल उणरी मां सूं कर लीनो। इण वात सूं घणी आळपताळ हुई अर छेकड़ सं. 1522 में चाचो कांधळ, मंडळो, रूपो, मांडळ, ऊधो अर नाथू साथै वीको, बीदो, जोगो अर नापै सांखळै सागै घणकरै मानखै जोधपुर छोड दियो। अै सगळा बाघोड़ा रै ठिकाणै में चांडासर आय बैसिया। अठै सं. 1516 में जोधै खुद आपरी मां कोडमदे रो कीरत थंभ ऊभो कीनो हो अर अठै हीज आपरा दोरा दिन काटिया हा। जद राव रिणमल चित्तौड़ में धोखै सूं मारीज्यो तो जोधो उठै सूं वच निकळयो अर बाघोड़ा रै ठिकाणै में घणा दिनां रैयो।

उणी भांत रीसां बळतो वीको पण आपरै असलै-मसलै साथै दादेरै में ढूकियो। उण रो विरोध साचो हो पण रावजी कोई सुणवाई नहीं करी जणै संवत् 1529 में वीको खुदोखुद स्वयंभू राजा वणियो। वीकै सागै जोधाजी रा भाई हा। दूजा मिनख ई घणकरा हा। पण राज अर धरती विना वीकै नै कोई राजा नहीं मानियो अर कोई पण आपरी राजकुंवरी कोनी दी। इण वेळा चारणी माता करणीजी उण नै आशीष दी अर चारणी माता री राजनीति सूं वीको जांगळूधणी वणियो। उण रो सगपण पण पूगलराव शेखा री बेटी रंगकुंवरी सागै हुयो।

जांगळू उण वेळा कमजोर ठिकाणो हो अर थळी में उण री गिणती ठाव् ठिकाणै ज्यूं नीं हुवती। इण सूं वीकै आपरै दादेरै कनै नूंवो गढ़ वणावण सारू तजबीज करी। भाटियां नै ठाह पड़ी तो वै घणा नाराज हुया। कजियो हुयो। कजियै में वीकै मात खाई अर पाछा भागता थकां उण रो चाचो मांडळ काम आयो जिणरी देवळी पलाणै में ऊभी है। ओ वाको संवत् 1539 रो है।

थळी में उण वेळा किलूरगढ़ (पल्लू) सिंहाण कोट (वड़ोपल) अर खड़ाळ (अनूपगढ़) अै तीन वडा ठिकाणा हा। दिखणाद में भाटियां रो पूगळ अर मारोठ अर उतराद मोहिलवाटी में ददरेवो अर द्रोणपुर हा। उणां सूं आगै अेक तरफ क्यामखानी अर दूजी तरफ हिसार में दिल्ली रो सूबैदार सारंगखां हो जिको टीबी परगनो अर भटनेर जोहियां सूं लेयर घणो मजबूत हो। जोहियां और सूबैदार विचाळै जाटायत रा ठिकाणा हा,

जिणां में गोदारा, पूनिया, कंसवा अर सारण–वेणीवाळ ठावा हा। वीको पण थळी रो खास सिरदार वणियो। चारणी माता री मेहर सूं थळी रा झगड़ा-फिसाद हुवता तो वीको हाजिर रैवतो और देशणोक सूं जद-तद धाड़ा मारतो अर दूर-दूर तांई पैंडो करतो।

रातीघाटी उण वेळा घणो ठावो अर सुरक्षित स्थान वणियो। देशनोक सूं बहावलपुर (जोहियार) जावणो होवतो तो रातीघाटी सूं पूगळ, मौजगढ़ हुयर मारग हो। भिवाणी पण रातीघाटी सूं काळू, रेणी, राजगढ़ सूं जावणो पड़तो। इण भांत सिरसा वास्तै भळै रातीघाटी सूं मालासर, सुंई, पल्लू, नोहर देयर मारग वैवतो। रातीघाटी सूं नागौर, फलौधी, जोधपुर अर पुष्कर वासतै देशणोक सूं टळता मारग हा।

इसै ठावै स्थान पर भीनाशहर रै सेठ भाण्डाशाह अेक जैन मंदिर वणावण रो मतो करचो। वीकै शाह नै सुरक्षा दीवी। इण भांत भीनाशहर सूं उतराद में ऊंचै ढिगळै ऊपर मंदिर रो काम सरू हुयो। काम सरू हुवण री तिथि मालूम कोनी पण ओ काम संवत् 1542 पछै सुरू हुयो हुवैला। मंदिर रो निर्माण घणो धीमो अर मधरो चाल्यो। पाणी री अबखाई सूं चेजो वार-वार रुक जावतो। मंदिर में लिखियोड़ै शिलालेख मुजब शाह भांडा रो प्रासाद श्री लूणकरणजी रै राज में संवत् 1571 आसोज सुदि 2 रविवार नै पूरो हुयो वतायीजै।

भांडासर मंदिर सूं पैली नेमिनाथ मंदिर वणियो जिको संवत् 1570 में पूरो हुयग्यो। ओ मंदिर अवार रै लक्ष्मीनारायण पार्क में वणियो है जिको कर्मसिंह लगोलग 14 वर्ष तांई अन्नसत्र चलायनै संपूर्ण करायो हो। लाहोर में संवत् 1650 में लिखियोड़ी कविता-पोथी इण नेमिनाथ मंदिर री नींव संवत् 1556 में लागी वतावै जदकै नागौरी लुंकागच्छ री पट्टावली चउवीसटैजी रो मंदिर (भुजिया बाजार) संवत् 1562 में बच्छावतां शुरू कीनो लिखै अर वैद चौक अर आचार्य चौक विचाळै वणियोड़ै महावीर मंदिर वास्तै संवत् 1578 आसोज सुदि 10 नै नींवरो पायो भरचो लिखै है। इण महावीर मंदिर में प्रतोळी वणण रो अेक पद्य-बद्ध लेख है जिण में राठउड़ अधिकार वताईज्यो है पण राजा रो नांव साफ पढण में नहीं आवै। शिलालेख में महावीर नै 'माहिदेव महावीर आप आदि आप पीरः' लिखियो है। 'जिनचन्द्रसूरि विहार-पत्र' सूं इण मंदिर री प्रतिष्ठा संवत् 1663 में हुयी वताईजै।

इण भांत आ वात साफ-साफ निजर आवै कै वीकोजी री मौत संवत् 1561 तांई वीकानेर नहीं वसियो पण संवत् 1556 में आजकाल रै लक्ष्मीनारायण पार्क कनै जिको अन्नसत्र सुरू हुयो बो अन्नसत्र 14 वरसां तांई चाल्यो अर नेमिनाथ मंदिर रो मंदिर-निर्माण संवत् 1570 में पूरो हुयां पछै बंद करीज्यो। इण विचाळै हीज वीकोजी देवलोक हुग्या जिण सूं उणां री टेकरी ई मंदिर नैड़ै वणाईजी, हुय सकै है।

वीकोजी बीज जरूर थरपियो पण बीज नै उगा नहीं सकिया—आ बात इणसूं पण भळै साफ-साफ निजर आवै कै संवत् 1546 में जद कांधल नै सारंगखां मार नाख्यो उण रो बदळो लेवण जोधोजी आया। जीत पछै उणां वीकै नै शाबाशी दी अर उण सूं कोल करा

लीनो कै बो जोधपुर भायां वास्तै छोड़ देसी। जोधोजी वीकै सूं लाडनूं परगनो पण छुडवा़य लीनो। वीकै राव़जी री आज्ञा मान ली पण राजचिह्नां पै आपरो हक जतायो अर अरज करी कै राजघराणै रा सगळा राजचिह्न उणनै मिलणा चाहीजै। राव़जी वीकै री अरज मान ली। उण पछै सं. 1547 में जोधोजो देव़लोक हुया। सं. 1548 सूं सं. 1550 तांई बीको जोधपुर सूं लड़तो-भिड़तो रैयो। उण पछै वीको सिहाळकोट रै मलिक जोइया, बडोपल रै शेरसिंह अर खड़ाळ रै शुभराम सूं लड़ियो। जोहियां रो मुखियो तिहुणपाळ लूणकरण अर जैतसी सूं पण लड़तो रैयो हो। उण री कोशिश सूं हीज कामरां वीकानेर माथै आक्रमण करचो। इण सूं आ वात भळै साफ हो जाव़ै कै वीकै नै जीव़ण भर जूझणो पड़ियो। उणरो जीव़ण सुख-शांति सूं नहीं कटियो अर उणरै नांव़ माथै उणरा वंशज हीज वीकानेर वसायो।

□

पो. बो. नं.–6
वीकानेर–334 001

पव़णउत (पव़न-पुत्र)

(पुराणा दूहा)

हणमत हिया तणाह, मिळियो राम मनोरथां
भीछां भीर थियांह, पैसां नरींद पव़णउत 1

लायो लाखै वाह, गिरिव़र पै गड़िया जिहीं
रैसै रामण काह, परघा ऊपरि पमणउत 2

तूं घेरियो घणैह, हणुवा हड़वड़ियो नहीं
जुधि जूजुव़ो जुड़ैह, पूगो पमण नरींदउत 3

बळिहारी वह जीवि़यां, वह जियां बहो दिट्ठ
राघव़ रथि घोड़ा खड़ै, हणमंत धजा वयट्ठ 4

तै कोपियै ज काळ, लाई गढ़ लंका तणो
व्रह्मंडळ लगि बराळ, पूगी पव़ण नरींदउत 5

ऊंडै असर तणैह, मांही तूं पायो महण
ग्यो चत्रभुज चालैह, पाजां ऊपरि पमणउत 6

(श्री सौभाग्यसिंह शेखाव़त रै संग्रह सूं)

वीकानेर रै राजावां रो शेखावतां सूं संबंध

(मूंहता वखतावरसिंह री ख्यात रा उद्धरण)

सुरजनसिंह शेखावत

मूंहता वखतावरसिंह वीकानेर रै महाराजा जोरावरसिंह रै शासन काळ सूं ही राज्य रै प्रमुख पदां पर काम करतो आ रैयो हो। महाराजा गजसिंह रै समय में तो बो उण रै प्रधान दीवान तथा विश्वस्त सलाहकार रै रूप में उभरनै सामनै आयो। वीकानेर राज्य रै घणासारा सैनिक अभियानां रो संचालण करनै उण आपरी सैनिक दक्षता रो परिचय दियो। दिल्ली रै मुगल सम्राट अहमदशाह वि. सं. 1809 (सन् 1752 ई.) में उणनै राव रै खिताब सूं अलंकृत करनै संमानित करचो हो[1]। अपणै समय रो बो अेक प्रसिद्ध व्यक्ति हो। उण रै समय में घटी प्रमुख राजनीतिक घटनावां रो विवरण 'मूंहता वखतावरसिंह की ख्यात' नांव सूं लिख्यो मिलै है, जिको ओजूं तांई अप्रकाशित है। इण ख्यात री अेक हस्तलिखित प्रति भूतपूर्व जयपुर राज्य रै अंतर्गत चांपावतां रै काणोता ठिकाणै रै पोथीखानै में सुरक्षित है। उण ख्यात में वीकानेर, जोधपुर, उदयपुर तथा जयपुर रै शासकां री आपसी मैत्री, संधि, विग्रह, व्यांव अेवं दूजी तत्सामयिक महत्त्वपूर्ण घटनावां रो वृत्तांत लिख्यो गयो है। इण ख्यात सूं वीकानेर रै महाराजा गजसिंह रै सागै शेखावाटी रै शेखावतां रै—प्रमुख रूप सूं झूंझणू रै शेखावतां रै—आपसी संबंधां पर भी यथेष्ठ रोचक अर प्रामाणिक प्रकाश पड़ै है। उणी ख्यात सूं कीं प्रमुख घटनावां रा विवरण अठै उद्धृत करीजै है, जिका इतिहास रै जिज्ञासु पाठकां वास्तै उपयोगी सिद्ध हुसी।

1. मिती सावण वदी 12 संवत 1807 नै वीकानेर रा महाराजा गजसिंह नागौर रै राजाधिराज वखतसिंह नै जोधपुर रो राज दिरायनै पाछा वीकानेर पधारचा। उणी वखत रिणी सूं मूंहता भीमसिंह भी आयो। महाराजा उण सूं पूछियो—'म्हारै लारै सूं शेखावतां देश में विगाड़ क्यूं करचो ?' मूंहता अर्ज करी—'जालेऊ गांव रै वीदावत बुधसिंह किशनसिंहोत शेखावतां रै गांवां रो विगाड़ कीधो—लूटपाट करी, उणरो वदळो लेवण वास्तै सीकर रै शेखावत सिमरथसिंह शिवसिंहोत सोभागदेसर री तरफ सूं दो गांव लूटता थका जालेव पूग्या अर दूसरै कानी सूं झूंझणू रा शेखावत नवलसिंह अर केसरीसिंह सादावत (शार्दूळसिंह रा वंशज) सीधा जालेव माथै चढनै आया जणां वीदावत म्हारै कनै आया अर पुकार मचायी कै शेखावत देश नै लूट रैया है। हूं रिणी सूं जमीयत लेयनै चढचो अर रावत धीरसिंह संग्रामसिंह वणीरोत री जमीयत साथै हुयी। म्हांरो डेरो गांव गोवळसर में हुयो, जठै मनरूप जमीयत लेयनै वीकानेर सूं आवतो हुयो—ओ समाचार सुणनै म्हारै कनै

पूग गयो। शेखावतां ओ कैवायो कै आप लोगां रो कांई विचार है ? उणां जवाब में कैवायो कै म्है देश में विगाड़ को करां नी। म्हांरो वैर जालेवू रै ठाकर सूं है सो म्है उणसूं लड़सां। उणां केई दिनां तांई जालेवू नै घेरचां राख्यो। अंत में गांव मोलासर में जायनै हूं शेखावतां सूं मिल्यो, उणां नै समझायो अर जालेवू रो वैर तुड़ायो (आंटो भंजायो)। जद जायर उणांरो बठै सूं कूच हुयो। (ख्यात, पानो 77)।

2. भादवै वदी 13 संवत 1809 नै जोधपुर रै राजा वखतसिंह रो देहांत हुयो। जोधपुर विजयसिंह रै वास्तै टीकै रो दस्तूर भेजनै महाराजा गजसिंह दौरै माथै रवाना हुया। गांव बुधणावू रै मुकाम पर ठाकर नवलसिंह शेखावत रा मुत्सद्दी महाराजकुमार राजसिंह रै व्यांव रो लग्न तय करणै आया। लग्न तय हुयो। मिती माघ सुदी 5 संवत 1809 रै दिन वरात झूंझणू गयी। नवलसिंह री बाई चंदणकुंवरी रो व्यांव महाराजकुंवार रै साथै संपन्न हुयो। शेखावतां वरात री वढचढ नै खातरी करी। चारण-भाटां दिल खोलनै त्याग वांटचो। (ख्यात पानो 80)।

3. महाराजा गजसिंह जोधपुर रै महाराजा विजयसिंह रै साथै जयपुर जावता हुया शेखावतां रै देश सूं गुजरचा जद ठाकर नवलसिंह पोह वदी 10, सं. 1812 नै महाराजा रै वास्तै अेक घोड़ो, सिरोपाव अर मिठाई भेजी। वडै प्रेम सूं आ राख ली गयी। फेर पोह वदी 12 नै स्वयं ठाकर नवलसिंह तथा सीकर रा राव चांदसिंह महाराजा सूं मिलणनै आया। वडी आतमीयता सूं मिलाप हुयो। (ख्यात, पानो 87)।

4. माघ सुदी 14 संवत 1812 नै महाराजा गजसिंह शादी करणै जयपुर जा रैया हा। शेखावत नवलसिंह मनवार करनै महाराजा नै वरात साथै झूंझणू लेयग्या। पूनम रै दिन मिजमानी दी। अेक हाथी अर अेक घोड़ो भेंट करचो। केवळ घोड़ो राख्यो गयो। फागण वदी अेकम रै दिन शेखावत केसरीसिंह (विसाऊ) अर भोपालसिंह (खेतड़ी) मिजमानी दी। तीन घोड़ा भेंट करचा। फागण वदी 3 नै उणां नै विदा करचा। वरात रै वापस लौटती वखत भी नवलसिंह वरात नै झूंझणू लेयग्या अर यथोचित स्वागत-सत्कार करचो। (ख्यात, पानो 88)।

5. परगना पूनियां रा दो गांव शेखावत हाळीराम (सुळताणां) अर भोपालसिंह (खेतड़ी) जबर्दस्ती दवा लिया हा। महाराजा गजसिंह इण वात सूं नाखुश हा। उणी दिनां में सिंघाणा परगनै रै इधकार नै लेयनै झूंझणू रै शेखावतां में विवाद चाल रैयो हो। अेक तरफ शेखावत नवलसिंह अर केसरीसिंह हा अर दूजी कानी जोरावरसिंह रा बेटा तथा खेतड़ी रा भोपालसिंह किशनसिंहोत हा। महाराजा वीकानेर सेना देयर मुंहतै वखतावरसिंह नै नवलसिंह री मदद वास्तै भेज्यो। सिंघाणा सूं तीन कोस री दूरी माथै फौज पड़ाव नाख्यो। जणां भोपालसिंह (खेतड़ी) जयपुर रै महाराजा सवाई माधोसिंह रै कनै अरजी भेजी कै म्हारा काका म्हारै खिलाफ वीकानेर री सेना लायनै लड़नै री त्यारी कर रैया है। इण पर जयपुर महाराजा राजावत रुवनाथसिंह दलेलसिंहोत नै सिंघाणा भेज्यो। उण दोनूं पखां नै समझाय नै सुलह-सफाई करायी। वीकानेर रै पूनियाण परगनै रा दो गांव जिका

हाथीराम दबा लिया हा वापस बीकानेरवालां नै दिराया। आ घटना विक्रमी संवत 1813 रै भादवै महीनै में घटी। (ख्यात, पानो 94)।

6. साईंदासोत कांधळोतां नै सजा देवण नै महाराजा गजसिंह कूच करनै संवत 1814 री भादवा सुदी 13 नै ददरेवै में मुकाम करचो। उण वखत शेखावत नवलसिंह अर केसरीसिंह चार हजार सैनिकां रै सागै महाराजा रै साथै हुया। भादरा रै लालसिंह साईंदासोत सेवा में हाजर हुवणै री अर्ज करायी। लालसिंह नै महाराजा कनै लावण वास्तै केई सरदारां नै भेज्या। लालसिंह दो कोस तांई तो उणां रै सागै आयो। पछै ना मालूम उणनै कांई वहम पड़चो कै बो उठै सूं ही ओ कैयर पाछो चल्यो गयो कै दो दिन बाद आसूं। आ जाणनै महाराजा उणरो पीछो करणै वास्तै फौज भेजी जिण रो संचालन नवलसिंह शेखावंत कर रैया हा। मारग में साईंदासोतां रो ठिकाणो डूंगराणा पड़तो हो। उठै री गढी में सांवतसिंह दौलतरायोत हो। उण मुकाबलो करचो। दो दिन तांई लड़ाई हुवती रैयी। दोनूं पखां रा घणा-सा आदमी हताहत हुया। शेखावत महासिंह भगवतसिंहोत काम आयो। शेखावतां गढी नै तोपां सूं तोड़ नाखी। सांवतसिंह लड़ाई में खेत रैयो। उण रो सिर लेयनै शेखावत पाछा आयग्या। नवलसिंह महाराजा सूं अरज करी—सांवतसिंह मारचो गयो, आपां री जीत हुयी। अबै उण री जनानां नै रुखवाळां रै सागै बाइज्जत भादरा भेजणी चाहीजै। हूं लूंट नै बंद करनै आयो हूं। महाराजा रथ भेजनै सांवतसिंह री जनानां नै भादरा भिजवा दी। अंत में शेखावत नवलसिंह रै प्रयत्न सूं लालसिंह रो बचाव हुयो। गांव रामसलाणा रै तळाव मकसूदाणै रै किनारै महाराजा रा डैरा हा। नवलसिंह री मारफत लालसिंह हाजिर हुयो अर माफी मांगी। उणनै माफी बगसी गयी अर जागीर बहाल हुयी।

रावतसर माथै भी शेखावतां री फौज गयी। उठै रा स्वामी आनन्दसिंह नवलसिंह सूं मिलनै महाराजा सूं क्षमा याचना करी अर पच्चीस हजार रुपयां री पेशकश देयनै घेरो उठायो। (ख्यात, पानो 94)।

7. संवत 1815 में महाराजा रा डेरा रिणी में हा। खबर मिली कै शेखावत केसरीसिंह अर जोरावरसिंह रै बेटां बणीरोतां सूं छेड़छाड़ करी अर उणां रै गांवां नै लूट लिया। महाराजा रावत लालसिंह, भादरा अर मूंहता बखतावरसिंह नै उणां रै मुकाबलै पर भेज्या। बै चूरू जायनै उतरचा। दोनूं कानी सूं दोनां रै गांवां रो बिगाड़ हुवण लाग्यो। बखेड़ै नै बधतो देखनै नवलसिंह रै प्रधान महाराजा सूं अरज करी कै बीकानेर री तरफ सूं किणी जिम्मेवार व्यक्ति नै भेज्यो जावै जिणसूं बखेड़ो मिटायो जावै। इण पर पुरोहित जगरूप नै भेज्यो गयो। दोनूं पखां नै समझायनै शेखावतां नै बीकानेर री सरहद सूं कूच करवाया अर दरबार री सेना रिणी पाछी आयगी। (ख्यात, पानो 98)।

8. संवत 1824 री साल में शेखावत नवलसिंह लुहारू माथै चढ़ाई करी। उणरै बेटै कंवर नरसिंहदास महाराजा सूं मदद वास्तै अरज करी। इण पर मूंहताजी (बखतावरसिंह) नै भेज्या गया। बै बीदावतां री खेड़ लेयनै शेखावतां रै सामल हुया। पनरै हजार

सैनिकां री फौज सागै लुहारू माथै घेरो नाख्यो। अेक-दो वार जबर्दस्त लड़ाई हुयी, पण किलैवाळां रो घणो नुकसाण नीं हुयो। लड़ाई लांबी चालती देखनै मूंहताजां बीच में पड़नै समझौतो करायो। (ख्यात, पानो 107)।

9. मिती चैत वदी 4 संवत 1826 महाराजा गजसिंह री पोती अर महाराजकुमार राजसिंह री बेटी सरदारकुंवरी रो व्यांव जयपुर रै महाराजा सवाई पृथ्वीसिंह रै सागै हुयो। महाराजा गजसिंह रो सुसराळ अर राजसिंह रो नानाणो महार (जयपुर राज्य) रै कुंभावतां रै अठै हो। महारवाळां च्यार हजार रुपिया मायरै में दिया। नवलसिंह शेखावत भी उण मौकै पर मायरो लेयनै बीकानेर गया। उणां पचास हजार रुपिया नगद अर हाथी, घोड़ा, वेस अर सिरोपाव सब मिलायर अेक लाख रुपियां रो मायरो भरचो।

(ख्यात, पानो 111)।

महाराजा गजसिंह रै पछै बीकानेर रा हुवणवाळा महाराजा सूरतसिंह भी शेखावतां रै साथै मैत्री-संबंध पैली ज्यूं वणायो राखण री नीति रो ही पालण करता रैया। ठाकर नवलसिंह, नवलगढ़ री मौत हुयां पछै उणां रै बेटै नरसिंहदास शेखावत नै महाराजा सूरतसिंह द्वारा भेज्योड़ा खास रुक्कां रै अवलोकण सूं उक्त तथ्य माथै यथेष्ट प्रकाश पड़ै अर इतिहास सूं संबद्ध कीं नूंवी जाणकारी भी मिलै है। इणां मांय सूं कतिपय खास रुक्कां रा कीं अंश अठै उद्धृत करचा जावै है—

1. 'ठाकरां नरसंघदासजी सूं म्हारो जुंहार बंचै। अप्रंच हकीकत फौजदार सिरदारै सूं मालूम कीवी सो ठाकरां को भरोसो छो तीं माफिक चाकरी कीवी। आगै ठाकरां नवलसिंघजी रो सीर संबंध छो जी माफिक जीसोइज ठाकरां जणायो सो सगा छो म्हारै घणी वात छो हमें ओ काम सताब सूं पेस पोंहचै। सु वात करसी– इयै रो जस ठाकरां नै छै—ठाकरां रै काम पड़सी तो अठै सूं मदत हुसी......मिती पोस वदी 15, संवत 1845 का'।

2. ठाकरां नरसंघदासजी सूं म्हारो जुंहार वंचै। अप्रंच चूरू सूं राठौड़ सिवसिंघ हरीसिंघोत री अरज आई छै, तीमें लिख्यो छै आंबेर री फौज सेखावतां नै मामलत करण सारू आई छैं सो पैली तो इण वात रो संको क्यूं न रह्यो। त्यार फौज रा डेरा कोस दोय कोस आय हुया म्हां सूं कजियै रो विचार छै सु अंबेर रै दरबार और म्हारै कदीम सूं हेतारथ चल्यो आवै छै ज्यूं ही वधतो रैसी-फेर ठाकर फौज में छो सो सुणण में आवै छै खांच कर फौज लावै छै सो आ वात मानण में तो न आई-म्हे तो ठाकरां थकां सारी वात निंचित छां सु घणी खायत राखसी–बीजा समाचार सा. संभुराम, गाडण गोरखदान नै फुरमाया छै सो कहसी............मिती भादवा सुद 12 समत् 1846 का'।[2]

महाराजा सूरतसिंह रा बेटा महाराजा रतनसिंह रो व्यांव शेखावाटी रै डूंडलोद संस्थान रै ठाकुर रणजीतसिंह री बेटी राजकंवरी रै साथै संपन्न हुयो हो, उणी महाराणी शेखावतजी रै गर्भ सूं महाराजा सरदारसिंह रो जन्म हुयो। इण दोनूं महाराजां शेखावतां रै साथै रै निकटतम संबंध नै प्रेम अर आदर - भाव रै सागै वणायो राख्यो। डूंडलोद रै

शासक ठाकुर शिव्‌सिंह (शिव्‌जीसिंह) नै वीकानेर राज्य में च्यार गांव्‌ जागीर में दिया गया हा, जिका जागीरसमाप्ति तांई उणां रै अधिकार में हा।

महाराजा रतनसिंह बठोठ रै शेखावत जवाहरसिंह दलेलसिंहोत नै, जिको शक्तिमान ब्रिटिश सरकार री विद्रोही लोगां री आगली पांत में हो, शरण देयनै वडै भारी साहस रो परिचय दियो। सीकर रै पाटोदा गांव रै शेखावत डूंगजी नै आगरै री अंग्रेजी जेळ माथै धावो बोल नै छुडावण वाळो अर उण रै पछै डूंगजी रै सागै नसीराबाद री अंग्रेजसैनिक छावणी पर चढाई करणै वाळो जवाहरसिंह आपरै वखत रो वीर तथा साहसी योद्धा हो। जोधपुर अर वीकानेर री राजकीय सेनावां अर ब्रिटिश सरकारी निजू सेनावां रै साथै घड़सीसर रै युद्ध में लड़नै रै पाछै डूंगजी सेना रो घेरो तोड़नै निकळ भागण में सफल हुयग्या अर वै जेसळमेर कानी चल्या गया। पण जवाहरसिंह मगरासर रै ठाकर हरनाथसिंह रै समझावण सूं वठै सूं निकळनै वीकानेर महाराजा रतनसिंह री शरण में गया परा। महाराज बाइज्जत उणनै आश्रय दियो अर अंग्रेजां नै को सूंप्यो नी। इण विवाद रै संदर्भ में महाराजा अर अंग्रेजी सरकार रै सागै लांबो पत्र-व्यवहार हुयो। महाराजा शरण आयोड़ै जवाहरसिंह नै अंग्रेजां री दया माथै छोडण सूं सफा नटग्या। प्रवाद चालै कै महाराजा अंग्रेजां नै अठै तांई कैय दियो कै जवाहरसिंह यदयपि अंग्रेजां रो वागी है, पण महाराजा अंग्रेजां रा दोस्त है, अर जठै तांई जवाहरसिंह महाराजा री देखरेख में है, उणनै अंग्रेजां रो नजरबंद ही मानणो चाहीजै। फेर भी अगर ब्रिटिश सरकार नै उणरै मैत्रीपूर्ण कथन माथै भरोसो नीं है तो वै आपरै वेटै महाराजकुमार सरदारसिंह नै उणरी (जवाहरसिंह री) अेवज अंग्रेजां नै सूंप देवण नै वडी राजी-खुशी सूं तैयार है। पण शरण में आयोड़ै आदमी नै सूंपणै में उण रै कुळ री राजमर्यादा भंग हुवै। अंग्रेजां नै आखर महाराजा री दृढ़ता अर स्वाभिमान रै सामनै झुकणो पड़्यो अर जवाहरसिंह नै महाराजा रै संरक्षण में ही रैवण दियो गयो।[3]

इसा अदम्य वीरां नै आपरी वाणी सूं अमरत्व प्रदान करणवाळा शक्तिपुत्र चारणां डूंगजी जंवारजी रै अत्यंत साहसभरया कामां नै उजागर करता थकां घणा सारा गीत छंदां री रचना करी। उणी गीतां मांय सूं अेक गीत चारण कवि तेजदान आसिया द्वारा रचित मिल्यो है जिको महाराजा रतनसिंह री अंग्रेजां री इच्छा रै खिलाफ जवाहरसिंह नै शरण देवण री दृढ़ता रो यशोगान करता थकां रच्यो गयो है।[4] लेख रै समापन सूं पैली इण गीत नै अठै उद्धृत करणै रो लोभ कोनी संवरण करयो जा सकै।

गीत

सुपह वाह रतनेस दहुं राह रा सिरोमण,
भलम अणथाह रा जग प्रसिद्ध भाखै
खीज सिर प्रबल-वड वडां रा खूनियां,
राज जिम वियो कुण सरण राखै 1

रूंदलै छावणी–वळै पाडै रसत,
त्रिजड़ वळ लूटिया माल ताजा
आगरो कोट तोड़ै, मुरड़ आविया,
राखियां तिकां दे ओट राजा 2

जनम सूं जहर रा बीज वाया जबर,
कहर अंगरेज रा खून कीधा
पेखतां सीस आकास लागा प्रिथी,
दोसियां नै नथी काढ दीधा 3

कमधजां तणा आदु-उप्रवट करी,
वळोवळ क्रीत कव्राज वांचो
राव रा उणरै सरण राजा रतन,
सरण साधार ब्रद कियो सांचो 4

असपती किता असती पणो आदरै,
सिटाया जिकण रै जगत साखी
अभिनमां अनोपम अेक जग ऊपरां,
राज खत्रवट धरम टेक राखी 5

□

–झाफड़ (झूंझुणू), राजस्थान।

1. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा — बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ 336।
2. सुरजनसिंह शेखावत — नवलगढ़ का संक्षिप्त इतिहास।
3. खेमराज श्रीकृष्णदास द्वारा प्रकाशित — बीकानेर का इतिहास।
4. सौभाग्यसिंह शेखावत द्वारा संपादित — स्वतंत्रता सेनानी डूंगजी जवाहरजी, पृष्ठ 47–48।

संपादकीय

राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, वीकानेर द्वारा निर्णय लियो गयो कै इण संस्था रा पीठाधिपति, 'राजस्थानी गंगा' रा प्रधान संपादक तथा राजस्थानी भाषा रै साहित्यिक स्वरूप रा विद्वान् समर्थक और प्रचारक श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी रै संमान-स्वरूप 'श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी अभिनंदन विशेषांक' प्रकाशित करचो जावै। इण दिशा में पूरो कार्यक्रम वणायो गयो अर यथोचित त्यारी भी सरू करी पण परमपिता री मरजी कीं दूसरी ई रैयी। श्रद्धेय स्वामीजी इणो अवधि में इहलीला संवरित कर लीनी अर फळसरूप प्रस्तावित योजना नै दूजो ही रूप देवणो पड़चो। उणी रो परिणाम ओ प्रकाशन 'श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी स्मृति-विशेषांक' राजस्थानी गंगा रै सहृदय पाठकां री सेवा में प्रस्तुत है—'ईश्वरेच्छा बलीयसी।'

स्व. श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी 'राजस्थानी गंगा' रै माध्यम सूं राजस्थानी भाषा-साहित्य री श्रीवृद्धि सारू समर्पित भाव सूं सेवा-लीन रैया अर वृद्धावस्था में भी अनथक रूप सूं वरावर क्रिया-शील वणर घणोई काम करचो। वै राजस्थानी भाषा री अेकरूपता खातर सतत प्रयत्नशील हा अर प्रकाशनार्थ प्राप्त संपूर्ण सामग्री नै घणै श्रम साथै संपादित कर ही संतोष प्राप्त करता। इसा तपसी संपादक कम ही निजर आवै। उणां रो जीवण अर कार्य सराहना तथा अनुकरण करणजोग है।

खास वात आ भी है कै स्वर्गीय स्वामीजी मूळ रूप सूं विज्ञान रै क्षेत्र रा विद्वान हा पण उणां रो साहित्य-प्रेम भी असाधारण ही मान्यो जासी।

प्रस्तुत विशेषांक में प्रकाशित करण सारू प्रचुर परिमाण में विविध विषयां री महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हुयी पण स्थानाभाव रै कारण उण समस्त सामग्री नै अेक ही अंक में स्थान देवणो संभव नीं हुय सक्यो। उण सामग्री नै इण विशेषांक रै 'परिशिष्टांक' में प्रकाशित करण रो निश्चय करचो गयो है। कृपाळु लेखक महानुभाव परिस्थिति नै देखतां क्षमा प्रदान करसी, इसी प्रार्थना है।

धन्यवाद !

सेठ माधोदासजी मूंधड़ा, वीकानेर तथा सेठ रामप्रसादजी पोद्दार, सेंचुरी मिल, बंबई नै घणा-घणा धन्यवाद, जिणां री कृपा सूं 'राजस्थानी गंगा' सारू घणमोलो विज्ञापन-सहयोग प्राप्त हुयो। श्री भंवरलाल नाहटा, कलकत्ता तथा डा. नागरमल सहल, जोधपुर सूं भी क्रमशः रु. 251 तथा रु. 111 सधन्यवाद प्राप्त हुया।

—मंत्री

निवेदन

'राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान' स्वनामधन्य स्वर्गीय विद्यामहोदधि श्री नरोत्तमदासजी स्वामी री मानस सृष्टि है। राजस्थानी भाषा रै समुन्नयन, विकास अर प्रचार-प्रसार री उत्कट अभिलाषा सूं उणां 'राजस्थानी गंगा' निकाळण री सोची ही पण पार को पड़ी नी। उणां रै लघुभ्राता श्री पुरुषोत्तमदासजी उणां री इण आकांक्षा नै मूर्तरूप दियो अर आज 'राजस्थानी गंगा' आप री भांत री अेक ई पत्रिका है। इणनै नियमित रूप सूं निकाळण में स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तमदासजी जिकै जी-जान सूं जुड़्या उणरै लारै अेक वडो संबळ हो— बीकानेर-महाराजा स्व. डा. करणीसिंहजी द्वारा प्रदत्त लूंठी आर्थिक सहायता। घणै दुःख री बात है कै आज 'राजस्थानी गंगा' आप रा आं दोनूं पुजारियां विना लूखी-बिलखी है। पुजारियां री पूजा भी परमेश्वर नै पूगै है। स्व. श्री पुरुषोत्तमदासजी रो स्मृति-विशेषांक आप रै हाथां में है, संस्थान रो पूरो मतो है कै निकट भविष्य में स्व. डा. करणीसिंहजी री पावन नै मधुर स्मृति में भी 'राजस्थानी गंगा' रो अेक सांतरो विशेषांक निकाळचो जावै। इण सारू स्वर्गीय महाराजा साहब रै गरिमा-मंडित जीवण सूं संबंधित रचनावां रो सादर स्वागत हुसी। बीकाण-धरा रो राजघराणो जियां सदा सूं राजस्थानी भाषा रो संरक्षक रैयो है, पूरो भरोसो है, बो इण अनुष्ठान ('राजस्थानी गंगा' रै प्रकाशन) में भी आप रो पूरो हाथ राखसी।

निवेदन रो दूजो पहलू है संस्थान नै सर्वविध सहयोग रो। आपणी 'राजस्थानी गंगा' तो बराबर निकळै ई है, केई दुर्लभ नै महत्त्वपूर्ण राजस्थानी ग्रंथां रै प्रकाशन रा भी सुन्दर सपना संस्था संजो राख्या है। इण सारू संस्थान मातृभाषा रै प्रत्येक सेवक सूं सहयोग री कामना करै है।

संस्थान आप रो है; आप री सद्भावना अर सहयोग रो सदा आदर करसी, आभार मानसी।

— डा. गिरिजा शंकर शर्मा
पीठाध्यक्ष
राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान
बीकानेर (राजस्थान)

राजस्थानी गंगा

(फार्म सं. 4, नियम सं. 8)

1.	प्रकाशन-स्थान	बीकानेर (राजस्थान)
2.	प्रकाशन री अवधि	त्रैमासिक
3.	मुद्रक रो नांव	श्री दीपचन्द सांखला
	नागरिकता	भारतीय
	पतो	सांखला प्रिंटर्स, सुगन निवास चन्दन सागर, बीकानेर
4.	प्रकाशक रो नांव	श्री सनत्कुमार स्वामी
	नागरिकता	भारतीय
	पतो	राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान वसुधा, अमरसिंहपुरा गजनेर रोड, बीकानेर
5.	संपादक रो नाव	डा. मनोहर शर्मा
	नागरिकता	भारतीय
	पतो	राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान वसुधा, अमरसिंहपुरा गजनेर रोड, बीकानेर
6.	उण व्यक्तियां रा नांव अर पता जिका समाचार-पत्र रा स्वामी हुवै अर जिका सगळी पूंजी रै अेक प्रतिशत सूं वेसी रा साझैदार अथवा हिस्सैदार हुवै	राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान वसुधा, अमरसिंहपुरा गजनेर रोड, बीकानेर (राजस्थान)

मैं, सनत्कुमार स्वामी, इण द्वारा घोषित करूं हूं कै म्हारी अधिकतम जाणकारी अर विश्वास रै मुजब ऊपर दियोड़ो विवरण सही है।

बीकानेर
दिनांक 15 अगस्त 1988 ई.

सनत्कुमार स्वामी
प्रकाशक

मुद्रक : सांखला प्रिन्टर्स, बीकानेर